राष्ट्रीय दैनिक

प्रात:किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

12 आंध्र के मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री से मुलाकात की.....

कोंस्टास से जानबूझकर टकराए कोहली पर आईसीसी सख्त... 11

वर्ष : 12 | अंक : 253 | पटना, शुक्रवार, 27 दिसम्बर, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 20.0°C

न्यूनतम तापमान 12.0°C

बाजार

सोना 75,920

चांदी 91,900

सेंसेक्स 83,584

निफ्टी 25,698

पूर्व पीएम मनमोहन सिंह का निधन, देशभर में शोक की लहर

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी।पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह नहीं रहे।92 साल की उम्र में उनका दिल्ली एम्स में निधन हो गया।उन्हें उम्र संबंधी दिक्कतों की वजह से गुरुवार रात 8:06 बजे एम्स में भर्ती कराया गया था।रात 9:51 बजे उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। मनमोहन सिंह प्रखर अर्थशास्त्री थे। 1991 में देश में शुरू किए गए आर्थिक उदारीकरण के वे शिल्पकार रहे।2004 से 2014 तक वे प्रधानमंत्री रहे।उनके निधन से देशभर में शोक की लहर है।

पीएम मोदी ने जताया शोक: पीएम मोदी ने भी पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर शोक जताया है। पीएम मोदी ने सोशल मीडिया एक्स पर अपने पोस्ट में लिखा- भारत अपने सबसे प्रतिष्ठित नेताओं में से एक, डॉ. मनमोहन सिंह जी के निधन पर शोक व्यक्त करता है। साधारण पृष्ठभूमि से उठकर वे एक प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री बने। उन्होंने वित्त मंत्री सहित विभिन्न सरकारी पदों पर कार्य किया और वर्षों तक हमारी आर्थिक नीति पर अपनी गहरी छाप छोड़ी। संसद में उनके हस्तक्षेप भी बहुत ही व्यावहारिक थे। हमारे प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए व्यापक प्रयास किए।

कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे ने भी जताया शोक: कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन पर शोक जताया और कहा कि निश्चित तौर पर इतिहास दयालुता के साथ उनका मूल्यांकन करेगा।

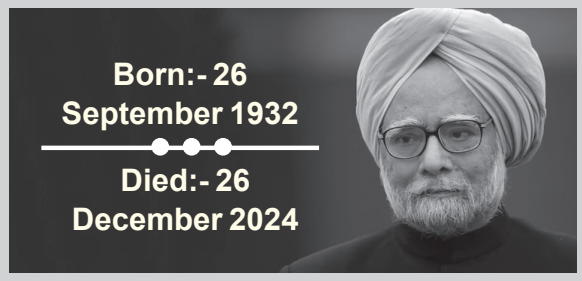

निःसंदेह, इतिहास आपका दयालुता के साथ मूल्यांकन करेगा, डॉ. मनमोहन सिंह जी ! पूर्व प्रधानमंत्री के निधन से, भारत ने एक दूरदर्शी राजनेता, बेदाग सत्यनिष्ठ नेता और अद्वितीय कद का अर्थशास्त्री खो दिया है।गुरुवार रात अचानक उनकी तबीयत बिगड़ी। उन्हें रात 8:06 बजे एम्स के आपातकालीन विभाग में भर्ती कराया गया।

सीएम नीतीश ने जताया शोक

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन पर शोक जताया है। सीएम ने कहा है कि देश के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह का निधन दु:खद। वे एक कुशल राजनेता एवं अर्थशास्त्री थे। उनके नेतृत्व में भारत की अर्थव्यवस्था को नई दिशा मिली। डॉ मनमोहन सिंह का निधन भारतीय राजनीति के लिए अपूरणीय क्षति है। ईश्वर से दिवंगत आत्मा की चिर शांति के लिए प्रार्थना है।

संक्षिप्त खबरें

बीपीएससी अभ्यर्थियों पर लाठीचार्ज गलत : लालू

पटना। बिहार लोक सेवा आयोग की 70वीं पीटी परीक्षा रद्द करने की मांग कर रहे अभ्यर्थियों पर लाठीचार्ज को लेकर राजनीति गर्म हो गयी है। विपक्ष के नेता इसे लेकर सरकार को घेरने में जुटे हैं। इस बीच, राजद के प्रमुख और बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू यादव ने छात्रों पर लाठी चार्ज को गलत बताया है। पत्रकारों ने गुरुवार को जब बीपीएससी अभ्यर्थियों पर हुए लाठीचार्ज को लेकर राजद अध्यक्ष लालू यादव से सवाल किया तब उन्होंने कहा कि छात्रों पर लाठी चार्ज नहीं करना चाहिए। गलत बात है।इससे पहले, पीटी परीक्षा को रद्द कराने की मांग को लेकर अभ्यर्थी बीपीएससी कार्यालय घेराव करने पहुंचे थे, जहां पुलिस ने उनके ऊपर लाठियां भांजी थीं। कथित तौर पर लाठीचार्ज में कई अभ्यर्थी बुरी तरह से घायल हो गए थे।

सरकार ने अपनी नाकामी छिपाने के लिए छात्रों पर लाठीचार्ज करवाया : राहुल

नई दिल्ली। बिहार लोक सेवा आयोग के अभ्यर्थियों पर लाठीचार्ज की निंदा करते हुए लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने बृहस्पतिवार को राज्य सरकार पर निशाना साधा तथा आरोप लगाया कि सरकार की नाकामी को छिपाने के लिए इस कृत्य को अंजाम दिया गया है। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी का दृष्टिकोण सिर्फ अपनी कुर्सी बचाना है। बीपीएससी की ओर से 13 दिसंबर को आयोजित संयुक्त प्रारंभिक परीक्षा (पीएससी) के प्रश्नपत्र लीक होने का दावा करने वाले अभ्यर्थियों ने परीक्षा रद्द करने की मांग को लेकर बुधवार को पटना में विरोध-प्रदर्शन किया, जिस दौरान पुलिस ने लाठीचार्ज किया। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने लाठीचार्ज का वीडियो साझा करते हुए एक्स पर पोस्ट किया, मैंने संसद में कहा था कि जिस तरह एकलव्य का अंगूठा कटवाया गया था उसी तरह पेपर लीक करवाकर युवाओं का अंगूठा काटा जाता है। इसका ताजा उदाहरण बिहार है। बीपीएससी अभ्यार्थी पेपर लीक के खिलाफ आवाज उठा रहे हैं और परीक्षा को रद्द करने की मांग कर रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि बिहार की राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की सरकार अपनी नाकामी को छिपाने के लिए छात्रों पर ही लाठीचार्ज करवा रही है।

मुख्यमंत्री ने की सीतामढ़ी एवं शिवहर जिले में चल रही विकासात्मक योजनाओं की समीक्षा बैठक

सभी वर्गों के विकास के लिए किया जा रहा काम : नीतीश

प्रात : किरण

पटना। प्रगति यात्रा के दौरान मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने गुरूवार को सीतामढ़ी एवं शिवहर जिले में चल रही विकासात्मक योजनाओं के संबंध में सीतामढ़ी समाहरणालय स्थित परिचर्चा भवन में संयुक्त समीक्षात्मक बैठक की। बैठक को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि बैठक में जनप्रतिनिधियों ने जो भी समस्याएं रखी हैं, उनका जल्द से जल्द निराकरण करें। 24 नवंबर, 2005 से बिहार के लोगों ने हमलोगों को काम करने का मौका दिया। उस समय से हमलोग बिहार के विकास के लिए निरंतर काम कर रहे हैं। सभी क्षेत्रों और सभी वर्गों के लिए लगातार विकास का काम किया जा रहा है। वर्ष 2005 से पहले बिहार की हालत काफी खराब थी। शाम के बाद लोग अपने घरों से बाहर निकलने में डरते थे। अस्पतालों में इलाज का इंतजाम नहीं था, सड़कें जर्जर थीं। शिक्षा की हालत ठीक नहीं थी। प्रायः हिन्दू-मुस्लिम के बीच विवाद की खबरें आती थीं। मुख्यमंत्री ने कहा कि जब बिहार के लोगों ने हमलोगों को काम करने का मौका दिया, तब से बिहार की स्थिति बदली है। हर क्षेत्र में विकास के काम किए जा रहे हैं। किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं किया गया है। हमलोग मिलकर लगातार बिहार को आगे बढ़ा रहे हैं। हम दो बार गलती से इधर से उधर चले गए थे। अब हमलोग हमेशा साथ रहेंगे और बिहार के साथ देश का विकास करेंगे।

बिहार का कोई भी इलाका विकास से अछूता नहीं

मुख्यमंत्री ने कहा कि संपूर्ण बिहार में विकास का काम हमलोग करा रहे हैं। बिहार का कोई भी इलाका विकास से अछूता नहीं है। हमलोगों ने शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, पुल-पुलिया के निर्माण का काम बड़े पैमाने पर कराया है, जिसके कारण बिहार के किसी भी कोने से पहले 8 घंटे में लोग पटना पहुंचते थे, अब उसे घटाकर 5 घंटा किया गया है। इसके लिए हर प्रकार से काम किया जा रहा है। पहले बरसात के महीने में सीतामढ़ी राज्य से 4 महीने के लिए कट जाता था, सीतामढ़ी से पटना पहुंचने में काफी समय लगता था और काफी परेशानी होती थी लेकिन अब लोग आसानी से सीतामढ़ी से पटना पहुंच रहे हैं।

महिलाओं के उत्थान के लिए हर प्रकार से काम किया

मुख्यमंत्री ने कहा कि पंचायती राज संस्थाओं एवं नगर निकायों में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण दिया गया, इसके तहत अब तक 4 चुनाव हो गए हैं। बड़ी संख्या में महिलाएं चुनकर आई हैं। हमलोगों ने महिलाओं के उत्थान के लिए हर प्रकार से काम किया है। वर्ष 2013 में पुलिस की बहाली में महिलाओं को 35 प्रतिशत आरक्षण दिया गया, जिसका नतीजा है कि बिहार पुलिस बल में महिलाओं की भागीदारी काफी बढ़ी है। बिहार में 30 हजार की संख्या में महिला पुलिस है। वर्ष 2016 से हमलोगों ने सभी सरकारी नौकरियों में महिलाओं को 35 प्रतिशत आरक्षण दिया। पहले बिहार में स्वयं सहायता समूहों की संख्या काफी कम थी। हमलोगों ने वर्ष 2006 में विश्व बैंक से कर्ज लेकर स्वयं सहायता समूहों की संख्या बढ़ाने का काम शुरू किया। बिहार में अब स्वयं सहायता समूहों की संख्या 10 लाख 61 हजार हो गई है जिनसे 1 करोड़ 31 लाख जीविका दीदियां जुड़ी हैं। स्वयं सहायता समूह से जुड़ी महिलाओं का नाम जीविका दीदी हमलोगों ने ही दिया है, जिससे प्रेरित होकर उस समय की केंद्र सरकार ने भी इसे अपनाया और उसका नाम आजीविका दिया। हमलोगों के काम का असर पूरे देश पर पड़ता है। बिहार में अब शहरी क्षेत्रों में भी स्वयं सहायता समूहों का गठन शुरू कराया गया है, जिनमें अब तक 26 हजार जीविका दीदियां जुड़ी हैं।

अब तक 24 लाख लोगों को रोजगार मुहैया कराया गया :

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमलोगों ने 10 लाख लोगों को सरकारी नौकरी देने का लक्ष्य निर्धारित किया था, जिसे बढ़ाकर 12 लाख किया गया है। अब तक 9 लाख लोगों को सरकारी नौकरी दे दी गई है। इसके अलावा 10 लाख लोगों को रोजगार देने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था। अब तक 24 लाख लोगों को रोजगार मुहैया कराया गया है। वर्ष 2025 में 12 लाख लोगों को सरकारी नौकरी तथा 34 लाख लोगों को रोजगार मुहैया करा दिया जाएगा। हमलोगों ने सभी वर्गों के उत्थान के लिए काम किया है। मदरसों को सरकारी मान्यता दी गई है। हमलोगों ने बिहार में जाति आधारित गणना कराई जिसमें 94 लाख गरीब परिवारों को चिह्नित किया गया है, जो हर जाति से जुड़े हैं। ऐसे गरीब परिवारों को प्रति परिवार 2 लाख रुपये की आर्थिक मदद दी जा रही है ताकि वे अपना जीविकोपार्जन कर सकें। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमने आज ही शिवहर और सीतामढ़ी जिले में विभिन्न विकास कार्यों का स्थल पर जाकर जायजा लिया। केंद्र और राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं की जानकारी ली। लोगों की समस्याएं सुनी है। इस बैठक में भी जनप्रतिनिधियों ने अपनी समस्याएं बताई है, उनको भी अधिकारियों ने नोट कर लिया है। सभी समस्याओं का समाधान पूरी तत्परता से किया जाएगा। जो भी विकास कार्य बचे हुए हैं उनको त्वरित गति प्से पूर्ण किया जाएगा। हम लोगों की सेवा करते हैं। हम हमेशा राज्य के विकास के कार्यों में लगे रहते हैं। हम किसी के साथ भेदभाव नहीं करते हैं। वोट देना जनता का अधिकार है जिसे देना है दें, हम सभी के लिए काम करते रहेंगे। हम सब मिलकर बिहार के विकास के लिए काम करते रहेंगे।

रीगा चीनी मिल के पुनरुद्धार कार्य का मुख्यमंत्री ने किया शुभारंभ

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने आज प्रगति यात्रा के प्रथम चरण के तीसरे दिन सीतामढ़ी जिले के रीगा चीनी मिल के पुनरुद्धार कार्य का शिलापट्ट अनावरण कर शुभारंभ किया। मुख्यमंत्री ने सीजन 2024-25 के लिए चीनी मिल संचालन का गन्ना का बंडल डालकर शुभारंभ किया। इस दौरान मुख्यमंत्री ने रीगा चीनी मिल के संचालन कार्यों की जानकारी ली और मिल परिसर का जायजा लिया। मुख्यमंत्री को कार्यक्रम के दौरान प्रतीक चिह्न, अंगवस्त्र एवं फूलों का गुलदस्ता भेंटकर स्वागत किया गया। इसके पश्चात मुख्यमंत्री ने डुमरा प्रखंड के मनियारी गांव के विकास कार्यों का जायजा लिया। इस दौरान मुख्यमंत्री ने रिमोट के माध्यम से सीतामढ़ी जिले के लिए 236 करोड़ 60 लाख रुपये की विभिन्न योजनाओं का उद्घाटन एवं शिलान्यास किया। इसके तहत 141 करोड़ 12 लाख 92 हजार रुपये की योजनाओं का उद्घाटन तथा 95 करोड़ 47 लाख 78 हजार रुपये की योजनाओं का शिलान्यास किया। मुख्यमंत्री ने जल-जीवन-हरियाली अभियान के अंतर्गत निर्मित सतुआही पोखर, मनियारी (डुमरा में) नौका विहार तथा पोखर किनारे योग सह ध्यान केंद्र, खुला व्यायामशाला एवं बाल क्रीड़ा स्थल का शिलापट्ट अनावरण कर उद्घाटन किया। इस दौरान मुख्यमंत्री ने जल-जीवन-हरियाली अभियान का गुब्बारा उड़ाया। मुख्यमंत्री ने सतुआही पोखर में दो हंसों के जोड़ा को भी छोड़ा। योग सह ध्यान केंद्र का निरीक्षण किया। मुख्यमंत्री ने तालाब के निरीक्षण के दौरान कहा कि इसके चारों तरफ सीढ़ी बनाएं और बगल में सुरक्षात्मक घेरा बनाएं ताकि कोई तालाब में न गिरे। तालाब ऐसा बनाएं कि यह देखने में आकर्षक लगे और साथ ही यहां लोगों के घूमने एवं बैठने के लिए भी समुचित व्यवस्था हो।

राष्ट्रपति ने 17 बच्चे को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से किया सम्मानित

नई दिल्ली /एजेंसी । राष्ट्रपति भवन के सांस्कृतिक केंद्र में गुरुवार को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से 17 बच्चों को सम्मानित किया। इन बच्चों को उनकी असाधारण उपलब्धियों के लिए सात विभिन्न श्रेणियों में पुरस्कार दिया गया। इस अवसर पर राष्ट्रपति ने कहा कि पूरे देश और समाज को इन पर गर्व है। राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मू ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि उन्होंने असाधारण कार्य किए हैं, आश्चर्यजनक उपलब्धियां हासिल की हैं, उनके पास असीमित क्षमताएं हैं और उनमें अतुलनीय गुण हैं। उन्होंने कहा कि ये बच्चे देश के अन्य बच्चों के लिए एक प्रेरणा हैं। राष्ट्रपति ने कहा कि हमारे देश की परंपरा बच्चों को अवसर प्रदान करने और उनकी प्रतिभाओं को पहचानने की रही है। उन्होंने जोर दिया कि इस परंपरा को और मजबूत किया जाना चाहिए। जब हम 2047 में भारत की स्वतंत्रता की शताब्दी मनाएंगे, तो ये पुरस्कार विजेता बच्चे राष्ट्र के प्रबुद्ध नागरिक होंगे। ऐसे प्रतिभाशाली लड़के-लड़कियां एक समृद्ध और विकसित भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देंगे। उन्होंने आगे कहा कि इस पुरस्कार से सम्मानित बच्चों ने देश को गौरवान्वित किया है और उन्होंने अपनी मेहनत, समर्पण और कार्यों से यह साबित कर दिया है कि वे समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में सक्षम हैं। बता दें कि प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार उन बच्चों को प्रदान किया जाता है जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में असाधारण कार्य किए हैं।

धूमधाम से मनाई जाएगी राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा की पहली वर्षगांठ

अयोध्या /एजेंसी । श्री राम जन्मभूमि मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा की पहली वर्षगांठ धूमधाम से मनाई जाएगी। राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट के माध्यम से यह जानकारी दी। पोस्ट में बताया गया है कि अयोध्या स्थित श्री राम जन्मभूमि मंदिर में श्री राम लला विग्रह के प्राण प्रतिष्ठा की पहली वर्षगांठ 11 जनवरी 2025 को मनाई जाएगी। राम जन्मभूमि मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा की पहली वर्षगांठ को प्रतिष्ठा द्वादशी के रूप में मनाया जाएगा। इस दिन मंदिर परिसर में विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। यज्ञ मंडप में शुक्ल यजुर्वेद के मंत्रों के साथ अग्निहोत्र का आयोजन सुबह 8 से 11 बजे और फिर दोपहर 2 से 5 बजे तक किया जाएगा। इसके अलावा, 6 लाख श्री राम मंत्रों का जप और राम रक्षा स्तोत्र, हनुमान चालीसा सहित अन्य धार्मिक मंत्रों का उच्चारण भी किया जाएगा। मंदिर के भूतल पर 3 से 5 बजे तक राग सेवा 6-9 बजे तक बधाई गीत प्रस्तुत किए जाएंगे। इसके बाद, यात्री सुविधा केंद्र की पहली मंजिल पर रामचरितमानस का संगीतबद्ध पाठ होगा। अंगद टीला पर राम कथा (2 से साढ़े तीन बजे तक), रामचरितमानस पर प्रवचन (साढ़े तीन से 5 बजे तक), साढ़े पांच से साढ़े सात बजे तक सांस्कृतिक कार्यक्रम और सुबह से श्री राम के प्रसाद का वितरण होगा। श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ने सभी श्रद्धालुओं और भक्तों को इस ऐतिहासिक अवसर पर भाग लेने के लिए आमंत्रित किया है। यह दिन अयोध्या और भारत के लिए एक विशेष धार्मिक महत्व का दिन होगा, जिसमें भक्तगण श्री राम के प्रति अपनी श्रद्धा और भक्ति को व्यक्त करेंगे।

30 दिसंबर को इसरो लांच करेगा स्पैडेक्स मिशन

हैदराबाद /एजेंसी । भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के अनुसार, आगामी स्पैडेक्स मिशन 30 दिसंबर को श्रीहरिकोटा से पीएसएलवी-सी60 नामक रॉकेट से लांच करेगा है। इस मिशन का उद्देश्य ऐसी तकनीक विकसित करना और प्रदर्शित करना है जो अंतरिक्ष में रहते हुए अंतरिक्ष यान को जोड़ने और अलग करने की अनुमति देती है। पीएसएलवी-सी60 रॉकेट तैयार है और इस अंतिम तैयारियों और उपग्रह एकीकरण के लिए लांच साइट पर ले जाया गया है। इसरो ने एक तेज टाइम-लैप्स वीडियो साझा किया है जिसमें पहली बार लांच पैड पर ले जाए जा रहे पूर्ण रॉकेट को दिखाया गया है। लांच को लाइव देखने में रुचि रखने वालों के लिए, इसरो ने एक व्यूइंग गैलरी तैयार की है। आगंतुकों के लिए पंजीकरण 18 दिसंबर को शाम 6 बजे शुरू हुआ। स्पैडेक्स मिशन को एक नई और लागत प्रभावी तकनीक का परीक्षण करने के लिए डिजाइन किया गया है, इसमें अंतरिक्ष में एक साथ काम करने वाले दो छोटे अंतरिक्ष यान शामिल हैं। यह तकनीक भारत की भविष्य की अंतरिक्ष योजनाओं के लिए महत्वपूर्ण है, जिसमें चंद्रमा पर मिशन और भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन का निर्माण शामिल है। आसान तरीके से समझने पर जब एक ही मिशन के लिए कई लांच की आवश्यकता होती है, तब अंतरिक्ष में डॉकिंग तकनीक महत्वपूर्ण होती है। इस मिशन के साथ, भारत यह क्षमता हासिल करने वाला दुनिया का चौथा देश बनने की राह पर है।

बाढ़ नियंत्रण :173 कटाव निरोधक योजनाओं को मिली स्वीकृति

स्वीकृति

प्रात : किरण

पटना। बिहार में बाढ़ के प्रभाव को कम करने और कटाव से सुरक्षा के लिए जल संसाधन विभाग ने महत्वपूर्ण कदम उठाये हैं।इस वर्ष की बाढ़ अवधि में विभिन्न स्थानों पर हुए कटाव एवं अन्य क्षति का आकलन करते हुए, 2025 की बाढ़ अवधि से पहले कराये जाने वाले कटाव निरोधक कार्यों से संबंधित स्थल निरीक्षण, समीक्षा और अनुमोदन की प्रक्रिया को पूरा कर लिया गया है। विभाग में उपलब्ध निधि और कार्य की प्राथमिकताओं का आकलन करते हुए, इस वर्ष राज्य योजना मद के अंतर्गत बिहार भूभाग में कुल 115 कटाव निरोधक योजनाओं को

बिहार में 115 और नेपाल में 58 स्थानों पर कराये जाएंगे कटाव निरोधक कार्य

योजनाओं पर खर्च होंगे 562 करोड़

योजना समीक्षा समिति द्वारा स्वीकृति दे दी गई है, जिनकी कुल प्राक्कलित लागत राशि लगभग 475 करोड़ रुपये है। इसके अतिरिक्त, नेपाल भूभाग में कुल 58 कटाव निरोधक योजनाओं को क्रियान्वित करने पर सहमति बनी है, जिनकी प्राक्कलित लागत राशि लगभग 86 करोड़ रुपये है। इस प्रकार 2025 की बाढ़ से पूर्व पूर्ण करने के लिए जल संसाधन विभाग की कुल 173 योजनाओं की स्वीकृति मिल गई है, जिनकी कुल प्राक्कलित राशि लगभग 562 करोड़ रुपये है। जल संसाधन विभाग के अंतर्गत बाढ़ प्रक्षेत्र के सभी मुख्य अभियंताओं ने बिहार राज्य में विभिन्न नदियों पर प्रस्तावित कटाव निरोधक कार्यों को बिहार राज्य तकनीकी सलाहकार समिति के समक्ष प्रस्तुत किया। इन योजनाओं की समीक्षा बिहार राज्य तकनीकी सलाहकार समिति, गंडक उच्च स्तरीय समिति, और कोसी उच्च स्तरीय समिति द्वारा की गई। निधि की उपलब्धता एवं कार्य की प्राथमिकता के आधार पर इन अनुशंसित योजनाओं को योजना समीक्षा समिति की 2 दिसंबर से 6 दिसंबर और 20 दिसंबर 2024 को हुई बैठकों में अनुशंसा प्रदान की। विभाग के स्तर पर सभी स्वीकृत योजनाओं के लिए गो-अहेड निर्गत कर दिया है। अब संबंधित कार्यपालक अभियंता इन योजनाओं के लिए निविदा प्रक्रिया का निष्पादित कर रहे हैं, ताकि योजनाओं को समय पर पूरा किया जा सके और 2025 की संभावित बाढ़ अवधि में कटाव से सुरक्षा मिल सके। जल संसाधन विभाग बिहार में बाढ़ से सुरक्षा और नदियों के कटाव को रोकने के लिए प्रतिबद्ध है। विभाग द्वारा कटाव निरोधक योजनाओं का सुचारू और प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित किया जाएगा।

सीएम नीतीश की प्रगति यात्रा का दूसरा चरण 4 जनवरी से

दूसरे चरण में सीएम छह जिलों का करेंगे दौरा, विकास योजनाओं का लेंगे जायजा

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की प्रगति यात्रा का पहला चरण सोमवार 23 दिसंबर को चंपारण से प्रारंभ हो चुका है। इसके साथ ही मुख्यमंत्री की दूसरे चरण की प्रगति यात्रा का कार्यक्रम भी जारी कर दिया गया है। दूसरे चरण की प्रगति यात्रा चार जनवरी 2025 से प्रारंभ होगी और चार से 13 जनवरी के बीच मुख्यमंत्री नीतीश कुमार छह जिलों का दौरा करेंगे और अधिकारियों के साथ जहां विकास योजनाओं का जायजा लेंगे, वहीं समीक्षा बैठक भी करेंगे। पांच एवं छह एवं नौ, 10 जनवरी को यात्रा नहीं होगी।

मंत्रिमंडल सचिवालय के अधिकारियों को दिए निर्देश: मंत्रिमंडल सचिवालय ने मुख्यमंत्री की दूसरे चरण की प्रगति यात्रा

का कार्यक्रम जारी कर दिया है। मंत्रिमंडल सचिवालय के अपर मुख्य सचिव डॉ. एस सिद्धार्थ ने सरकार के निर्णय से सभी विभागों के अपर मुख्य सचिव, प्रधान सचि, सचिवों के साथ ही सभी जिलों के प्रभारी सचिव, प्रमंडलीय आयुक्त, क्षेत्रीय आईजी-डीआईजी, एसपी और डीएम को भी अवगत करा दिया है। निर्णय के मुताबिक, पहले चरण की यात्रा की भांति ही मुख्यमंत्री दूसरे चरण में जिलों में स्थानीय विकास योजनाओं का उद्घाटन, शिलान्यास और अवलोकन करेंगे। साथ ही अधिकारियों के साथ योजनाओं की समीक्षा भी होगी। इस चरण में भी जिलों के प्रभारी मंत्री, जिनका गृह जिला संबंधित जिले में है वे मंत्री, स्थानीय सांसद, विधायक, विधान पार्षद तथा राज्य स्तरीय कार्यक्रम कार्यान्वयन समिति के उपाध्यक्ष अपने गृह जिला में इस कार्यक्रम में भाग ले सकेंगे।

यात्रा कार्यक्रम पर एक नजर

- 04 जनवरी शनिवार - गोपालगंज - पटना वापसी
- 07 जनवरी मंगलवार - सिवान - पटना वापसी
- 08 जनवरी बुधवार - सारण - पटना वापसी
- 11 जनवरी शनिवार - दरभंगा - मधुबनी रात्रि विश्राम
- 12 जनवरी रविवार - मधुबनी - मधुबनी रात्रि विश्राम
- 13 जनवरी सोमवार - समस्तीपुर - पटना वापसी

दशमेश पिता के साहिबजादों का शौर्य व शहादत आज के युवाओं के लिए प्रेरणास्त्रोत

विस के अध्यक्ष नंदकिशोर यादव, मंत्री दिलीप जायसवाल, विजय सिन्हा, दिलीप सैंकिया, संजीव चौरसिया, सीता साहू ने किया संबोधित

प्रातः किरण संवाददाता

पटना सिटी। श्री गुरु गोविंद सिंह जी महाराज के चारों पुत्रों के बलिदान से प्रेरणा लेकर देश के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने 2022 में बाल दिवस मनाने की घोषणा की। इसी के तहत भारतीय जनता पार्टी पटना महानगर द्वारा श्री गुरु तेग बहादुर एकेडमी हॉल बाड़े की गली में कार्यक्रम गुरुवार को आयोजित किया गया। मंच पर बिहार विधानसभा के अध्यक्ष नंदकिशोर यादव, उप मुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा, प्रदेश अध्यक्ष सह बिहार सरकार में मंत्री डॉ दिलीप जायसवाल, विधायक संजीव चौरसिया, पटना नगर निगम के महापौर श्रीमती सीता साहू, तख्तश्री कमेटी के अध्यक्ष जगजोत सिंह सोही, महासचिव इंद्रजीत सिंह, कनीय उपाध्यक्ष, पूर्व महासचिव महेंद्रपाल सिंह ढिल्लन, सदस्य हरपाल सिंह जौहल और पटना महानगर भाजपा के अध्यक्ष अभिषेक कुमार उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का संचालन विधान पार्षद प्रमोद चंद्रवंशी ने किया। प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष शाह मंत्री दिलीप जायसवाल ने कहा कि सिख धर्म का बलिदान समाज के लिए उदाहरण है। नवम, दशम पातशाह और साहिबजादों देश ही नहीं, बल्कि विश्व को एक अनुकरणीय संदेश दिया कि जब भी जुल्म हो, तो झुको नहीं, बल्कि अपना सर्वस्व बलिदान कर भी धर्म व ईमान की रक्षा करो। भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री दिलीप सैंकिया ने कहा कि बाबा जोरावर सिंह व फतेह सिंह ने धर्म की रक्षा करने को लेकर धर्मांतरण नहीं किया। स्थानीय विधायक व बिहार विधानसभा के अध्यक्ष नंदकिशोर यादव ने कहा कि साहस व वीरता के प्रतीक हैं गुरु जी के साहिबजादे। जब साहिबजादे धर्मांतरण को राजी नहीं हुए, तब उनसे कहा गया कि मरना क्यों पसंद करते हो। तब साहिबजादे ने कहा कि आप मुझे बता दो कि यदि मैं धर्म परिवर्तन कर भी लूं, तो क्या मैं आजीवन जिंदा रहूंगा। हमारी मौत नहीं होगी। तब मैं धर्म परिवर्तन को तैयार हूं। यह बात सुनकर वहां मौजूद सभी अवाक रह गए। ऐसे वाक पटुता में निपुण और वीर साहिबजादे को आज हम सभी नमन करते हैं और उनके चरित्रों का आज के किशोर वय और युवाओं को सीख लेने की जरूरत है। इस अवसर पर छोटे-छोटे बच्चों ने गुरुवाणी का और शौर्य गान का पाठ किया।

उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने कहा कि गुरु गोविंद सिंह जी महाराज के चारों पुत्रों के बलिदान आज के युवाओं के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है। युवाओं को श्री गुरु गोविंद सिंह जी के इतिहास को जानना चाहिए, जिन्होंने हिन्दू धर्म और राष्ट्र के रक्षा के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया। उनके बलिदान से प्रेरणा ले कर सशक्त राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। कार्यक्रम की सफलता के लिए कार्यक्रम के सह संयोजक प्रदेश भाजपा के प्रवक्ता प्रभाकर मिश्रा लगे रहे। कार्यक्रम में मीडिया प्रभारी प्रदीप काश, राजेश साह, त्रिलोक सिंह निषाद, विनय केसरी, संतोष मेहता, रूपनारायण मेहता, अधिवक्ता नवीन कुमार सिन्हा, सुरेश पटेल, अमित कानोडिया, अजय सिंह, कांति केसरी, संजय सिंह, हेमलता शर्मा, सीता सिन्हा, संगीता चौरसिया, अविनाश पटेल सहित स्कूलों के छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।कार्यक्रम में निबंध और भाषण प्रतियोगिता में सम्मिलित हुए सभी छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया।

संक्षिप्त खबरें

एडुनेचर स्कूल का छात्र नेशनल चैंपियनशिप के लिए चयनित

प्रातः किरण संवाददाता

फतुहा। आगामी 27 से 30 दिसंबर तक पी एल रॉय इंडोर स्टेडियम, कोलकाता में आयोजित 7 वीं नेशनल सवात फ्रेंच बॉक्सिंग में खेलने के लिए फतुहा एडुनेचर ग्लोबल स्कूल के प्रथम वर्ग के छात्र प्रीतम का चयन हुआ है। प्रिंसिपल अखोरी चंदन ने बताया कि प्रीतम पूर्व में बिहार से गोल्डमेडलिस्ट रह चुका है। इस बार बिहार से 70 बच्चों का चयन हुआ था जिसमें पटना जिला से चयनित 2 बच्चों में प्रीतम का नाम शामिल है। गुरुवार को सभी खिलाड़ियों को पूर्व कला संस्कृति एवं खेल मंत्री शिवचन्द्र राम ने कोलकाता के लिए रवाना किया। प्रीतम के चयनित होने पर स्कूल के फाउंडर आरबी सिंह, सचिव के प्रियंका सहित सभी शिक्षकों ने सभी खिलाड़ियों को शुभकामनाएं दीं हैं।

रंजीत कुमार उर्फ दही गोप के हत्या में चोरी की बाईक इस्तेमाल किया गया था

दानापुर।नगरके अंतर्गत छावनी परिषद के पूर्व उपाध्यक्ष रंजीत कुमार उर्फ दही गोप के हत्या करने अपराधियों ने चोरी की बाईक इस्तेमाल किया था। बाईक को घटनास्थल से थोड़ी दूर खड़ा कर दिया था। जांच में यह भी बात सामने आई है कि अपराधी घटना को अंजाम देने के बाद बाईक से भागने वाले नहीं थे। इसलिए जांच को भटकाने के लिए बाईक को डबल स्टैंड पर लगाकर लाक कर दिया था। उक्त बाईक में लगा रजिस्ट्रेशन नंबर का बाईक कदमकुआं थाना क्षेत्र में मिलने की बात कही जा रही है सूत्रों की मानें तो अपराधियों ने चार पांच की संख्या में आए थे और घटना को अंजाम दिया था उसके बाद सभी अलग-अलग दिशाओं में पैदल ही भागे थे जिससे घटनास्थल पर ही गोरखनाथ की मौत हो गई थी। जबकि गंभीर रूप से जख्मी रंजीत की मौत चार दिन बाद इलाज के दौरान हो गई थी।

धान की भूसी में छुपा कर रखा 38 कार्टन विदेशी शराब व वाहन जब्त

पटना सिटी। उत्पाद विभाग की टीम ने महात्मा गांधी सेतु पर लावारिस स्थिति में खड़े पिकअप वैन से 38 कार्टन विदेशी शराब यानी रम बरामद किया है। इसकी कीमत करीब साढ़े तीन लाख रुपए आंकी गई है। दरअसल उत्पाद विभाग के सहायक आयुक्त प्रेम प्रकाश को सूचना मिली कि हाजीपुर की ओर से महात्मा गांधी सेतु के रास्ते एक पिकअप वैन आ रहा है, जिस पर शराब लदा है। इसके बाद उत्पाद निरीक्षक अजीत कुमार के नेतृत्व में टीम का गठन कर महात्मा गांधी सेतु पर लगाया गया। इस दौरान पिकअप वैन के बताए गए नंबर बीआर 31जी 8752 सेतु पर सड़क किनारे खड़ा मिला। उत्पाद विभाग की टीम वहां काफी देर तक निगरानी करती रही कि वाहन का चालक और उस पर रहे लोग पहुंचे। मगर काफी देर बीत जाने के बाद भी वहां पर कोई नहीं पहुंचा। इसके बाद टीम में शामिल लोगों ने पिकअप वैन की जांच शुरू की। इसमें पीछे की ओर धान की भूसी का बोरा लदा था। जब धान की भूसी का बोरा हटाया गया, तो उसके बाद 38 कार्टन विदेशी शराब पाया गया। कुल 456 बोतल रम, जिसकी मात्रा करीब 342 लीटर है, को जब्त किया गया। शराब की बोतल के रैपर पर उत्पाद एवं बिक्री केवल झारखंड प्रदेश में लिखा हुआ था। छापेमारी टीम में उत्पाद निरीक्षक अजीत कुमार, एएसआई भरत झा, सिंटू कुमारी, अजीत कुमार, सोनम कुमारी, सिपाही शशि ऋषि, अभिजीत व गोलू शामिल थे।

हंगामा कर रहा शराबी गिरफ्तार

मसौढ़ी।थाना क्षेत्र अंतर्गत बुधवार को संघतपर पीएलएस कॉलेज रोड के पास शराब पीकर हंगामा कर रहे शराबी को स्थानीय लोग की सूचना पर थाना के एसआई स्वीटी कुमारी ने पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचकर शराबी को गिरफ्तार कर मेडिकल जांच करवाया।मेडिकल जांच में डॉक्टर ने शराब पीने की पुष्टि किया जहां शराबी की पहचान मसौढ़ी थाना क्षेत्र के महादेव पुर गांव निवासी रामाश्रय रविदास के पुत्र सूरज रविदास के रूप में किया गया गिरफ्तार शराबी को गुरुवार को कार्रवाई के लिए न्यायालय भेज दिया गया है।

वारंटी को गिरफ्तार कर भेजा जेल

प्रातः किरण संवाददाता

मसौढ़ी। पुलिस ने दो वारंटी को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया,जहां से आरोपित को जेल भेज दिया गया।मसौढ़ी पुलिस ने बताया कि क्षेत्र के मटौढ़ा गांव निवासी रामकेश्वर बिंद के पुत्र रामस बिंद व चूट रविदास के पुत्र नेपाली रविदास विगत काफी समय से फरार चल रहा था।आरोपित के खिलाफ न्यायालय से वारंट जारी किया गया था।जिसके बाद पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर आरोपित को गिरफ्तार करके न्यायालय में पेश किया।

15 स्वर्ण पदक के साथ बिहार दूसरे स्थान पर

युवराज ने स्वर्ण पदक जीत राज्य का खोला खाता

प्रातः किरण संवाददाता

पटना सिटी। सिकोकई कराटे इंटरनेशनल उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में वाराणसी में संपन्न ऑल इंडिया ओपन कराटे चैंपियनशिप में बिहार के खिलाड़ियों ने उमदा प्रदर्शन करते हुए 15 स्वर्ण पदक, 3 रजत और एक कांस्य पदक जीता। इस प्रतियोगिता में बिहार को दूसरा स्थान दिलाया।

प्रतियोगिता के पहले दिन सब-जूनियर स्पर्धा में युवराज ने एक स्वर्ण पदक जीतकर राज्य का खाता खोला। इसके बाद अन्य खिलाड़ी भी अपने स्पर्धा में पदक जीत कर राज्य का मान बढ़ाया। बिहार के खिलाड़ियों के इस प्रदर्शन पर स्टेट कराटे एसोसिएशन ऑफ बिहार के अध्यक्ष अभय कुमार अतुल ने कहा कि बिहार से 20 खिलाड़ी इस प्रतियोगिता में भाग लिए थे। सभी ने पदक जीत कर राज्य को गौरवान्वित किया है।

विजेता खिलाड़ियों को कराटे इंडिया ऑर्गेनाइजेशन के अध्यक्ष हंसी भरत शर्मा ने पुरस्कृत किया। उन्होंने विजेता खिलाड़ियों को बधाई दी और कहा कि इन खिलाड़ियों ने राज्य का मान बढ़ाया है। आगामी कराटे प्रतियोगिता में भी उनके अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद है। पदक विजेता खिलाड़ियों में नाव्या सिंह, मानवी पटेल, श्वेता कुमारी, स्नेहा साहनी ने बालिका वर्ग में स्वर्ण पदक जीता। प्रतीक प्रकाश, सिद्धांत प्रकाश, आर्यन कुमार, सक्षम वर्मा, शिव कुमार, श्रेयांशु चक्रवर्ती, युवराज, सन्नी कुमार ने बालक वर्ग में स्वर्ण पदक जीता एवं रजत पदक बालक वर्ग में चिराग कवित,आयुष कुमार, आतिश रस्तोगी, बालिका वर्ग में आशिता प्रिया एवं कांस्य पदक में बालिका वर्ग में आयुषी कुमारी बिहार को उपविजेता बनाने में सराहनीय योगदान दिया।

इस अवसर पर डब्ल्यूकेएफ रेफरी कनक राजू जी, विजय कुमार, एकेएफ रेफरी हांशी हसरत अली खान, अमित उपाध्याय तथा मध्य प्रदेश कराटे संघ के अध्यक्ष शिहांन राजेंद्र सिंह तोमर उपस्थित रहे।

बिहार की पूरी टीम के साथ शिहान राम शिव कृष्ण, बजरंगी कुमार, पप्पू कुमार, सेंसेई श्वेता को क्योशी अभय अतुल (अध्यक्ष, स्टेट कराटे एसोसिएशन ऑफ बिहार) ने बधाइयां देते हुए सभी के उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

भागवत कथा में रुक्मणी विवाह, द्वारिका लीला, सुदामा चरित्र की हुई कथा

प्रातः किरण संवाददाता

पटना सिटी। श्री नागा बाबा सामुदायिक भवन पूर्वी नंद गोला में श्री नागा बाबा विकास एवं सेवा संस्थान के पूर्व अध्यक्ष स्वर्गीय योगेंद्र प्रसाद, स्वर्गीय बसंत प्रसाद यादव एवं स्वर्गीय कृष्ण प्रसाद गुप्ता की पुण्य स्मृति में श्री भागवत कथा छठे दिन भी जारी रहा। प्रात 9.30 से 12.30 तक आवाहित देव पूजन किया गया। इसमें मुख्य यजमान सुरेश यादव एवं सूरज यादव ने पूजा किया। भागवत पाठ पारायण जप आचार्य पंडित संतोष पांडेय शास्त्री ,पंडित सूरजकांत मिश्रा और पंडित प्रेम सागर उपाध्याय ने कराई। इस दौरान वार्ड 70 के पार्षद विनोद कुमार व शैलेंद्र कुमार भी मुख्य रूप से सक्रिय थे। पूजन उपरांत श्रीमद् भागवत कथा की महत्ता में श्री कृष्ण लीला, गोपी गीत, रुक्मणी विवाह, द्वारिका लीला, श्री कृष्ण के अन्य विवाह, सुदामा चरित्र की कथा

शास्त्रोपासक आचार्य डॉ चंद्रभूषण मिश्रा ने सुनाई। भागवत कथा के दौरान बिहार विधानसभा के अध्यक्ष नंदकिशोर यादव भी पहुंचे और अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हुए श्रीमद् भागवत पुस्तक के समक्ष शीश नवाया। साथ ही आचार्य चंद्रभूषण जी मिश्रा से आशीर्वाद ग्रहण किया। इस दौरान पटना नगर निगम की उप महापौर रेशमी चंद्रवंशी भी पहुंचीं और श्रीमद्भागवत पुस्तक के समक्ष नतमस्तक होते हुए कथा का श्रवण भी किया।

नगर परिषद और अनुमंडल पुलिस के बीच फ्रेंडली क्रिकेट मैच का हुआ आयोजन

प्रातः किरण संवाददाता

फतुहा। गुरुवार को एसकेएमभी कॉलेज के मैदान में नगर परिषद् फतुहा द्वारा फ्रेंडली क्रिकेट मैच -2024 कराया गया। जिसका उद्घाटन मुख्य पार्षद रुपा कुमारी एवं उपमुख्य पार्षद अंजनी कुमारी ने फीता काटकर किया। जिसमें टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी नगर परिषद टीम ने किया। जिसमें इस टीम ने सभी विकेट खोकर एक सौ दो रन बनाया। जबकि अनुमंडल पुलिस टीम ने पांच विकेट खोकर जीत हासिल किया। बेस्ट बॉलर एवं मैन ऑफ द मैच का खिताब निखिल कुमार को मिला। जबकि बेस्ट फिल्डिंग का खिताब राजवीर सोनी को मिला। वही रुपा कुमारी ने विजेता - उप विजेता टीम को शील्ड-मेडल देकर पुरस्कृत किया। आगत अतिथियों का स्वागत मुख्य पार्षद प्रतिनिधि सह भाजपा नेता टुनटुन यादव ने किया। मौके समाजसेवी सुधीर यादव पर राजद नगर अध्यक्ष डा. दयानंद यादव, पूर्व उपाध्यक्ष संजय गोप, नेमन सिंह, भाजपा नगर अध्यक्ष श्याम सुंदर केशरी, मुन्ना सिंह, अवधेश यादव, पार्षद ठाकुर प्रसाद तांती समेत दर्जनों गणमान्य लोग वार्ड मौजूद थे। प्रशासन की टीम से (कप्तान) फतुहा एसडीपीओ निखिल कुमार, थानाध्यक्ष रूपक कुमार अंबुज आदि थे।

बिहटा के डॉ अशोक गगन कॉलेज में धूमधाम से मना कॉंग्रेस के 140 वाँ स्थापना दिवस, गोष्ठी आयोजित

प्रातः किरण संवाददाता

बिहटा । गोपाल विद्यार्थी प्रखंड क्षेत्र के अमहरा नया मोड़ स्थित डॉ अशोक गगन कॉलेज के गांधी सभागार में गुरुवार को अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी की140वीं स्थापना के अवसर पर ‌ह्शिक्षा पर महात्मा गांधी के विचारह्व गोष्टी का आयोजन किया गया ।कार्यक्रम की शुभारम्भ अखिल भारतीय कॉंग्रेस कमिटी के नेशनल कॉर्डिनेटर डॉ अशोक गगन, जिलाध्यक्ष सुमित कुमार सन्नी,कॉलेज निदेशक डॉ दिव्य ज्योति ,विकाश मिश्रा,सोनू कुमार आदि ने संयुक्त रूप से महात्मा गांधी एवं बाबा साहेब अम्बेडकर की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पण करने के बाद दीपप्रज्वलन कर किया गया ।गोष्टी को संबोधित करते हुए डॉ अशोक गगन ने कहा कि कांग्रेस का गौरवशाली इतिहास रहा है जो त्याग तपस्या और बलिदान से भरपूर है ।कांग्रेस का न सिर्फ आजादी की लड़ाई बल्कि आधुनिक भारत के निर्माण में भी अतुलनीय योगदान रहा है ।उन्होंने देश में सामाजिक सद्भाव का नया वातावरण तैयार करने पर जोर दिया। कांग्रेस एक दल ही नहीं बल्कि एक विचार और आंदोलन का नाम है, इसलिए 140 साल बाद भी इस विचार की यात्रा अनवरत जारी है ।आधुनिक भारत के निर्माण में महात्मा गाँधी का बहुआयामी योगदान रहा है ।जिला कांग्रेस कमिटी पटना ग्रामीण -1 के जिलाध्यक्ष सुमित कुमार सन्नी ने कहा कि सन 1915 से 1947 तक की अवधि पर नजर डालें तो यह कांग्रेस का ह्यगांधी युग रहा। ।वही कॉलेज निदेशक डॉ दिव्य ज्योति, डॉ अनुराग बिहारी,प्रो आशीष रंजन, प्रो अमित कुमार,प्रो पीयूष,अभय शर्मा,पवन सिंह,प्रो श्यामल सिंह, शाहिद आलम, सतेंद्र सिंह व बिनोद सिंह आदि थे।

डिप्लोमा फार्मासिस्टों के 2473 पदों पर नियुक्ति को जल्द विज्ञापन प्रकाशित हो

प्रातः किरण संवाददाता

पटना सिटी। डिप्लोमा फार्मासिस्ट आर्गनाइजेशन छात्र संघ, बिहार की ओर से संवाददाता सम्मेलन कर अध्यक्ष अरविंद कुमार ने बिहार तकनीकी सेवा आयोग के अध्यक्ष से डिप्लोमा फार्मासिस्टों के 2473 पदों पर नियमित नियुक्ति को जल्द विज्ञापन प्रकाशित कर नियमित नियुक्ति की प्रक्रिया शीघ्र पूरा करने को कहा है। बताते चलें कि यह बहाली बिहार फार्मासिस्ट संवर्ग (संशोधन) नियमावली 2024 के अनुसार 75 अंकों की लिखित प्रतियोगिता परीक्षा एवं 25 अंक अनुभव के देय हैं और बी फार्म एवं एम फार्म उत्तीर्ण अभ्यर्थियों को भी डिप्लोमा इन फामेर्सी उत्तीर्ण होना अनिवार्य है यानी कि डिप्लोमा इन फामेर्सी अनिवार्य शैक्षणिक योग्यता है। स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय ने विधानसभा में एक प्रश्न के उत्तर में भी स्पष्ट किया है कि पटना उच्च न्यायालय द्वारा पारित न्यायादेश में डिप्लोमा इन फामेर्सी योग्यता के बिना बी फार्म एवं एम फार्म रखने वाले अभ्यर्थी फार्मासिस्ट के पद पर चयन और नियुक्ति की प्रक्रिया में भाग लेने के पात्र नहीं हैं। दोनों के पाठ्यक्रम के मानक पूरी तरह से अलग हैं। बी फार्म एवं एम फार्म योग्यताधारी आमतौर पर औद्योगिक क्षेत्र में लगे होते हैं, साथ ही स्वास्थ्य विभाग में ड्रग इंस्पेक्टर और अन्य उच्च पदों के संदर्भ में रोजगार का अवसर मिलता है। पटना उच्च न्यायालय के न्यायादेश के आलोक में ही बी फार्म एवं एम फार्म उत्तीर्ण अभ्यर्थियों को भी डिप्लोमा इन फामेर्सी उत्तीर्ण होना अनिवार्य है, का प्रावधान किया गया है। न्यायालय द्वारा राज्य सरकार को आदेश दिया गया था कि लोकसभा चुनाव खत्म होने के बाद तीन माह के अंदर सिर्फ डिप्लोमा फार्मासिस्टों की नियमित नियुक्ति को नया विज्ञापन प्रकाशित कर नियुक्ति की प्रक्रिया पूर्ण कर ली जाए, लेकिन लोकसभा चुनाव खत्म हुए लगभग छह माह पूरे हो गए, मगर अबतक नियमित नियुक्ति के लिए विज्ञापन प्रकाशित नहीं की गई है। ससमय उच्च न्यायालय का आदेश का पालन नहीं होने पर अरविंद कुमार के द्वारा अवमानना वाद याचिका भी दायर की गई है।

स्वास्थ्य विभाग द्वारा डिप्लोमा फार्मासिस्टों के 2473 रिक्त पदों पर नियमित नियुक्ति की अधियाचना लगभग डेढ़ माह पहले ही भेजी जा चुकी है। मगर विज्ञापन प्रकाशित नहीं की गई है। राज्य के लगभग सभी सरकारी अस्पतालों में डिप्लोमा फार्मासिस्ट के पद रिक्त हैं और मरीजों को अप्रशिक्षित लोगों से दवा एवं परामर्श लेनी पड़ रही है।

संवाददाता सम्मेलन में संघ के पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्य रजत, कपिलदेव, मनीष, चंचल, हरेराम, माधव, अमित, अंकित, सूरज, मकसूद, प्रवीण आदि मौजूद रहे।

तेजस्वी का राज्य में एक करोड़ सदस्य बनाने का लक्ष्य : रणविजय

गायघाट में सदस्यता अभियान को लगाया गया शिविर

प्रातः किरण संवाददाता

पटना सिटी। पटना साहिब विधानसभा क्षेत्र के तहत अशोक राजपथ के गायघाट में राष्ट्रीय जनता दल का सदस्यता अभियान चलाया गया। इसके माध्यम से सभी वर्गों को राजद से जोड़ने के लिए सदस्यता कैंप लगाया गया। इसका उद्घाटन राजद के प्रदेश प्रधान महासचिव सह विधायक रणविजय साहू ने सदस्यता रसीद काट कर किया। खासकर महिलाओं, शोषित और कमजोर वर्गों को राष्ट्रीय जनता दल का सदस्य बनाया गया। श्री साहू ने कहा कि बिहार के पूर्व उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने आवाहन किया है कि बिहार में एक करोड़ राष्ट्रीय जनता दल का सदस्य बनाया जाएगा। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए पटना साहिब विधानसभा क्षेत्र में कम से कम एक लाख प्राथमिक सदस्य बनाने का लक्ष्य रखा गया है। लक्ष्य को प्राप्त करना हमारी प्राथमिकता है। उन्होंने घोषणा किया कि तेजस्वी जी ने वादा किया है कि अगर 2025 में हमारी सरकार बनती है, तो हम माई-बहन समान योजना के तहत हर महिला को प्रति माह ढाई हजार रुपया देंगे और 200 यूनिट फ्री बिजली देंगे। साथ ही सामाजिक सुरक्षा पेंशन को 400 से बढ़ाकर डेढ़ हजार करने का वादा किया है। इस तरह उन्होंने 17 महीना की सरकार में पाच लाख नौकरियां देने का काम किए हैं। उसी प्रकार छात्र व नौजवानों को रोजगार एवं नौकरी देने का काम करेंगे।सदस्यता कैम्प की अध्यक्षता राजद के प्रदेश महासचिव सह पूर्व पार्षद प्रदीप मेहता ने किया। सदस्यता कार्यक्रम में पूर्व महासचिव सलमान अख्तर, पूर्व महासचिव सह पूर्व पार्षद बलराम चौधरी, महासचिव डॉ प्रेम गुप्ता, महासचिव विनोद यादव,

डॉ एकबाल अहमद, उमेश पंडित, पूर्व पार्षद महबूब कुरैशी, मुन्ना जायसवाल, डॉ अनवर इमाम, मो साबिर अली, अजीत सिंह कुशवाहा, हिदायत अहमद, रतन यादव, शिव मेहता, पंकज रजक, अख्तर अली, शकुंतला प्रजापति, बबलू राम, संगीता यादव, टुन्नू कुमार यादव शाहीन अनवर, अमन कुशवाहा, रंजीत कुमार चंद्रवंशी, मो फिरोज, रंजीत कुमार गुप्ता, सुरेश मेहता, कृष्ण कुमार पप्पू, पंकज सिंह, कुमार बल्लभ, मो असगर बाबर, मो अख्तर आदि थे।

जेपी सेतु से कंगन घाट से जिला घाट होते चमडोरिया जाएगा

प्रातः किरण संवाददाता

पटना सिटी। जेपी गंगा पाथवे से कंगन घाट पर नीचे उतरने वाले वाहनों का मार्ग बदला जाएगा। गंगा किनारे की सड़क पर भी परिचालन वन-वे होगा। यह फैसला एसडीओ सत्यम सहाय ने तख्तश्री पटना साहिब में प्रबंधक कमेटी, तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब के साथ बैठक करते हुए गुरुवार को कही। एसडीओ ने बताया कि प्रकाश पर्व में शामिल होने वाले पुलिसकर्मियों को मंगल तालाब के समीप स्थित सिटी हाई स्कूल और तख्त साहिब के आसपास में ठहराया जाएगा। कंगन घाट पर मरिन ड्राइव से उतरे वाहन किला घाट व चमडारिया होते हुए आएगी। कंगन घाट जाने वाले वाहन पुराने मार्ग से जाएगी। पीरदमड़िया घाट और शरीफागंज घाट के बीच गंगा किनारे की सड़कों पर परिचालन वन-वे होगा, ताकि प्रकाश पर्व में शामिल होने वाले संगत को परेशानी नहीं हो सके। बैठक में प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जगजोत सिंह सोही आदि थे।

जीवन में समर्थ गुरु का होना अत्यंत आवश्यक: मंहत ब्रजेश मुनि

पटना। कबीरपंथी आश्रम स्थित कबीर साईं मन्दिर मीठापुर में गुरूवारीय सत्संग का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सत्संग करते हुए महंत ब्रजेश मुनि महाराज ने कहा जीवन में सद्गुरु का होना अत्यंत आवश्यक है, बिना उसके जीव की नैया पार नहीं हो सकती। श्रेष्ठ जीवन प्राप्त करके हमें मनुष्य तन मिला है, हमें जीवन किसलिए क्यों मिला क्या प्रयोजन है। यदि यह प्रश्न मन में आए तो शुभ संकेत है। जीवन में गुरु मिले तो और भी शुभ संकेत है, बार-बार जन्मे और भोगों में लिप्त रहने के कारण ही मनुष्य ऊपर नहीं उठ पाता। गुरुओं में भी सबसे बढ़कर हैं सद्गुरु कबीर। उन्होंने कहा कि निषेध पर ही आकर्षण है। मनुष्य को जो मना किया जाए ध्यान वहीं जाता है। मन से लड़ना ठीक नहीं उसे समझाना चाहिए। उसे दबाने से ज्यादा अच्छा उपाय खोजना है। मन की गांठ साधना या एकांत में मौन बैठने से ही दूर हो सकती है। क्रोध व कामना रूपी ऊर्जा का रूपांतरण कर जीवन को ऊपर उठाने में लगना चाहिए और इसके लिए जीवन में संत का होना अत्यंत आवश्यक है। संत करुण से भरे होते हैं दुख की निवृत्ति के लिए प्रयासरत रहते हैं। इस अवसर पर रुबी प्रधान, चंदनेश्वर, कमलेश, आदि ने कबीर साईं के भजन गाकर वातावरण को भक्तिमय बनाया।

शिरडी की मदद से छत पर चढ़ चोरों ने दिया चोरी की घटना को अंजाम

पटना सिटी। मालसलामी थाना क्षेत्र के छोटी नगला स्थित एक मकान से करीब तीन लाख रुपए की संपत्ति चोरी चली गयी। पुलिस मामले की छानबीन कर रही है। छोटी नगला मोहल्ला निवासी विनय कुमार ने बताया कि चोरी की घटना बुधवार की देर शाम की है। घर में कोई नहीं था। वह कारखाना में थे और पत्नी कहीं गई हुई थी। घर में केवल दो ही लोग रहते हैं। ऐसे में चोरों ने सीढ़ी लगा कर छत पर चढ़ गए। छत के रास्ते चोरों ने चोरी की घटना को अंजाम दिया है। चोरों ने घर के अंदर घुस आलमारी और बक्शे को तोड़ कर सोने व चांदी के गहनों व अन्य कीमती सामान पर हाथ साफ कर दिया है। पीड़ित बुधवार को शाम करीब चार बजे घर से निकले थे। घर में ताला बंद था। रात करीब 11 बजे घर पहुंचने पर घर में चोरी होने का मामला प्रकाश में आया। इसके बाद पुलिस को सूचित किया गया। मौके पर पहुंची पुलिस ने छानबीन कर प्राथमिकी दर्ज की है। मालसलामी थानाध्यक्ष राजकुमार सिंह ने बताया कि पीड़ित ने करीब तीन लाख के जेवर चोरी होने की सूचना दी है। डॉग स्क्वायड की टीम ने भी निरीक्षण किया है। चोरों की पहचान के लिए पुलिस आसपास के सीसीटीवी फुटेज को भी खंगाल रही है।

चाकू दिखा राहगीरों से लूटपाट करने वाला तीन गिरफ्तार

पटना सिटी (प्राकि)। आलमगंज थाना की पुलिस ने रात में आयरन कसेरा के पास से राहगीरों से लूटपाट करने वाले तीन लुटेरों को गिरफ्तार किया है। इस संबंध में आलमगंज थाना में कांड संख्या 1149/24 दर्ज किया गया है। थानाध्यक्ष राजीव कुमार ने बताया कि अगमकुआं के आयरन कसेरा के पास चाकू दिखाकर राहगीरों से लूटपाट करने वाले तीन लोगों को गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तार लोगों में सुल्तानगंज थाना क्षेत्र के पत्थर की मस्जिद टेकारी रोड का रहने वाला सन्नी कुमार पिता चंदन कुमार, त्रिपोलिया बीएनआर रोड का आयुष कुमार पिता मोती पाठक और आलमगंज थाना क्षेत्र के आलमगंज चौकी गोसाई घाट का दीपक कुमार पिता सुरेश सहनी शामिल है। इन सबों के पास से एक लूटा गया मोबाइल, 800 रुपया और एक चाकू बरामद किया गया है।

प्रकाश पर्व पर कंगन घाट गई प्रभातफेरी, आज जाएगी गायघाट

पटना सिटी (प्राकि)। तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब में श्री गुरु गोविंद सिंह जी महाराज के 358वां प्रकाश उत्सव समारोह पर निकल रही प्रभातफेरी शुक्रवार को गायघाट गुरुद्वारा बड़ी संगत जाएगी। यहां पर दर्शन के बाद जमाल रोड, पटना जंक्शन संगत के घर होते हुए वापस लौटेगी। गुरुवार को पंज प्यारे के नेतृत्व में निकली तख्तश्री हरमंदिर साहिब से अरदास के बाद शुरू हुई प्रभातफेरी श्री गुरु गोविंद सिंह घाट व कंगन घाट गुरुद्वारा का दर्शन की।

हाइड्रोसील मरीजों के उपचार में तेजी लाने के लिए स्वास्थ्य विभाग उठा रहा जरुरी कदम: डॉ. परमेश्वर प्रसाद

प्रातः किरण संवाददाता

पटना। बिहार में हाइड्रोसील रोगियों के ऑपरेशन के लिए स्वास्थ्य विभाग ने महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। सभी हाइड्रोसील मरीजों में लगभग 80% मामले फाईलेरिया के होते हैं। राज्य सरकार द्वारा हाइड्रोसील मरीजों के निशुल्क ऑपरेशन की व्यवस्था की गई है। इस अभियान के तहत प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, रेफरल अस्पताल, अनुमंडलीय एवं अस्पतालों जिला, और मेडिकल कॉलेज अस्पतालों में कैंप मोड में ऑपरेशन किए जा रहे हैंह्व, उक्त बातें अपर निदेशक सह राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी, फाइलेरिया डॉ. परमेश्वर प्रसाद ने बताया।

डॉ. परमेश्वर प्रसाद ने बताया राज्य में इस वर्ष के जनवरी माह तक 17390 हाइड्रोसील मरीज चिह्नित थे। इसमे इस वर्ष राज्य में जनवरी से लेकर 30 नवंबर तक 7380 हाइड्रोसील मरीजों के ऑपरेशन किए गए हैं। बाकी बचे हुए चिन्हित हाइड्रोसील मरीजों के सफल ऑपरेशन को प्रभावी बनाने और अधिक से अधिक मरीजों तक पहुंचने के लिए व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। पंचायत स्तर से लेकर जिला स्तर तक सामुदायिक जागरूकता कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। जन-जागरूकता गतिविधियों के तहत स्वास्थ्य कर्मी, आशा कार्यकर्ता और स्वयंसेवी संस्थाओं की मदद से मरीजों को ऑपरेशन के लिए प्रेरित किया जा रहा है। यह पहल बिहार सरकार की स्वास्थ्य क्षेत्र में सुधार की प्रतिबद्धता को दशार्ती है। उन्होंने बताया कि राज्य शीघ्र ही हाइड्रोसील ऑपरेशन के 100% लक्ष्य को हासिल कर लेगा। यह प्रयास राज्य के उन लोगों के लिए वरदान साबित हो रहा है, जो आर्थिक तंगी के कारण इलाज नहीं करा पाते थे।

डॉ. परमेश्वर प्रसाद के अनुसार इस पहल के तहत मरीजों को कई विशेष सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं। हाइड्रोसील ऑपरेशन के लिए मरीजों को अस्पताल तक लाने और ले जाने की सुविधा उपलब्ध है। ऑपरेशन के साथ-साथ पोस्ट-ऑपरेटिव केयर के लिए निशुल्क दवाइयां भी प्रदान की जा रही हैं। दूर-दराज के क्षेत्रों में मरीजों को नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र पर लाकर ऑपरेशन कराया जा रहा है। यह सेवा बिल्कुल निःशुल्क है। उन्होंने बताया कि जिन लोगों के पास आयुष्मान भारत कार्ड है, वो सम्बंधित अस्पतालों में भी इसके जरिये ऑपरेशन करवा सकते हैं। साथ ही आयुष्मान भारत के लिए सूचीबद्ध अस्पतालों से अपील की गयी है कि वे हाइड्रोसील मरीजों का अपने अस्पताल में ऑपरेशन करें एवं इसकी सूचना राज्य फाईलेरिया नियंत्रण कार्यालय को प्रदान करें। हाइड्रोसील के चिन्हित मामलों का क्रॉस वैलिडेशन किया जा रहा है। यह प्रक्रिया सुनिश्चित करती है कि सभी पात्र मरीजों को सही समय पर उपचार मिल सके।

डॉ दिनेश्वर प्रसाद बने नीमा बिहार अध्यक्ष और डॉ आलोक बने प्रदेश महासचिव

प्रातः किरण संवाददाता

पटना। ब्रह्मा कुमारी शान्ति शक्ति सरोवर, वारिसपुर (मुजफ्फरपुर) में नीमा बिहार प्रदेश कार्यकारिणी की वार्षिक बैठक संपन्न हुई जिसमें सत्र 2024-25 के लिए नयी कार्यकारिणी का गठन नीमा केन्द्रीय कमेटी द्वारा नियुक्त ऑब्जर्वर डा० एस० एन० पाण्डेय (वाराणसी) और नीमा प्रदेश के मुख्य चुनाव आयुक्त डा० अनिल कुमार सिंह की देखरेख में सौहार्दपूर्ण वातावरण में किया गया। जिसमें डा० दिनेश्वर प्रसाद (भूतपूर्व प्राचार्य रा० आयुर्वेद कालेज पटना, पूर्व प्राचार्य रा० आयुर्वेद कालेज, दरभंगा) को नीमा बिहार का अध्यक्ष, डा० आलोक कुमार को नीमा बिहार का राज्य महासचिव तथा डा० अनिल विश्वकर्मा (बेगूसराय) को नीमा बिहार कोषाध्यक्ष सर्वसम्मति चुना गया। इस बैठक में प्रदेश के विभिन्न शाखाओं के अध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष और राज्य प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस बैठक में पटना, बेगूसराय, मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, मोतिहारी, खगड़िया, बखरी, समस्तीपुर, दलसिंहसराय, गया, औरंगाबाद, कैमूर, डेहरी ऑन सोन आदि के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया।

मराँची थाने की पुलिस ने शराब के साथ दो लोगों को किया गिरफ्तार

मोकामा। मराँची थाने के पुलिस ने 15 लीटर देसी शराब के साथ दो लोगों को गिरफ्तार किया है। मराँची के थानाध्यक्ष ने जानकारी देते हुए बताया कि समकालीन अभियान के तहत कसहा दियारा में छापामारी अभियान चलाया गया। छापामारी के दौरान सिमरिया बिंद टोली के रहने वाले नागों महतो के पुत्र पंकज कुमार और सुबोध कुमार को गिरफ्तार किया गया। जिसके पास से 15 लीटर देसी शराब बरामद किया गया है।

प्रगति यात्रा के दौरान रीगा चीनी मिल का फिर चालू होना ऐतिहासिक उपलब्धि : सम्राट

2025 में चालू होगा सीतामढ़ी मेडिकल कॉलेज

- 29 करोड़ की लागत से होटल जानकी बिहार परिसर में बनेगा नया बजट होटल

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने कहा कि प्रगति यात्रा के दौरान रीगा चीनी मिल का पुनः संचालन शुरू होना एक ऐतिहासिक उपलब्धि है, जिससे मिल के 400 कर्मचारियों को प्रत्यक्ष रोजगार एवं लगभग 2,000 हजार व्यक्तियों को अप्रत्यक्ष रोजगार मिलेगा। उन्होंने कहा कि एक पेराई सत्र तक चीनी मिल सफलता पूर्वक चल गई, तो सरकार गन्ना किसानों का बकाया 51.30 करोड़ रुपया दिया जाएगा। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के साथ ह्लप्रगति-यात्राह्व के क्रम में शिवहर-सीतामढ़ी का संयुक्त भ्रमण करने के दौरान श्री चौधरी ने कहा कि सीतामढ़ी, शिवहर, मुजफ्फरपुर, पूर्वी चम्पारण एवं मधुबनी जिले के लगभग 50 हजार गन्ना उत्पादकों को चीनी मिल के पुनः संचालन से लाभ प्राप्त होगा एवं उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

श्री चौधरी ने कहा कि 2025 में सीतामढ़ी मेडिकल कॉलेज चालू हो जायेगा जिससे सीमांचल के लाखों लोगों को उच्च स्तरीय चिकित्सा सुविधाएं मिलने लगेंगी।

उन्होंने बताया कि पर्यटन विभाग सीतामढ़ी में होटल जानकी बिहार परिसर में 29,87,10,000 की लागत से बजट होटल की निर्माण करायेगा। यह होटल 24 माह में बन जाएगा। उन्होंने कहा कि नये बजट होटल में 54 कमरे, 04 सुईट रूम, स्वीमिंग पूल, सेन्टरलाईज एयरकंडिशनिंग और विस्तृत कार पार्किंग की व्यवस्था होगी। श्री चौधरी ने बताया कि व्यवहार न्यायालय, सीतामढ़ी में न्यायिक पदाधिकारियों हेतु 28,61,65,000 की लागत से दो ब्लॉक 20-जजेज क्वार्टर जी+5 अर्थात कुल 40 इकाई जजेज क्वार्टर का निर्माण होगा।

वीर बाल दिवस पर जो बोले सो निहाल, सत श्री अकाल के लगे जयकारे

वीर बालकों का बलिदान राष्ट्र एव समाज के लिए प्रेरणादायक : दिलीप

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

भाजपा बिहार प्रदेश द्वारा आयोजित साहिबजादे बाबा जोरावर सिंह और साहिबजादे बाबा फतेह सिंह के शहादत दिवस के अवसर पर पटना साहिब विधानसभा बारे की गली स्थित श्री गुरु तेग बहादुर एकेडमी हॉल में ह्ववीर बाल दिवसह्व धूमधाम से मनाया गया। इस मौके पर दसवें गुरु गोविंद सिंह के शहीद साहिबजादों को याद कर नमन किया गया और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस मौके पर भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सह राजस्व एवं भूमि सुधार मंत्री डॉ. दिलीप जायसवाल ने कहा कि हिन्दू धर्म और सच्चाई को स्थापित करने के लिए पंच प्यारे स्थापित किया गया। वीर बालकों की कहानी हमारे लिए प्रेरणादायक है, इनपर हम गर्व करते है और इन्हे नमन कर श्रद्धांजलि देते है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 2022 मे इनके शहादत पर वीर बाल दिवस मनाने का निर्णय लिया था। आज तीसरी बार यह दिवस मनाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि हिन्दू धर्म को बचाने के लिए और समाज मे सच्चाई को स्थापित करने के लिए पंच प्यारे बनाया गया। उन्होंने कहा कि उन भाइयों ने कितनी बहादुरी के साथ अपने धर्म और देश के लिए शहादत देने का काम किया, वह आज हमलोगों के लिए वह प्रेरणा देता है। आज हमें उन पर गर्व है और आज हम उन्हें नमन करते हैं। उप मुख्यमंत्री विजय सिन्हा ने कहा कि हमारी नसों मे गौरव का खून दौड़ रहा है। कई देशो की दशा एवं दिशा बदल गई लेकिन भारत नही बदला। मां भारती के सम्मान मे प्राणो की आहुति देने वाले को नमन है। माता गुजरी ,गुरु गोविंद सिंह ,जोरावर सिंह, फतेह सिंह को याद करने का दिन है। उन्होंने कहा कि हमे यह नहीं भूलना चाहिए कि हम इसी बलिदानियों की हम संतान हैं। भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री एवं मंगलदोई सांसद दिलीप सैकिया ने कहा कि 10 वें गुरु गोविंद सिंह जन्म यहीं पटना में हुआ। इनके साहिबजादों ने धर्म, संस्कृति और विरासत के लिए अपने प्राणो को न्यौछावर किया ऐसे बहुत कम लोग मिलेंगे। जिस प्रकार से मुगलो के अक्रांताओ ने 9 साल के जोरावर सिंह और 7 साल के फतेह सिंह कि क्रूरता से प्राण लिया यह अकल्पनीय है। विधानसभा अध्यक्ष व पटनासाहिब के विधायक नंदकिशोर यादव ने कहा जब -जब देश पर संकट आया तो युवाओं ने प्राणों की आहुति देकर इसकी रक्षा की है। आजादी के वर्षो बाद भी विदेशी चिन्ह,विदेशी संस्कार देखने को मिलता रहा।नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल मे शहीदों को सम्मान और विदेशी चिन्हो और अक्रांताओं को समाप्त किया जा रहा है। कार्यक्रम के दौरान वीर बाल दिवस के मौके पर निबंध,गायन,कविता सहित विभिन्न प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया और उसके बाद विजयी प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र और प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। साथ ही माता गुजरी ,गुरु गोविंद सिंह ,जोरावर सिंह, फतेह सिंह के जीवनी और मुगलों के द्वारा अत्याचार पर प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। इस दौरान तख्त हरमिंदर साहिब कमेटी के अध्यक्ष जगजोत सिंह सोही, दीघा विधायक संजीव चौरसिया,मेयर सीता साहू, शिवनारायण महतो, महानगर अध्यक्ष अभिषेक चंद्रवंशी, भाजपा प्रदेश मीडिया सह प्रभारी प्रभात मालाकार, सरदार गुरविंदर सिंह सहित सैकड़ों लोग मौजूद रहें।

कार्यक्रम का संचालन विधानपार्षद प्रमोद चंद्रवंशी, कार्यक्रम संयोजन एवं धन्यवाद ज्ञापन प्रभाकर मिश्रा एवं अमित कनौजिया ने किया।

बिजली विपत्रों के भुगतान के लिए सिंगल विंडो समाधान: संग्रहण पोर्टल की शुरूआत

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार में औद्योगिक, सरकारी बिजली उपभोक्ताओं के लिए संग्रहण पोर्टल की शुरूआत की गई। यह पोर्टल खास तौर पर सरकारी विभागों, केंद्रीय, राज्य पीएसयू, निजी संगठनों और बड़े उपभोक्ताओं को उनके कई बिजली कनेक्शनों के बिल प्रबंधन और भुगतान प्रक्रिया को आसान बनाने के लिए डिजाइन किया गया है। संग्रहण पोर्टल एक एकीकृत मंच प्रदान करता है, जहां उपभोक्ता अपने सभी कनेक्शनों का चयन कर भुगतान कर सकते हैं। पोर्टल में लॉग इन आईडी एवं पासवर्ड बनाना, बिजली कनेक्शनों की टैगिंग, अनटैगिंग और मास टैगिंग जैसी सुविधाएं दी गई हैं। उपभोक्ता टैग किए गए सभी कनेक्शनों और उनके बकाया राशि को एक ही जगह देख सकते हैं, और कई बिलों को समेकित कर एक ही बार में भुगतान कर सकते हैं। इसमें विभिन्न डिजिटल भुगतान एवं आरटीजीएस या एनईएफटी की सुविधा दी गई है, जिससे उपभोक्ता सुगमता से अपनी बिजली बिल का भुगतान कर सकते हैं। संग्रहण पोर्टल उपभोक्ताओं के लिए समय और प्रयास की बचत करता है, समेकित बिल भुगतान की सुविधा प्रदान करता है और विभिन्न भुगतानों को स्वतः अपडेट करता है। डिस्कॉम के लिए यह पोर्टल मैनुअल रसीदों की आवश्यकता को समाप्त करता है, आसान सुलह प्रक्रिया सुनिश्चित करता है और सरकारी विभागों एवं बड़े उपभोक्ताओं से भुगतान संग्रह को स्वचालित करता है। फिलहाल यह पोर्टल केंद्रीय/राज्य पीएसयू, निजी संगठन और बड़े उपभोक्ताओं के लिए उपलब्ध है। बिहार सरकार के विभागों को इस पोर्टल का उपयोग वित्तीय वर्ष के अंत तक उपलब्ध कराया जाएगा। ऊर्जा सचिव एवं सीएमडी बीएसपीएचसीएल पंकज कुमार पाल ने कहा कि संग्रहण पोर्टल हमारे उपभोक्ताओं और डिस्कॉम के बीच एक डिजिटल सेतु का काम करेगा। यह न केवल बड़े उपभोक्ताओं के लिए बिल भुगतान को सरल बनाएगा, बल्कि पारदर्शिता और दक्षता को भी बढ़ावा देगा।

बिहार सरकार निरंकुश हो चुकी है : पप्पू

पटना। बिहार में पूर्णिया के सांसद पप्पू यादव ने आरोप लगाया है कि प्रदेश की सरकार निरंकुश हो गयी है। श्री यादव बुधवार की देर रात गर्दनीबाग धरना स्थल पहुंचे और उन्होंने बिहार लोक सेवा आयोग परीक्षार्थियों से बातचीत की। उन्होंने धरना स्थल पर लाठीचार्ज से घायल छात्रों से बातचीत कर घटना की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि बिहार सरकार निरंकुश हो चुकी हैं। छात्रों पर लाठीचार्ज की घटना निंदनीय हैं। निहत्थे छात्रों पर लाठी चलाने की घटना की जितनी भी निंदा की जाए वह कम होगा। सांसद ने कहा कि सरकार चाहे जितना भी जुल्म छात्रों पर कर ले उसे बीपीएससी की फिर से परीक्षा लेनी होगी। मैं छात्रों के साथ हर कदम पर खड़ा हूँ। छात्रों की लड़ाई मैं सड़क से लेकर सदन तक लडूँगा। उन्होंने छात्रों से आह्वान करते हुए कहा की आप अपनी आंदोलन की ताकत को बढ़ाइए। हमारा पूरा सपोर्ट इस आंदोलन को रहेगा।

भाजपाइयों को जय सियाराम, जय सीताराम के नाम एवं नारे से शुरू ही नफरत : लालू

पटना। रजत सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव ने भाजपा ने कहा है कि संघियों और भाजपाइयों को से शुरू ही नफरत है क्योंकि उसमें माता सीता विरोधी है तथा जय श्री राम के नारे के साथ हैं। गायिका देवी ने कल कार्यक्रम में बापू के उसने सीताराम बोल दिया तो भाजपाइयों ने माइक सीताराम की बजाय जय श्रीराम के नारे लगवाए। ये संघी और संघ पर जमकर हमला बोला है। श्री यादव जय सियाराम, जय सीताराम के नाम एवं नारे का जयकारा है। ये लोग शुरू से ही महिला आधी आबादी महिलाओं का भी अपमान करते नाम पर निर्मित सभागार में बापू का भजन गाकर पर उससे माफी मंगवाई तथा माता सीता के जय सीता माता सहित महिलाओं का अपमान क्यों करते है?

गंगा किनारे शुरू हुआ पटना नगर निगम का सांझा उत्सव

मरीन ड्राइव पर गीत संगीत एवं लजीज खाने से सजी उत्सव की सांझ

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पटना नगर निगम द्वारा नव वर्ष के दौरान आमजनों को एक पिकनिक स्पॉट के रूप में 93 नंबर घाट को सजाया गया है। पटना नगर निगम द्वारा पहली बार सांझा उत्सव मेले का आयोजन किया जा रहा है। गंगा किनारे गुलाबी ठंड के बीच उत्साह की लहर एवं गीत संगीत के साथ लजीज व्यंजनों के साथ पटना की शाम सुहानी होने जा रही है। पटना नगर निगम द्वारा सांझा उत्सव 26 से 31 दिसंबर तक दीघा जेपी सेतु घाट पर आयोजित किया जा रहा है। इस मेले में शहरवासी बिहार के समृद्ध विरासत और विविधता का अनुभव होगा।

नगर विकास एवं आवास विभाग के मंत्री नितिन नवीन, विधायक संजीव चौरसिया, विधायक अरुण सिन्हा द्वारा मेले का उद्घाटन किया गया।इस दौरान उप महापौर रेशमी कुमारी, नगर आयुक्त एवं गणमान्य अतिथी उपस्थित रहे।

मंत्री द्वारा कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा गया कि इस तरह के मेले से उद्यमियों का उत्साह वर्धन होगा। इन स्टॉल के माध्यम से कारीगरी को प्लेटफार्म भी मिलेगा। इसके साथ ही यह स्थल जो पिकनिक हब बना हुआ है। इसका भी रिवर फ्रंट डेवलप होगा। इसके लिए डीपीआर तैयार किया जा रहा है जल्द ही भविष्य में इसका लाभ मिलेगा।

नगर आयुक्त द्वारा स्टॉल लगाने वाले उद्यमियों का उत्साह वर्धन किया गया। उनके द्वारा बताया गया कि पटना नगर निगम द्वारा शहरी महिलाओं के लिए रोजगार के अवसर प्रदान करने हेतु यह प्रयास किया जा रहा है।इससे आम जन भी लाभांवित एवं जागरूक हुए है। स्वच्छता एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए ये नगर निगम की ये पहल है। अतिथियों द्वारा स्टॉल का भ्रमण कर महिला उद्यमियों एवं कारीगरों से बात भी किया गया।

इसके साथ ही पटना नगर निगम के कर्मियों एवं मेले में आए आगंतुकों के लिए बोन फायर का भी इंतजाम किया गया। मेले में गीत संगीत, नृत्य, कला, और स्वादिष्ट व्यंजन के साथ पटना वासी गंगा किनारे पिकनिक का एक नया अनुभव प्राप्त करेंगे। गौरतलब है कि मेले में स्वयं सहायता समूह की महिलाओं द्वारा हस्तनिर्मित उत्पादों और स्थानीय कारीगरों के कला की प्रदर्शनी लगाई गई है। इसके साथ ही कला के क्षेत्र से जुड़े पटना के कलाकारों को भी एक सांस्कृतिक मंच निःशुल्क प्रदान किया जा रहा है।

लगाए गए 70 से अधिक स्टॉल :

सांझा उत्सव मेले में महिलाओं द्वारा निर्मित हस्तकला की वस्तुएं एवं स्वरोजगार से जुड़ी हुई महिलाओं के विभिन्न प्रकार 70 स्टॉल है। इसके साथ ही फूड कोर्ट, एक्टिविटी जोन, सेल्फी जोन एवं सांस्कृतिक मंच भी उपलब्ध कराया जा रहा।

कलाकारों के लिए ओपन स्टेज की व्यवस्था :

पटना नगर निगम द्वारा सांझा उत्सव के तहत पटना के स्थानीय कलाकारों को अपनी प्रस्तुति देने गीत संगीत, नृत्य हास्य एवं विभिन्न प्रकार की कलाओं का प्रदर्शन करने के लिए ओपन स्टेज दिया जा रहा है। जहां वह स्लॉट बुक कर इन पांच दिनों में अपनी कला का प्रदर्शन भी कर सकते हैं यह व्यवस्था पूरी तरह निःशुल्क है इसके लिए किसी तरह की कोई राशि नहीं दी जाएगी ना ही उनसे ली जाएगी।

मेले को सफल बनाने के लिए आम जनों को कोई असुविधा न हो इसके लिए पार्किंग, शौचालय एवं निगम नीर इत्यादि की भी व्यवस्था मेला परिसर के पास है। विधि व्यवस्था के नियंत्रण के लिए पटना नगर निगम का कंट्रोल रूम, हेल्प डेस्क, मेडिकल कैंप का भी मौजूद है।

बिहार के लिए वरदान हैं नीतीश कुमार: शीला मंडल

वंचितों और शोषितों का किया है उत्थान

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

परिवहन मंत्री शीला मंडल ने कहा कि भविष्य में जब भी बिहार की बात होगी तो मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा किया जाएगा। श्री नीतीश कुमार बिहार के लिए वरदान हैं, विगत 19 वर्षों के कार्यकाल में उन्होंने वंचितों और शोषितों का उत्थान किया है। शिक्षा और स्वास्थ्य व्यवस्था पहले से काफी सुदृढ़ हुई है, प्रदेशभर में सड़कों का जाल भी बिछ रहा है। मंत्री ने उक्त बातें गुरुवार को जनता दलयू प्रदेश कार्यालय में आयोजित सुनवाई कार्यक्रम के दौरान पत्रकारों से बातचीत करते हुए कही। इससे पहले मंत्री ने प्रदेश के विभिन्न जिलों से पहुंचे आमजनों की समस्याओं से रूबरू हुई एवं उनके त्वरित समाधान हेतु उन्होंने संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिया। उक्त मौके पर पार्टी के प्रदेश महासचिव अरुण कुमार सिंह मौजूद रहे।

बापू के साथ बिहार की बेटी का हुआ अपमान : अखिलेश

पटना। राजधानी पटना में आयोजित भारत रत्न महामना पंडित मदन मोहन मालवीय और पूर्व प्रधानमंत्री स्व अटल बिहारी वाजपेयी के जन्म जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में गायिका के द्वारा महात्मा गांधी के पसंदीदा भजन रघुपति राघव राजाराम...ईश्वर अल्लाह तेरो नाम पर मचे बवाल को भाजपा के द्वारा फैलाएं गए सांप्रदायिकता के जहर के विकराल रूप का उदाहरण करार देते हुए प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह ने कहा कि आज देश सहित प्रदेश में अराजक तत्वों का आगमन हो चुका है जिनमें भाईचारे और सामाजिक समरसता की रत्ती भर भी समझ नहीं है। ऐसे अराजक तत्वों का देश में हावी होने हमें ये संकेत देता है कि देश को बर्बाद करने पर भाजपा और उनके कार्यकताओं में धर्म विशेष के प्रति इतनी नफरत भर दी गई है कि आने वाली पीढ़ियों को ये लोग वैमनस्यता के अंधी दौड़ में झोंककर बर्बाद कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि सदन के भीतर ये अराजक तत्व अंबेडकर और सदन के बाहर राष्ट्रपिता को अपमानित करने का काम कर रहे हैं। श्री सिंह ने कहा कि खुद सोचिए कि मनोरंजन के लिए कलाकार अपनी प्रस्तुतियां देते हैं और सामने बैठा दर्शक अपनी वैचारिक लड़ाई के साथ उसे सुनेगा तो कोई भी सुरक्षित नहीं है। ऐसे माहौल को भारतीय जनता पार्टी ने बिहार सहित पूरे देश में फैलाने का काम किया है। बापू सभागार में देश के बड़े कवि रहें पूर्व प्रधानमंत्री स्व अटल बिहारी वाजपेयी को खुद बड़े कलाकार कवि के रूप में स्थापित थे, उनके याद में आयोजित कार्यक्रम में एक कलाकार जो बिहार की बेटी है उसको मंत्रियों विधायकों के सामने भाजपा के कार्यकताओं ने अपमानित कर दिया जो न केवल बेटी का अपमान हुआ बल्कि समूचे बिरादरी का अपमान कराया गया जब उस कलाकार ने सबसे भरे मंच से माफी मांगी। ये बताने को काफी है कि इस राज्य में भी अराजक तत्वों का आगमन भाजपा के विचारों के कारण हो गया है।

जदयू कार्यकताओं के चेहरे पर चमक और आंखों में आत्मविश्वास पार्टी के लिए अच्छे संकेत : उमेश

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जदयू द्वारा जिला स्तरीय कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन गुरुवार को बाढ़ अंतर्गत एएनएस कॉलेज मैदान में किया गया। इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने कहा कि विपक्ष के नेतागण लोकसभा चुनाव से पहले हमारी पार्टी को लेकर अनाप-शनाप भविष्यवाणी कर रहे थे लेकिन लोकसभा और विधानसभा उपचुनाव के परिणाम ने फिर से यह साबित कर दिया कि बिहार में हमारे नेता और हमारी पार्टी का दूर-दूर तक कोई विकल्प नहीं है।

श्री कुशवाहा ने कहा कि बीतें 19 वर्षों के शासनकाल में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने विकास की इतनी लंबी लकीर खींची है जिसे चाहकर भी कोई मिटा नहीं सकता है। सड़क, बिजली, शिक्षा और स्वास्थ्य सहित मानवीय जरूरतों से जुड़ी बुनियादी संरचनाओं के क्षेत्र में क्रांति ही क्रांति आयी है। उन्होंने कहा कि हमारे नेता ने हर-घर तक पीने का शुद्ध पानी और बिजली पहुंचायी है। हरेक गांव में नली-गली और हरेक घर में शौचालय का निर्माण कराया है।प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने राष्ट्रपिता बापू, कपूर्री ठाकुर, डॉ राममनोहर लोहिया, डॉ अंबेदकर और लोकनायक जेपी के सिद्धांतों को अमलीजामा पहनाने का काम किया है। हमारे नेता महापुरुषों के समाजवादी विचारों को निरंतर आगे बढ़ा रहे हैं। आगे उन्होंने कहा कि पार्टी कार्यकताओं के चेहरे पर चमक और आंखों में आत्मविश्वास का भाव जदयू परिवार के लिए शुभ संकेत है। श्री कुशवाहा ने कहा कि हम सभी ऐसे नेता के नेतृत्व में काम कर रहे हैं, जिनके दामन पर भ्रष्टाचार और परिवारवाद का एक भी दाग नहीं है। श्री नीतीश कुमार प्रदेश की 14 करोड़ जनता को अपना परिवार मानते हैं और सबकी उन्नति एवं तरक्की के लिए दिन-रात काम करते हैं। साथ ही प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि वर्ष 2025 में 225 सीटों पर जीत हासिल करने के लिए पार्टी कार्यकताओं को पूरी मुस्तादी और ईमानदारी से जुट जाना है।

मुख्यमंत्री के नेतृत्व में गुणवता पूर्ण हो रहा पथ व पुल निर्माण : विजय

- 122 करोड 83 लाख रुपये के लागत से राज्य में छह पीपा पुल के निर्माण को मिली स्वीकृति

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

राज्य में समस्तीपुर, मधेपुरा, बक्सर, भोजपुर, पटना एवं वैशाली जिले में कुल छह पीपा पुल के अधिष्ठापन, मरम्मति एवं रख-रखाव के लिए उप मुख्यमंत्री सह पथ निर्माण मंत्री के स्तर से प्रशासनिक स्वीकृति प्रदान की गई है। उप मुख्यमंत्री सह-पथ निर्माण मंत्री ने बताया कि राज्य के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में सुगम यातायात हेतु पीपा पुल एक बड़ा माध्यम रहता है। नदियों में जल स्तर बढ़ने के समय इन पुलों को खोला जाता है और जल स्तर कम होने के बाद इन्हें पुनः अधिष्ठापित किया जाता है। उप मुख्यमंत्री सह पथ निर्माण मंत्री ने बताया कि अगले पांच वर्षों के लिए इन पुलों को सुरक्षित रखने और ससमय खोलने और लगाने हेतु प्रशासनिक स्वीकृति प्रदान की गई है, ताकि आमजनों को बरसात के तुरंत बाद यातायात हेतु पीपा पुल उपलब्ध हो सके। उप मुख्यमंत्री ने बताया कि पुल निर्माण निगम के प्रबंधन निदेशक को स्पष्ट निदेश दिया गया है कि इन पुलों का त्वरित गति से गुणवत्ता पूर्ण निर्माण कराना सुनिश्चित किया जाय। निर्माण अवधि में सत्त अनुश्रवण का भी निदेश दिया गया है। उप मुख्यमंत्री-सह-पथ निर्माण मंत्री ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में 2005 से लगातार पथ/पुल निर्माण के क्षेत्र में कई कार्य हुए है। राज्य के किसी भी जिले से पटना अब 5 घंटे में आना संभव हो गया है। उप मुख्यमंत्री-सह-पथ निर्माण मंत्री ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में नव निर्माण और विकसित बिहार की परिकल्पना साकार हो रही है। विभाग गुणवत्ता पूर्ण निर्माण हेतु प्रतिबद्ध है।

टेंडर हट्र्स इंटरनेशनल द्वारा वीर बाल दिवस का आयोजन

पटना। टेंडर हट्र्स इंटरनेशनल स्कूल में वीर बाल दिवस के अवसर पर सिख्स के दसवें गुरू गुरू गोबिंद सिंह जी के वीर सुपुत्रो को श्रद्धांजलि दी गई। वीर बाल दिवस के उपलक्ष्य मे विद्यालय के द्वारा विशेष कार्यक्रम जैसे कविता वाचन, गुरबाणी प्रतियोगिता आदि आयोजित की गई, जिसमे बच्चो ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। अनेक बच्चे जैसे प्रत्यांश कृष्ण , विक्रम राजवर्धन , भुवनेश्वर, नितिन बाजोरिया एवं शिवेंद्र ने गुरु गोबिंद सिंह के साहिबजादों के रुप धारण कर इस कार्यक्रम को जीवंत बनाया और उनकी वीरता को याद करते हुऐ उनके सम्मान में गीत और भजन गाए। इस अवसर पर मुख्य अथिति सरदार भाई पवित्र सिंह ने अपने विचार धाराओं से बच्चों को प्रेरित कर कहा जिस प्रकार साहिबजादा जोरावर सिंह (मात्र सात साल के) और साहिबजादा फतेह सिंह (नौ साल के) ने अपनी वीरता दिखाते हुए अपने धर्म के सम्मान के लिए जान दे दी उसी प्रकार आज के युवाओं को भी उनके मार्ग पर चलना चाहिए। हमारे मुख्य अतिथि के प्रेरणादायक सीख के बाद विद्यालय के निर्देशक राजीव भार्गव ने छात्र एवं छात्राओं को साहिबजादों के बलिदान और वीरता के बारे में बताते हुए उन्हें एक अच्छा नागरिक और देश प्रेमी बनने की प्रेरणा दी। विशिष्ट अतिथि के रुप में सरदार अमृतपाल सिंह भी इस कार्यक्रम में शामिल हुए। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य छात्रों को गुरु गोबिंद सिंह के साहिबजादों की वीरता और बलिदान की जानकारी देना और किशोरों में राष्ट्रनिर्माण के लिए योगदान तथा मूल्यों को स्थापित करना है। इस कार्यक्रम को सफल बनाने मे शिक्षिकाओ का योगदान रहा जैसे रेवा भार्गव, देवज्योति सिन्हा , उदय नारायण, निक्की ,जागृति, इशिका,श्वेतागी इत्यादि।

श्रीं108 तारतम सागर पारायण महायज्ञ एवं श्रीं मद् भागवत कथा महायज्ञ एवं श्री वाणी कथा का आयोजन

पटना। श्री कृष्ण प्रणामी मंदिर सेवा धाम मेरता राजस्थान में समिति द्वारा एकता महामहोत्सव एवं महामति प्राण नाथ जी महाराज के350वष पूर्व आगमन पर श्रीं108 तारतम सागर पारायण महायज्ञ एवं श्रीं मद् भागवत कथा महायज्ञ एवं श्री वाणी कथा का आयोजन किया गया है इस अवसर पर गुरुवार को वाणी कथा करते हुए परम हंस पीठ सत्संग धाम राजापुर पटना के महंत सुरेश चंद्र शास्त्री महाराज ने कहा महामति प्राण नाथ जी कहा सारे दुनिया को सुख शीतल करूं संसार सारे विश्व शांति हेतु उन्होंने कहा परमात्मा प्राप्ति करने लिए तो सेवा पूजा करना चाहिए शास्त्री महाराज ने कहा कि हर प्राणी को अपने बच्चों को योग करना चाहिए हर घर सेवा पूजा करना चाहिए साथ ही सांझ काल महामति प्राण मंच पर करनाल से पधारे महंत श्री जगत राज महाराज ने कहा अपने धमपर चलना चाहिए जैसे जल अपने धर्म नहीं छोड़ता है इस अवसर पर भागवत कथा सुनते हुए श्री हेमन्त भंडारी महाराज कहा कि भागवत कथा सुनें से मुक्ति मिलती है इस अवसर पर गुजरात सेभजन गायक श्री हर्षत भाई पटेल महामति प्राण नाथ वाणी गाकर सभी सुंदर साथ को आनंद प्रदान किए इस अवसर जेतना उदयपुर से महंत श्री प्रकाश नन्द महाराज एवं महंत प्रभु दयाल जी महाराज एवं संयोजक अनरूध जी भंडारा ने मंच संचालन कर के सभी सुंदर साथ को आनंद प्रदान करते हैं 108सुन्दर साथ श्रीं तारतम सागर पाठ करते हैं और गुजरात से पधारे सुंदर साथ गर्वा रास करते हैं संयोजक अनरूध भंडारा आयोजित किया है

भाकपा शताब्दी वर्ष की शानदार शुरूआत हुई

पटना। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का शताब्दी वर्ष की शुरूआत गुरुवार को पूरे राज्य में धूम-धाम के साथ हुई। पार्टी के राज्य मुख्यालय अजय भवन से लेकर सभी जिला,अंचल और शाखा कार्यालयों पर झंडोतोलन किया गया। पार्टी सदस्यों ने अपने अपने घरों पर झंडा फहराया। भाकपा के राज्य मुख्यालय अजय भवन और जनशक्ति भवन पटना में राज्य सचिव रामनरेश पाण्डेय ने झंडोतोलन किया। इस मौके पर फासीवाद के रास्ते पर चलने वाली एनडीए सरकार को सत्ता से हटाने और पार्टी को मजबूत बनाने का संकल्प लिया गया। जनशक्ति भवन पटना में झंडोतोलन के बाद भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के जननेता एवं पूर्व मंत्री चंद्रशेखर सिंह की जयन्ती के अवसर पर उनकी तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित की गयी। इस मौके पर भाकपा के राज्य सचिव रामनरेश पाण्डेय ने कहा कि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का स्थापना 26 दिसम्बर 1925 को कानपुर में हुई थी। भाकपा का इतिहास संघर्ष और बलिदानों का रहा है। देश की आजादी में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने अहम भूमिका निभाई है। भाकपा राज्य सचिव ने कहा कि केंद्र की सत्ता में बैठी भाजपा सरकार संविधान और लोकतंत्र को समाप्त करने पर तुली हुई है। संवैधानिक संस्थाओं को बर्बाद किया जा रहा है। इस सरकार में दलितों, आदिवासियों, अल्पसंख्यकों पर अत्याचार बढ़े हैं। महंगाई आसमान छू रही है। ऐसी स्थिति में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की भूमिका और बढ़ गई है। झंडोत्तोलन के अवसर पर अनेक पार्टी नेता कार्यकर्त्ता मौजूद थे, जिसमें मुख्य रूप से पार्टी के राज्य सचिवमंडल सदस्य का विजय नारायण मिश्र, का निवेदिता झा, एफ्टू के महासचिव प्रो अरूण कुमार, पटना उच्च न्यायालय के वरीय अधिवक्ता योगेश चन्द्र वर्मा आदि अनेक पार्टी सदस्य एवं कार्यकर्त्ता मौजूद थे।

स्मारक कार्यक्रम एवं गांधी विचार गोष्ठी का आयोजन

पटना। बिहार प्रदेश कांग्रेस कमेटी के तत्वाधान में गुरूवार को प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय सदाकत आश्रम में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में 100 वर्ष पूरा होने पर उनके सम्मान में स्मारक कार्यक्रम एवं गांधी विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस आयोजन की अध्यक्षता पार्टी के पूर्व अध्यक्ष प्रो रामजतन सिन्हा ने किया। मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए समाजसेवी अक्षय कुमार ने कहा कि महात्मा गांधी जी की कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में 100 वर्ष पूरा होनें की अवधी प्रेरणादायक है। परंतु इसके विचार तथा व्यवहार के तत्वों को आज की स्थिति के आलोक में प्रस्तुत नहीं किया जा रहा है। इस कारण मेहनतकश जनसाधारण की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार हेतु बदलाव की प्रेरणार्थक क्रिया का यह प्रतिनिधित्व नही कर पा रही है।आज सूचना क्रांती के भ्रमोत्पादक मूल्यों का वर्चस्ल कायम हो गया है।आज हम सबको बाजारू फंदा में फंसाये रखनें की साजिश स्थापित हो गई है। अतः शोषित, पीड़ित, उपेक्षित व पिछडे.एवं दलित समुदाय के विकास और साप्रदायिक ताकतों व ईकंकी शक्तियॉ के नियंत्रण की दिशा में सामीजिक न्याय की राजनीति को पुनर्गठित कर आगे बढ़ने की जरूरत है जिसका नेतृत्व कांग्रेस को करना पडेगा। अपनें अध्यक्षीय भाषण में प्रो रामजतन सिन्हा ने कहा कि गांधी की आज देश को अधिक आवश्यक्ता है। हमें अपनें कर्मों में, आचरण में गांधी के विचारों को लाना होगा, तभी हम इस कुशासन से लड़ पायेंगे। वक्ता के रूप में बोलते हुए डा.शशी कुमार सिंह ने कहा कि गांधी के विचार समसामयिक हैं। उनका अनुशरण ही हमारा मार्ग दर्शन कर सकता है। इस अवसर पर डा अशोक राम, निर्मल वर्मा, ब्रजेश पाण्डेय, राजेश राठौड़, उमैर खान, लाल बाबू लाल, डा राजीव रंजन, सुधा मिश्रा, आदि ने भी अपनें विचार रखे। पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष कौकब कादरी जी नें मंच का संचालन किया तथा प्रवक्ता आनन्द माधव नें विषय प्रवेश किया। कार्यक्रम में प्रदेश कांग्रेस कमिटी के नेता सौरभ सिन्हा, ज्ञान रंजन, निधि पाण्डेय, डा संजय यादव,उमैर खान, संजय पाण्डेय, सूरज यादव, राज किशोर सिंह, गोंरख नाथ, नागेन्द्र कुमार विकल, शशि रंजन, रामायण प्रसाद यादव, कुमार आशीष, सहित सैकड़ों की संख्या में कांग्रेसजन मौजूद थे।

चोर गिरोह का पुलिस ने टीम बनाकर किया उद्भेदन

प्रातः किरण संवाददाता

बेनीपुर(दरभंगा)। गुरुवार को बहेड़ा थाना पर एसडीपीओ आशुतोष कुमार ने प्रेस कॉफ्रेंस के दौरान कहा कि बहेड़ा पुलिस टीम बनाकर पूरे मामले का उद्वेदन गुप्त सूचना के आधार पर की है। उन्होंने कहा कि पिछले दो माह से चोर गिरोह का आतंक बेनीपुर क्षेत्र में काफी बढ़ गया था,जिसे रोकने में पुलिस की कड़ी मेहनत से भारी सफलता मिली है। उन्होंने बताया कि गिरफ्तार हुए सातिर सभी मधुबनी जिला के रहने वाले हैं और बेनीपुर नगर परिषद क्षेत्र के डखराम मुहल्ला में भाड़े के मकान में रहता था। उन्होंने बताया कि चोर गिरोह के मोस्ट वांटेड मंगल साह मधुबनी जिला के लहरियागंज, बिस्फी पतौना थाना के सोहास निवासी अरुण यादव के पुत्र अमित कुमार यादव, रहिका थाना के मारड गांव निवासी धनिक लाल पासवान, मधुबनी नगर थाना के किशोरलाल चौक निवासी दीपक कुमार को डखराम स्थित एक व्यक्ति के मकान में भाड़ेदार के रूप में रहने की सूचना एवं बड़ी घटना को वारदात देने की गुप्त सूचना पर गिरफ्तार किया गया है। एसडीपीओ ने बताया कि अपराधी मंगल साह हत्या एवं डकैती मामले में पूर्व में जेल जा चुका है जबकि अमित कुमार यादव वर्तमान में धारा 364(ए) भादवि के अंतर्गत मधुबनी जिला में दर्ज कांड में फरार चल रहा है। अन्य दो अपराधी धनिक लाल पासवान एवं दीपक कुमार का भी आपराधिक इतिहास होने की बात

प्रकाश में आई है, जिसके संबंध में अनुसंधान किया जा रहा है।

उन्होंने बताया कि उक्त गिरफ्तार व्यक्तियों के पास से तलाशी के दौरान एक देसी कट्टा, 15 जिंदा कारतुस, 3 बाइक,1 लाख 56 हजार 586 रुपए नगद, 9 मोबाइल,ताला तोड़ने वाला रोड हथियारनुमा एक, चांदी का 22,सिक्का चांदी का बिछिया-हनुमानी, चांदी का एक गिलास, अन्य व्यक्ति का एक पासबुक, अन्य व्यक्ति का एक आधार कार्ड, गहना का दर्जनों खाली डब्बा, एक लैपटॉप, एक पुराना कैमरा, चांदी का चार जोड़ी पायल, तीन छोटा टॉर्च, 2 हैंड पर्स, 4 घड़ी, चांदी का पांच अंगूठी, सोने का एक अंगूठी बरामद की गई है। उन्होंने बताया कि एक देशी कट्टा के साथ भारी मात्रा में जिंदा कारतूस बरामद यह साबित करता है कि यह अपराधी बंद घरों को शिकार के साथ-साथ लोगों को डराने धमकाने में भी पीछे नहीं रहता होगा। उन्होंने बताया कि इस गिरफ्तार चार अपराधी के साथ एक अन्य भी थे जो भागने में सफल रहा। उसकी भी गिरफ्तारी शीघ्र होगी। उन्होंने बताया कि मामले में त्वरित कारवाई होगी। उन्होंने बताया कि छापामारी दल में बहेड़ा थाना अध्यक्ष चंद्रकांत गौरी, दरोगा रंजीत कुमार सिंह, दिव्या कुमारी, रजनी कुमारी, रंजय कुमार सिंह के अलावा सशस्त्र पुलिस बल एवं जिला तकनीकी इकाई के सदस्य शामिल थे। उन्होंने बताया कि इस मामले में पुलिस आगे की कार्रवाई कर रही है।

कुलपति ने की नवबर्ष की तैयारियों की समीक्षा बैठक

प्रातः किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर।डॉ राजेन्द्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के कुलपति डॉ पी एस पांडेय ने नव बर्ष 1ली जनवरी को लेकर विश्वविद्यालय की तैयारियों की समीक्षा की। कुलपति डॉ पांडेय ने कहा कि एक जनवरी को विश्वविद्यालय में आस पास के लोगों की काफी भीड़ जमा होती है। इस दौरान लोगों को किसी तरह की कोई समस्या न हो इसका विशेष ध्यान रखा जाए। उन्होंने सभी अधिकारियों के साथ बैठक की और विश्वविद्यालय के प्रोडक्ट्स और अन्य जानकारियों को भी प्रदर्शित करने का निर्देश दिया। डॉ पांडेय ने कहा लोगों के लिए साफ पानी और शौचालय की अच्छी और समुचित व्यवस्था की जाये। कुलपति

ने कहा कि विश्वविद्यालय में गाड़ियों के पार्किंग की भी उचित व्यवस्था की जाये। उन्होंने कहा कि आस पास के लोग विश्वविद्यालय के परिवार के ही सदस्य की तरह हैं और उनको किसी तरह की कोई समस्या न हो इसका पूरा प्रयास किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि लोगों को कचड़ा इधर उधर न फेंकने के लिए भी जागरूक किया जाना चाहिए। उन्होंने अधिकारियों से विश्वविद्यालय में लोगों की भीड़ को देखते हुए जिला प्रशासन और रेफरल अस्पताल से भी संपर्क बनाने का भी निर्देश दिया। कुलपति ने एक जनवरी को विश्वविद्यालय के सभी विभागों के वार्षिक समीक्षा कार्यक्रम करने का भी निर्देश दिया। और कहा कि इस दिन पिछले वर्ष से सबक लेकर नये वर्ष में जी जान से किसानों के कल्याण को लेकर जुट जाने का शपथ लेना चाहिए। किसानों की अपेक्षा और देश को विकसित बनाने को लेकर सब को एकजुट होकर काम पर जुट जाना चाहिए। कार्यक्रम में निदेशक अनुसंधान डॉ ए के सिंह , कुलसचिव डा मृत्युंजय कुमार , छात्र कल्याण निदेशक डॉ रमन त्रिवेदी , डीन बेसिक साइंस डॉ अमरेश चंद्रा, डीन इंजीनियरिंग डॉक्टर राम सुरेश वर्मा , डॉ प्रणब कुमार, डॉ दिनेश रजक, डॉ कुमार राज्यवर्धन समेत विभिन्न शिक्षक वैज्ञानिक एवं पदाधिकारी उपस्थित रहे।

लोकतंत्र का चीरहरण है, छात्र आंदोलन पर बर्बर लाठीचार्ज : राकेश नायक

प्रातः किरण संवाददाता

दरभंगा।आज का दिन भारतीय लोकतंत्र के इतिहास में एक काले अध्याय के रूप में दर्ज किया जाएगा, जब बीएसएसी के छात्रों द्वारा अपने अधिकारों और न्याय के लिए शांतिपूर्ण ढंग से दिए जा रहे धरने पर भाजपा सरकार ने अंग्रेजी हुकूमत के जनरल डायर की तर्ज पर बर्बरता पूर्ण लाठीचार्ज किया।

युवा महानगर अध्यक्ष राकेश नायक ने इस निंदनीय घटना पर कड़ा विरोध दर्ज कराते हुए कहा कि यह सरकार न केवल छात्रों की जायज मांगों को अनसुना कर रही है, बल्कि उनकी आवाज को दबाने के लिए क्रूरता और तानाशाही का सहारा ले रही है। यह घटना न केवल लोकतांत्रिक मूल्यों का हनन है, बल्कि छात्रों के मौलिक अधिकारों पर भी सीधा आघात है।श्री नायक ने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि आज के युवा, जो इस देश के भविष्य हैं, अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करते हुए लहूलुहान हो रहे हैं, और सरकार संवेदनहीनता का प्रदर्शन करते हुए उनके खिलाफ बल प्रयोग कर रही है। भाजपा सरकार की यह नीति तानाशाही प्रवृत्ति का जीवंत प्रमाण है, जो छात्रों के स्वाभिमान और आत्मसम्मान को कुचलने का प्रयास कर रही है।उन्होंने कहा कि यदि सरकार ने इस लाठीचार्ज की न्यायिक जांच कर दोषियों के खिलाफ कठोर कार्रवाई नहीं की और छात्रों की मांगों को अविलंब स्वीकार नहीं किया, तो युवा राष्ट्रीय जनता दल पूरे राज्य में उग्र आंदोलन करने को बाध्य होगा।

सड़क के नवनिर्माण की मांग को लेकर समाहरणालय परिसर में धरना आयोजित

प्रातः किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। जिले के बंदरा प्रखंड की लाइफलाइन कही जानी वाली हरपुर से तेपरी भाया सैदपुर पूसा पुल को जोड़ने वाली सड़क के नव निर्माण की माँग को लेकर आज सड़क निर्माण संघर्ष समिति, बंदरा द्वारा समाहरणालय परिसर स्थित धरना स्थल पर एक दिवसीय उपवास सह धरना का आयोजन किया गया। इस दौरान सड़क नहीं तो वोट नहीं और जिला प्रशासन होश में आओ के नारे भी लगाए गए।धरना को संबोधित करते हुए, समिति के संयोजक युवा समाजसेवी धीरज कुमार ने कहा कि यह सड़क अत्यंत जर्जर स्थिति में है।आम अवाम को प्रतिदिन दुर्घटना का शिकार होना पड़ रहा है। बरसात के दिनों में इस सड़क से गुजरना जीवन मौत से लड़ने के समान हो जाता है।उन्होंने कहा कि सड़क

नवनिर्माण की लड़ाई वर्षों से चल रही है, मगर शासन- प्रशासन द्वारा इस सड़क समेत पूरे बंदरा प्रखंड को उपेक्षित किया जा रहा है। विधानसभा चुनाव से पहले अगर इस सड़क का निर्माण नहीं होता है तो सड़क नवनिर्माण को लेकर चरणबद्ध तरीके से आंदोलन किया जाएगा। इस दौरान सड़क नहीं, तो वोट नहीं की नीति पर भी हम काम करेंगे।उन्होंने कहा कि हम जिलाधिकारी से यह मांग करते हैं कि व्यापक जनहित को देखते हुए तत्काल इस सड़क को पीडब्ल्यूडी विभाग में स्थानांतरित कर चौड़ीकरण के साथ जीर्णोद्धार कराई जाए।

रघुनंदन प्रसाद उर्फ अमर बाबू ने कहा कि क्षेत्र में बूढ़ीगंडक के पिलखी पुल के उत्तरी किनारे हरपुर बांध चौक से पीरापुर, पियर, रामपुरदयाल, रतवारा, महेशपुर तेपरी होते हुए यह सड़क सैदपुर पूसा पुल को जाती है। इसकी कुल लम्बाई 10.75 किमी है। विभागीय अभिलेख में इस सड़क का नाम बरगांव -शंकरपुर पथ है। यह सड़क बंदरा प्रखंड के पंचायतों के लिए लाइफ लाइन है। शंकरपुर तक जाकर यह सड़क समस्तीपुर जिला सीमा से जुड़ती है। क्षेत्र की जनता को प्रखंड एवं जिला मुख्यालय, बैंक, अस्पताल, स्कूल -कालेज, रजिस्ट्री आफिस, ढोली रेलवे स्टेशन, राजेंद्र कृषि विश्वविद्यालय पूसा आदि जगहों तक जाने के लिए यही एक मात्र सड़क है। इस क्षेत्र की लड़कियों को पढ़ने के लिए उमा पाण्डेय कॉलेज पूसा जाने के लिए भी यही एकमात्र सड़क है। ऐसे में इस सड़क के प्रति शासन -प्रशासन की उदासीनता दुर्भाग्यपूर्ण है।धरना को डॉ श्यामकिशोर, धनंजय व्यास, सुबोध कुमार, जनार्दन प्रसाद ठाकुर, जिला पार्षद फणीश कुमार , अवनीश कुमार, संतोष कुमार इत्यादि ने भी संबोधित किया।जिलाधिकारी सहित तमाम अधिकारियों का मुख्यमंत्री के कार्यक्रम की तैयारी में व्यस्त रहने के कारण मांग पत्र स्थापना में समर्पित किया गया। जिलाधिकारी द्वारा सड़क निर्माण संघर्ष समिति की पांच सदस्यीय टीम को शनिवार को अपने कार्यालय में मिलने के लिए बुलाया गया है।

रीगा चीनी मील का चालू होना मिथिला क्षेत्र के लिए सुखद संदेश : सांसद

प्रातः किरण संवाददाता

दरभंगा देश और प्रदेश स्तर पर रोजगार सृजन के राज्य और केंद्र की एनडीए सरकार पूरी तरह से संवेदनशील है। मिथिला क्षेत्र के सीतामढ़ी शिवहर सहित विभिन्न जिलों के हजारों लोगों के लिए रोजगार का मजबूत माध्यम बनने वाला रीगा चीनी मील का चालू होना इसका ज्वलंत उदाहरण है।

दरभंगा सांसद सह लोकसभा में भाजपा सचेतक डा गोपाल जी ठाकुर ने आज गुरुवार को बंद पड़े रीगा चीनी मील के चालू किए जाने पर अपनी प्रतिक्रिया में उपरोक्त बातें कहीं हैं।सांसद डा ठाकुर ने रीगा चीनी मील के चालू किए जाने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि मिथिला क्षेत्र चीनी मील का हब हुआ करता था लेकिन लालू राबड़ी तथा कांग्रेस की सरकार की गलत नीतियों के कारण कालांतर में सभी चीनी मिले बंद हो गए तथा यहां के युवाओं को पलायन करने पर मजबूर हो गए लेकिन अब केंद्र की मोदी सरकार तथा बिहार की नितिश सरकार के संयुक्त प्रयास से अब फिर से यहां औद्योगिक निवेश का माहौल वापस होना शुरू हो चुका है।सांसद डा ठाकुर ने रीगा चीनी मील शुरू करने के पहल को मिथिला क्षेत्र के लिए सुखद संदेश बताते हुए कहा कि अब रोजगार सृजन तथा यहां से पलायन रोकने के लिए यहां बंद पर सकरी लोहट हसनपुर जैसे अन्य चीनी मिले तथा अशोक पेपर मील आदि के चालू करने के लिए भी पहल शुरू किया जा रहा है।

शहर में जलजमाव से मुक्ति को लेकर एक पखवाड़े के अंदर होगा कार्य शुरू : संजय सरावगी

■ नगर विधायक की पहल पर पटना में नगर विकास मंत्री ने की दरभंगा शहर की योजनाओं की समीक्षा

प्रातः किरण संवाददाता

दरभंगा। शहरी विकास के विभिन्न मुद्दों को लेकर मंगलवार को पटना में सत्तारूढ़ दल के सचेतक सह नगर विधायक संजय सरावगी की पहल पर नगर विकास एवं आवास विभाग की समीक्षा बैठक में शहर के विकास की रूपरेखा तैयार की गई। जलजमाव से मुक्ति, दिल्ली मोड़ बस स्टैंड के नवनिर्माण, पेयजल की अपूर्ति, मुक्तिधाम एवं अन्य योजनाओं पर गंभीरता से विचार किया गया। बैठक की अध्यक्षता नगर विकास मंत्री नीतीन नवीन ने की।विधायक श्री सरावगी ने बताया कि दरभंगा शहर के विभिन्न विकासात्मक बिंदुओं को लेकर करीब दो घंटे तक बैठक चली। जानकारी देते हुए उन्होंने कहा कि बैठक में स्ट्रार्म वाटर ड्रेनेज पर भी मंथन हुआ। एक पखवारे के अंदर 270 करोड़ की लागत से शहर को जलजमाव से मुक्ति के लिए कार्य आरंभ किया जायेगा। साथ इस योजना में दोनार से टिन्ही पुल तक बाकी भाग को भी जोड़ने का निर्णय हुआ। बैठक में विधायक ने कहा कि बरसात के दिनों शहर को नारकीय स्थिति से निकालने के लिए स्टार्म वाटर ड्रेनेज योजना ही एकमात्र उपाय है। जिसके बाद नगर विकास मंत्री नीतीन नवीन ने विभाग के अधिकारियों को 15 दिनों के अंदर कार्य आरंभ करवाने का निर्देश दिया। बता दें कि नगर विधायक के लगातार प्रयास से पिछले वर्ष 23 जुलाई को स्टार्म वाटर ड्रेनेज योजना की राशि को प्रशासनिक स्वीकृति मिली थी।

इसके अलावे नगर विधायक ने दिल्ली मोड़ बस स्टैंड की डीपीआर की अविलंब स्वीकृति के लिए मंत्री अनुरोध किया। उन्होंने बताया कि बस स्टैंड को मॉडल बनाने और इसे आधुनिक सुविधाओं से जोड़ने के लिए पिछले दिनों दिल्ली की ईडीएमएसी इंजिनियरिंग कंसल्टेंट द्वारा 92 करोड़ की राशि का डीपीआर बनाया गया था। लेकिन डीपीआर को अब तक विभाग से स्वीकृति नहीं मिली है। जिस पर नगर विकास मंत्री ने अधिकारियों को जल्द से जल्द कागजी प्रक्रिया पूरी करने का निर्देश दिया। वहीं पेयजल आपूर्ति योजना के फेज 1 एवं 2 के तहत शहर के बचे हुए घरों में शीघ्र पानी पहुंचाने का कार्य किया जायेगा।

8 करोड़ 72 लाख की लागत से शुभंकर श्मशान घाट में मुक्तिधाम का निर्माण का कार्य चल रहा है। इसे अगले तीन माह का अंदर पूरा कराने का नगर विकास मंत्री जी ने अधिकारियों को निर्देश दिया। शहर के चार प्रमुख तालाबों दिग्घी, गंगासागर एवं हराही एवं मिजार्खां तालाब के सौंदर्यीकरण का एक साल पहले लगभग 10 करोड़ की राशि स्वीकृत की गई थी, लेकिन इन अभी तक इन चारों तालाब के सौंदर्यीकरण का काम प्रारंभ नहीं हुआ है। मंत्री नीतीन नवीन ने जल्द से जल्द इन चारों तालाबों के सौंदर्यीकरण का कार्य प्रारंभ कराने का निर्देश दिया।बैठक में विभाग की संयुक्त सचिव वर्षा सिंह, बूडको के प्रबंध निदेशक योगेश सिंह, मुख्य अभियंता प्रभात कुमार, दरभंगा नगर आयुक्त राकेश कुमार गुप्ता सहित वरीय अधिकारी उपस्थित थे।

सहयोग देनें से मिलती है आत्मीय संतुष्टी : डॉ. शिवकिशोर राय

प्रातः किरण संवाददाता

दरभंगा।देवकला एजुकेशनल ट्रस्ट ने किया कंबल वितरण।प्रतिवर्ष कड़ाके के ठंड में ट्रस्ट करता है कंबल वितरण। उक्त बातें हनुमाननगर प्रखंड के मोरो पंचायत में देवकला एजुकेशनल ट्रस्ट की ओर से कंबल वितरण कार्यक्रम को संबोधित करते हुए ट्रस्ट के चेयरमैन शिक्षाविद डॉ.शिवकिशोर राय ने कहीं।आगे उन्होंने कहा कि प्रत्येक वर्ष ट्रस्ट देहात में जरूरतमंदों को खोजकर सेवा देनें के लिए प्रतिबद्ध है।इस अवसर पर श्रीकृष्ण चेतना मंच के उपाध्यक्ष रामविलास यादव ने ऐसे सामाजिक सरोकार के कार्यों के लिए देवकला एजुकेशनल ट्रस्ट के चेयरमैन डॉ. शिवकिशोर राय को साधुवाद दिया।।उक्त कंबल वितरण कार्यक्रम का आयोजन श्री कृष्ण चेतना मंच की सक्रिय सदस्य दर्बी देवी के परिसर में हुआ।मौके पर वार्ड पार्षद सज्जन यादव,शिक्षक भरत प्रसाद यादव,हरिकांत राय,श्रीकृष्ण चेतना मंच के प्रखंड सचिव वेद प्रकाश यादव,प्रखंड अध्यक्ष कवींद्र राय,घुरण राय,पंकज कुमार आदि थे।

19जनवरी को होगा तिरहुत प्रमंडल स्तर पर बदलो बिहार जन समागम

प्रातः किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर।आज देश के सामने मौजूद चुनौती फासीवादी कॉरपोरेट मोदीराज, संविधान व लोकतंत्र को बचाने के नारों के साथ कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना के शताब्दी वर्ष के अवसर पर माले जिला कार्यालय स्थित हरिसभा चौक पर संकल्प सभा का आयोजन किया गया। सभा को संबोधित करते हुए भाकपा-माले मुजफ्फरपुर के जिला सचिव कृष्णमोहन ने कहा कि आज हम भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की शताब्दी वर्ष में प्रवेश मना रहे हैं।. विडंबना यह है कि 2025 आरएसएस का भी शताब्दी वर्ष है। इस अवसर पर कम्युनिस्ट आंदोलन के गौरवशाली इतिहास और विरासत को स्मरण करने के साथ-साथ फासीवाद को पराजित करने और आधुनिक भारत को समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणराज्य के संवैधानिक लक्ष्य की ओर ले चलने के संकल्प लेना होगा।आइए यह संकल्प लेते है कि कम्युनिस्ट आंदोलन को हर तरह से मजबूत करेंगे ताकि आज की चुनौतियों का सामना किया जा सके।माले राज्य कमिटी सदस्य व खेग्रामस के राज्य सचिव शत्रुघ्न सहनी ने कहा कि कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना के शताब्दी वर्ष पर संकल्पित होने की जरूरत है कि फासीवाद का मुकाबला करने के लिए हमें सांप्रदायिकता, जातिवाद और कॉरपोरेट ताकत के खिलाफ प्रतिरोध को और भी व्यापक और धारदार बनाना होगा।इंकलाबी नौजवान सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष आफताब आलम ने कहा कि भारत में अल्पसंख्यकों, खास तौर पर मुस्लिमों को जबरदस्त असुरक्षा का सामना करना पड़ रहा है।अमन और न्याय पसंद भारतीयों से हम अपील करते हैं कि नफरत, झूठ और हिंसा की राजनीति को खारिज करें और भारत में शांति व सद्भाव के पक्ष में मजबूती से खड़े हों।

माले नगर सचिव सूरज कुमार सिंह ने कहा कि भारतीय कम्युनिस्ट आंदोलन को धारदार बनाने के संकल्प के साथ 9मार्च को पटना में आयोजित बदलो बिहार महाजुटान को ऐतिहासिक बनाने के लिए 19जनवरी को मुजफ्फरपुर में तिरहुत प्रमंडल के चार जिलों मुजफ्फरपुर, वैशाली, सीतामढी. और शिवहर जिला का

बौआ यादव समाजसेवी थे,उनकी कमी हमेशा खलती रहेगी : पप्पू सिंह

प्रातः किरण संवाददाता

अलीनगर(दरभंगा)।अलीनगर विधानसभा अंतर्गत बथई गांव में लोजपा रामविलास पार्टी के नेता और तारडीह प्रखंड के अध्यक्ष उगन यादव के पिता दिनेश्वर यादव उर्फ बौआ यादव का बीते दिनों निधन हो गया। इस मौके पर आज भाजपा जिला किसान मोर्चा के अध्यक्ष सह समाजसेवी संजय कुमार सिंह उर्फ पप्पू सिंह ने उगन यादव से मुलाकात कर उन्हें सांत्वना देते हुए मृतक को श्रद्धा सुमन अर्पित किया।

पप्पू सिंह ने कहा कि बौआ यादव एक सामाजिक लोग थे जो सदैव समाज के लिए हमेशा तत्पर रहते थे। उनका जाना ना सिर्फ परिवार के लोगों के लिए बल्कि इस गांव के लोगों के लिए भी एक बड़ा क्षति है। समाज को उनकी कमी हमेशा खलती रहेगी।

उगन यादव ने बताया कि पापा कुछ दिनों से बीमार थे और इसी बीच रात में सोए,सोए रह गए. हिंदू रीति रिवाज से उनका दाह संस्कार किया गया और अब द्वादश कर्म किया जाएगा। परिवार के लोगों का रो-रो कर बुरा हाल है।मालूम हो की उगन यादव अलीनगर विधानसभा में एक युवा नेता के रूप में जाने जाते हैं और समाज के लिए हमेशा आगे बढ़ चढ़कर काम करते हैं।श्रद्धांजलि देने वालों में जेडीयू जिला उपाध्यक्ष अखिलेश सिंह, जेडीयू जिला महासचिव अनिल चौधरी आदि थे।

वन विभाग की टीम ने जंगली बिल्ली को पकड़ा, कई लोगों को कर चुका था जख्मी

प्रातः किरण संवाददाता

समस्तीपुर। जिले में शिवाजीनगर थाना क्षेत्र के कपूरी चौक के पीछे गुरुवार को झाड़ी में जंगली बिल्ली मिलने से इलाके में सनसनी फैल गई। हालांकि, कई घंटे के प्रयास के बाद लोगों ने उसे पकड़ लिया। जानवर को पकड़ने के दौरान कई लोग गिरकर चोटिल भी हो गए। बाद में इलाके के लोगों द्वारा वन विभाग को जानकारी दी गई। इसके बाद पहुंची वन विभाग की टीम ने उसे रेस्क्यू कर अपने साथ ले गई। बताया गया है कि कपूरी चौक के पीछे झाड़ी में लोगों ने अजीब तरह की हलचल देखी। जब लोग झाड़ी की ओर गए तो लोगों ने उक्त जानवर को देखा। इस दौरान उक्त जंगली बिल्ली द्वारा अजीब तरह की आवाज निकाले जाने के कारण लोगों में दहशत व्याप्त हो गया और बड़ी संख्या में मौके पर लोगों की भीड़ जुट गई। बाद में जब लोगों ने इसे पकड़ने का प्रयास शुरू किया तो यह इधर-उधर भागते हुए एक घर में भी घुस गया जहां लोगों ने इसे बंद कर दिया।

श्रम विभाग आयोजित करेगा नियोजन और मार्गदर्शन कैंप 30 को

प्रातः किरण संवाददाता

मधुबनी। श्रम संसाधन विभाग बिहार सरकार के निदेर्शा नुरूप जिला नियोजनालय मधुबनी के द्वारा जिला परिषद कार्यालय परिसर में दिनांक 30 दिसंबर 2024 को पूर्वाह्न 11:00 बजे से विशेष नियोजन सह मार्गदर्शन कैंप का आयोजन किया जाएगा। जिसमें यूथ4 जॉब्स फाउंडेशन लिमिटेड के द्वारा 18-30 वर्ष के दिव्यागजनो के बीच साक्षरता का आयोजन किया जाएगा तथा चयनित दिव्यांगो को उनके बोलने सुनने ओर चलने की क्षमता के अनुसार रोजगार उपलब्ध कराया जाएगा एवं वेतन निर्धारित किया जाएगा।जिला नियोजन पदाधिकारी मृणाल कुमार चौधरी ने उक्त जानकारी देते हुए बताया कि इस नियोजन कैंप में शामिल होने के लिए दिव्यांगजनो को ठूर ढङ्ग१३' (६६६.ल्लू२.ॅङ्ग५.ल्ल) पर निबंधन कराया जाएगा तथा विभागीय योजनाओं (टूल किट एवं स्टडी किट) के बारे में जानकारी के साथ साथ निजी क्षेत्र के नियोजको के द्वारा रोजगार भी उपलब्ध कराया जाएगा।

कवारीगोदाम मे लगी भीषण आग दो घंटो तक धू धू कर जलता रहा कबाड़

प्रातः किरण संवाददाता

मधुबनी। मधुबनी जिला मुख्यालय से सटे रहिका प्रखंड कार्यालय से एक किलोमीटर दुरी रहिका मधुबनी मुख्य मार्ग बीएम कालेज से पीछे दिंनाक 25दिसम्बर को समय 3.30 बजे दिन मे कवार की दुकान मे लगी भीषण आग से लाखो की सामान जल कर राख हो गया।आग की रौद्र रूप इस कदर था कि आसमान मे जैसे बादल छा गया हो स्थानीय लोगों ने मौके पर पहुंच कर इस बात की सूचना स्थानीय पुलिस प्रशासन और अग्निशमन की टीम को दिया। सूचना मिलने के बाद रहिका थाना पुलिस अग्निशमन विभाग की टीम एवं अंचलअधिकारी रहिका मौके पर पहुंचे लेकिन आग इस कदर अपना विकाल रूप धारण कर लिए की लगभग दो से ढाई घंटो तक पुलिस प्रशासन की अथक मेहनत और छ :अग्निशमन की गाड़ी से आग

पर काबू पाया। कवारी की दूकान के अगल बगल मे ई रिक्शा एजेंसी गैस गोदाम व कुछ दुरी पर आवास होने के कारण लोगो मे डर बना था कि कही आग अपने चपेट मे एजेसी गोदाम घरो को ना ले ले। लेकिन गनीमत की बात रही की कवार की दूकान मे बेकाबू आग पर कड़ी मस्कत के बाद काबू पा लिया गया।रहिका सीओ अभय कुमार ने बताया कि सूचना मिला कि कवारी कि गोदाम मे आग लगी है फिलहाल आग पर काबू पा लिया गया है किसी प्रकार कि कोई आवेदन किसी के द्वारा प्राप्त नहीं हुआ आवेदन प्राप्त होने पर आगे कि कारवाई कि जाएगी.फिलहाल गोदाम मे लगी आग एवं अन्य बिंदु पर जांच किया जा रहा है।मौके पर मौजूद रहिका थानाध्यक्ष रविन्द्र कुमार,अंचलाधिकारी अभय कुमार एवं अपर थानाध्यक्ष संदीप कुमार सिंह अपने दल बल के साथ डायल 112की टीम,रहिका अग्निसमन टीम मो0अरमान एवं जिला मुख्यालय मधुबनी बेनीपट्टी,कलुआही जयनगर से आये दमकल गाड़ी ने कड़ी मेहनत से आग पर काबू पाया।हलाकि इस घटना मे किसी जानमाल की नुकसान नही हुई है।गोदाम मे काम कर रहे कर्मी सूरज कुमार ने बताया कि एक महिला अपने खेत मे जंगल मे आग लगा रही थी मना करने के वाबजूद भी आग लगा कर चली गई लेकिन हमलोग आग बुझाने कि बाल्टी से प्रयास किये लेकिन आग प्लास्टिक मे पकड़ लिया और धू धू कर जलने लगा इस दुकान का मालिक संतोष झा है आग लगने से लगभग 30 लाख रुपए कि छति हुई है सब जलकर राख हो गया।इस संदर्भ मे रहिका थानाध्यक्ष रविन्द्र कुमार से पूछे जाने पर जानकारी देते हुए बताया की अगजनी की घटना के संदर्भ मे कोई आवेदन अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है आवेदन प्राप्त होने पर आगे की कारवाई की जाएगी।

एआईडीवाइओ ने की बीपीएससी अभ्यर्थियों पर बार बार पुलिस लाठीचार्ज की निंदा

प्रातः किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर।युवा संगठन एआईडीवा-ईओ के बिहार राज्य सचिव विकास कुमार ने एक प्रेस बयान जारी करते हुए कहा कि बिहार लोक सेवा आयोग की 70 वीं की पीटी को रद्द कराने की मांग को लेकर अभ्यर्थियों का पटना के गर्दनीबाग में पिछले 8 दिनों से शांतिपूर्ण चल रहे आंदोलन पर बर्बर पुलिस लाठी चार्ज कि हम घोर निंदा करते हैं। बार बार प्रश्न पत्र लीक और तमाम परीक्षाओं में व्याप्त भ्रष्टाचार छात्रों के भविष्य के साथ जघन्य अपराध है एवं सरकार की नाकामी उजागर करती है।यह अत्यंत दुखद है कि बिहार स-रकार उनकी मांगों पर विचार करने के बजाय, प्रदर्शनकारियों पर बार-बार पुलिस लाठीचार्ज का सहारा ले रही है। उन्होंने छात्रों की जायज मांग तत्काल प्रभाव से स्वीकार करने,घायल छात्रों को समुचित चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने और. पुलिस लाठीचार्ज की घटना में सम्मिलित अधिकारियों को तत्काल बर्खास्त करने की मांग की है।

नकली कॉस्मेटिक तेल तथा नकली हेयर रिमूवल क्रीम किया जब्त

प्रातः किरण संवाददाता

मधुबनी। जयनगर में अल्फा इंटेलिजेंस सर्विस लि कोलकाता के कम्पनी विजिलेंस टीम व पुलिस ने जयनगर मे तीन दुकानो पर छापेमारी किया। जहां से एक कम्पनी का झ254 पीस नकली कॉस्मेटिक तेल तथा दूसरे कम्पनी नकली झ479 हेयर रिमूवल क्रीम संग तीन आदमी को पकड़ा । कम्पनी विजिलेंस टीम के डायरेक्टर रंजीत कुमार साह के नेतृत्व में एसआई संतोष कुमार व एएसआई बिनोद राय ने जयनगर के बाजार में राजहाटस्थित गौतम जनरल स्टोर्स व दो अन्य जनरल स्टोर्स से नकली कॉस्मेटिक तेल तथा नकली हेयर रिमूवल क्रीम जब्त किया। कम्पनी विजिलेंस टीम के डायरेक्टर ने बताया कि बाजार के स्टोर्स से 192 पीस रिमूवल क्रीम144 पीस नकली तेल व गौतम जनरल स्टोर्स से नकली 50 पैकेट तेल व 174 पीस क्रीम तथा अन्य जनरल स्टोर्स से 133 पीस नकली क्रीम तथा 59 पीस नकली तेल संग दुकानदार को मौके से पकड़ा है।

अधिकारी नियमित रूप से क्षेत्र भ्रमण कर योजनाओ का करे स्थल निरीक्षण

प्रातः किरण संवाददाता

मधुबनी । जिलाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा की अध्यक्षता में समाहरणालय स्थित सभाकक्ष में तकनीकी विभाग के पदाधिकारियो की बैठक आयोजित हुई। जिलाधिकारी ने बैठक में विभागवार चल रही योजनाओ का विस्तृत समीक्षा किया एवं संबधित अधिकारियो को कई आवश्यक दिशा निर्देश भी दिए। जिलाधिकारी ने बिजली विभाग के कार्यपालक अभियंता को कृषि फीडर से सभी इच्छुक किसानों को उनसे प्राप्त आवेदन के आलोक में ससमय विद्युत कनेक्शन उपलब्ध कराने का निर्देश दिया।

उन्होंने विद्युत दोष से बंद पड़े नलकुपोको अविलंब मरम्मती करवाने का भी निर्देश दिया। उन्होंने कार्यपालक अभियंता विधुत को निर्देश दिया कि जर्जर विधुत तारो को बदलने हेतु तेजी से करवाई करे साथ ही ससमय जले हुए ट्रांसफार्मर को बदलने का भी निर्देश देते हुए कहा की इसमें अनावश्यक विलंब बर्दाश्त नहीं की जाएगी। ग्रामीण कार्य विभाग की समीक्षा के क्रम में निर्देश दिया कि मे टेनेंस पीरियड वाली क्षतिग्रसि सड़को को हरहाल में ससमय मरम्मती करवाये अन्यथा जबाबदेहीतय कर करवाई होगी। जिलाधिकारी ने यह भी निर्देश दिया कि वैसे क्षतिग्रस्त सड़के जिनका पाच वर्ष की मरम्मती अवधि समाप्त हो गई है उसकी भी अविलम्बसूची उपलब्ध करवाना सुनिश्चगीतकरे ताकि उसकी मरम्मती हेतु अग्रेतर करवाई जा सके। उन्होने ग्रामीण कार्य विभाग के सभी अभियंताओ को निर्देश दिया कि नियमित रूप से क्षेत्र भ्रमण कर सड़को की जाच करे। जिलाधिकारी ने समीक्षा के क्रम में कहा कि योजनाओं में अनावश्यक विलंब बर्दाश्त नही की जाएगी।

योजनाओ को पूरी गुणवत्ता के साथ ससमय पूर्ण करे।योजनाओं के लिए भूमि की उपलब्धताआदि को लेकर तकनीकी विभाग के पदाधिकारी सीओ के साथ आयोजित बैठकों में अनिवार्य रूप से उपस्थित रहे। अधिकारी नियमित रूप से क्षेत्र भ्रमण कर चल रही योजनाओ का जायजा लेते रहे।सड़को पर अतिक्रमण को सख्ती के साथ हटाने और कार्रवाई का भी निर्देश दिया है।

गड़बड़झाला: एमडीएम में तय दर मार्केट से कम, बच्चों की थाली में नहीं परोसे जा रहे अंडे व हरी सब्जियां

कैसे मिले पौष्टिक भोजन: अंडा के लिए 8 की जगह मिल रहा है 5 रुपये

बाजार दर से दाल के लिए 45 तो तेल की 20 रूपए कम आवंटन

अजीत कुमार यादव

गिद्धौर। सरकारी स्कूलों में मध्याह्न भोजन को लेकर सरकार जहां सख्ती रहती है। वही एमडीएम में वित्तीय गड़बड़ी न हो इसके लिए शिक्षकों पर भी कड़ी नजर रखी जाती है। इतना ही नहीं सरकार यह भी सुनिश्चित करती है कि विद्यालयों में छात्र-छात्राओं की उपस्थिति के अनुसार ही मध्याह्न भोजन का निर्माण हो। इसके साथ ही समय-समय पर बच्चों की थाली में फल-सब्जी और अंडा की उपलब्धता को लेकर जांच भी की जाति है और इसमें गड़बड़ी पाए जाने पर शिक्षकों के खिलाफ कार्रवाई भी की जाती है। मगर इन सबके बीच सरकार ने एमडीएम के

लिए जो बजट तैयार किया है। वही बजट बच्चों को पौष्टिक भोजन मिलने में अड़चन पैदा कर रही है। दरअसल,सरकार ने एमडीएम के खाद्य सामग्री की खरीद के लिए जो रेट तय किया है। वह रेट बाजार के रेट से काफी कम है। ऐसे में शिक्षकों के सामने एमडीएम की गुणवत्ता बनाए रखना बड़ी चुनौती है।बताया जाता है कि बच्चों की थाली में फल, अंडा और हरी सब्जी मिलते रहे, इसके लिए एमडीएम में बच्चों की उपस्थिति गलत दिखाई जाती है। ताकि उनकी गलत उपस्थिति दिखाकर दर के गैप को मैनेज किया जाए और एमडीएम को सुचारू रूप से चलाया जाए।

दाल की बाजार दर 160 रुपए विभाग दे रहा है मात्र 115 रुपए

बाजार में दाल की कीमत 160 रुपए प्रति किलो है। वहां विभाग द्वारा 115 रुपए तय किया गया है। सरसों तेल 160 रुपए प्रति किलो है तो विभाग द्वारा 140 रुपए दिया जा रहा है। सब्जी आलू 30 रूपया, प्याज 50 रूपया प्रति किलो मिलता है।

हरी सब्जियां तो और महंगी है लेकिन विभाग द्वारा हरी सब्जी मात्र 24 रूपए प्रति किलो दिया जाता है। अंडा के लिए केवल 5 रूपए मिलता है। केवल जनवरी-फरवरी के लिए 6 रूपए किया गया है। जबकि बाजार में से आठ रूपए प्रति अंडा बिकता है। ऐसे में विद्यालय प्रबंधन कहां से बच्चों को सरकारी मैन्यू के हिसाब से भोजन खिला पाएंगे। यह एक चिंता का विषय है। कई शिक्षकों ने बताया कि कई बार जेब से भी रुपया खर्च कर सरकारी आदेश का पालन करना मजबूरी हो जाती है।

शिक्षा विभाग द्वारा एक दिसंबर 24 से प्रभावित परिवर्तन मूल्य

कक्षा पहली से पांचवी तक वजन दर प्रति मूल्य

सामग्री	प्रति छात्र	किलो	प्रति छात्र
दाल	20 ग्रा ,	115	2.30
सब्जी	50 ग्रा	24	1.20
तेल	05ग्रा	140	0.70
मसाला/नमक			0.59
जलावन	100 ग्रा	14	1.40

(कुल-6.19 रूपए)

कक्षा छठी से आठवीं तक वजन दर प्रति मूल्य

सामग्री	प्रति छात्र	किलो	प्रति छात्र
दाल	30 ग्रा	115	3.45
सब्जी	75 ग्रा	24	1.80
तेल	7.5 ग्रा	140	1.05
मसाला/नमक			0.89
जलावन	100 ग्रा	14	2.10

(कुल 9.29 रूपए)

महंगाई के हिसाब से दाल सब्जी व अंडा फल का सरकारी तय दर काफी कम है। इसकी शिकायत विद्यालयों के शिक्षक बार-बार करते हैं। हम लोगों ने इस समस्या से विभाग को भी अवगत कराया है। अभी तक कोई निर्देश प्राप्त नहीं हुआ है।

एमडीएम प्रभारी, अमीर दास,गिद्धौर

तीन दिवसीय खेलकूद प्रतियोगिता हुआ शुरू

प्रात: किरण, संवाददाता

संग्रामपुर मुंगेर । प्रखंड मुख्यालय स्थित संत मेरी इंग्लिश स्कूल का 14 वां वार्षिक तीन दिवसीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया इसका शुभारंभ चीफ गेस्ट संग्रामपुर थानाध्यक्ष तारकेश्वर कुमार सिंह,समाजसेवी बलराम यादव,प्रवीण कुमार उर्फ गोपी किशन,कुमार आदर्श,संजीव चतुवेर्दी,निर्देशक रोसमीन के जींस एवं प्रचार्य एलोसियस के जींस द्वारा संयुक्त रुप से दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया मौके पर थानाध्यक्ष श्री सिंह ने कहा कि बच्चों के चहुमुखी विकास में खेलकूद का महत्वपूर्ण स्थान है।खेलकूद से शरीर स्वच्छ रहता है।प्रचार्य के जिन्स ने बताया कि आम बच्चे शिक्षा के साथ साथ खेल कूद में भी अपना भविष्य संवार सकते हैं। प्रतियोगिता के पहले दिन जूनियर एवं सीनियर वर्ग के बच्चों को रेड, ब्लू, ग्रीण एवं येलो, ग्रुप में

बांट कर दौड़, लांग जंप, हाई जंप, सांट फुट, प्रतिस्पर्धा का आयोजन किया गया।इस दौरान बच्चों ने इस प्रतियोगिता में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।

संक्षिप्त खबरें

गाली गलौज कर महिला के साथ की गई मारपीट

प्रातः किरण, संवाददाता

जमुई [झाझा] गांव के एक युवक के द्वारा शराब पीकर गाली गलौज करने व मारपीट किये जाने की घटना को लेकर थानाक्षेत्र के बोड़वा क्षेत्र की रहनी वाली एक महिला ने थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई है। दर्ज आवेदन में महिला सीमा देवी में बताया कि गांव के रहने वाले डब्लू दास नशे में धुत होकर गाली गलौज कर रहा था जब मना किया तो मेरे साथ मारपीट करने लगा और बदसलूकी करने लगा जिसका विरोध किया तो उसके चचेरेभाई रामधनी दास ने भी मुझे गाली गलौज करने लगा।

नदी घाट से मुंशी का बाइक की हुई चोरी

जमुई [झाझा] नदी घाट से रात्रि में बाइक चोरी हो जाने का मामला थाना में दर्ज की गई है। इस संदर्भ में बाइक मालिक सूर्यगढा रामपुर गांव के रहने वाले शिवानंद कुमार ने दर्ज आवेदन में बताया की महापुर घाट पर मुंशी के रूप में कार्य करता हूं। रात्रि में मैं घाट पर बाइक लगाकर नदी घाट से सड़क तक का रास्ता का काम पोकलेन से करवाने के बाद 2 बजे रात्रि घाट पर बाइक लगे स्थल पर पहुंचा तो बाइक गायब था। काफी खोजबीन किए जाने के बाद भी बाइक का पता नही चल सका।

मारपीट को लेकर महिला ने थाना में दर्ज कराई प्राथमिकी

जमुई [झाझा] नगरक्षेत्र के सोहजना मुहल्ले में एक महिला और उसके घर वालों के साथ मुहल्ले के कुछ लोगों के द्वारा मारपीट किए जाने का मामला थाना में दर्ज किया गया है। दर्ज आवेदन में आशा देवी ने बताई है कि नंदकिशोर यादव, सुनील यादव, जितेंद्र यादव एवं अन्य कुछ अज्ञात मिलकर मेरे गोदाम के सामने जबरदस्ती सोलिंग तोड़ा और बगल में ढलाई करने लगा जब विरोध किया तो उक्त सभी लोगों ने मुझे, घर के सदस्यों के साथ मारपीट करते हुए मंगलसूत्र तोड़कर मोबाइल छीनने की कोशिश किया।

बेलगान जमीन का बिना लगान निर्धारण किया जा रहा मोटेशन : केशरी

सदर अंचल में सीओ प्रीति कुमारी एवं कर्मचारी मो० रजत के द्वारा धड़ल्ले से बेलगानी जमीन का बिना लगान निर्धारण के जमाबंदी कायम कर मोटेशन करके ना सिर्फ लाखों-करोड़ों रुपयों का वारा-न्यारा किया जा रहा है बल्कि सरकारी राजस्व की भी भयंकर क्षति पहुंचाई जा रही है। एनसीपी (शरदचंद्र पवार) के प्रदेश महासचिव सह प्रवक्ता संजय केशरी ने उपर्युक्त आरोप लगाते हुए जिला पदाधिकारी को ज्ञापन सौंपते हुए इसमें तत्काल हस्तक्षेप करते हुए भ्रष्टाचारियों के खिलाफ विभागीय एवं कानूनी कार्रवाई की मांग की है। अपने आरोप के समर्थन में श्री केशरी ने दाखिल-खारिज वाद संख्या 3051/2023-24 का सबूत पेश करते हुए कहा कि इसको पहले प्रस्तावित खसरा की जमाबंदी नहीं चलने तथा आवेदन के साथ संलग्न पंजी-2 की छायाप्रति दूसरे खसरा का बताकर दाखिल-खारिज वाद को अस्वीकृत कर दिया गया परन्तु बाद में अवैध उगाही कर उसी केस में बिना लगान निर्धारण के गैरकानूनी तरीके से जमाबंदी कायम कर मोटेशन कर दिया गया।

तिलकुट की खुशबू ने किया मकर संक्रांति के आगमन का आगाज

प्रात: किरण, संवाददाता

जमुई / सोनो। तिलकुट की खुशबू ने मकर संक्रांति के आगमन का आगाज कर दिया है । प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी सोनो बाजार ओर चोक चौराहों पर तिलकुट की दुकानें पुरी तरह सज गई है , उक्त सभी तिलकुट की दुकानों पर बैठे कारीगरों द्वारा गुड़ ओर चीनी से तैयार किए जा रहे तिलकुट की सुगंध ने लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है । जहाँ पर लोग अपने घरों के लिए कुछ ना कुछतिलकुट की खरिदारी कर रहे हैं । वैसे तो मकर संक्रांति का त्यौहार आने मे अभी दो सप्ताह से अधिक का समय शेष बाकी है , लेकिन कारीगरों द्वारा तैयार किया जा रहा गुड़ ओर चीनी से बनी ताजी तिलकुट की सुगंध महकने लगी है । वैसे तो मान्यता अनुसार मकर संक्रांति का त्यौहार भगवान भास्कर सुर्य के लिए मनाया जाता है । क्योंकि इसी दिन से बसंत ऋतु का आगमन ओर नई फसलों की कटाई प्रारंभ होती है । इसके अलावा ऐसी मान्यता है कि 14 जनवरी को सुर्य मकर रेखा पर आ जाते हैं जिस कारण इस दिन मकर संक्रांति का त्यौहार मनाया जाता है । कभी कभी तो यह त्यौहार एक दिन पुर्व 13 जनवरी को एवं कभी एक दिन बाद 15 जनवरी को मनाया जाता है । इस त्यौहार मे लोग सुबह उठकर स्नान करने के उपरांत दान पुन्य कर तील का सेवन करते हैं । ऐसी भी मान्यता है कि इस दिन भगवान सुर्य अपने पुत्र शनिदेव से मिलने स्वयं उनके घर जाते हैं , क्योंकि शनिदेव मकर राशि के स्वामी हैं ।

डीएम ने तत्कालीन पंचायत सचिव वर्तमान मुखिया एवं तकनीकी सहायक के खिलाफ प्राथमिक दर्ज करने का निर्देश दिया

प्रात: किरण, संवाददाता

मुंगेर। सरकारी राशि के गबन एवं अनियमितता के आरोप में जिलाधिकारी, मुंगेर अवनीश कुमार सिंह द्वारा जहां हवेली खड़गपुर प्रखंड के बढौना पंचायत के पंचायत सचिव को निलंबित कर विभागीय कार्रवाई का निर्देश दिया गया है, वहीं तत्कालीन पंचायत सचिव, वर्तमान मुखिया एवं तकनीकी सहायक के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने का निर्देश दिया है। जिलाधिकारी ने बताया कि हवेली खड़गपुर के बढौना पंचायत में पंचायती राज विभाग द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं में गड़बड़ी एवं अनियमितता की शिकायत मिल रही थी। मामले को

तत्काल संज्ञान में लेते हुए स्थलीय जांच एवं निरीक्षण कराया गया। जांच एवं निरीक्षण के पश्चात दिए गए जांच प्रतिवेदन में समीक्षोपरांत पाया गया कि हवेली खड़गपुर के बढौना पंचायत में संचालित विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन में घोर वित्तीय अनियमितता एवं सरकारी राशि का दुरुपयोग किया गया है। जिलाधिकारी ने बताया कि उक्त मामले में दोषी पाए गए संबंधित पंचायत के वर्तमान पंचायत सचिव अजीत कुमार को तत्काल प्रभाव से निलंबित करते हुए विभागीय कार्रवाई का निर्देश दिया गया है तथा तत्कालीन पंचायत सचिव बालकृष्ण मेहता, तकनीकी सहायक ताबिश आलम एवं ग्राम पंचायत के वर्तमान मुखिया को भी इस मामले में दोषी पाते हुए सभी के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने का आदेश दिया गया है। जिलाधिकारी द्वारा लगातार किए जा रहे इस तरह की कार्रवाई से पूरे जिले में हड़कंप मच गया है। बता दें कि विगत मंगलवार को सदर अंचल के दो डाटा इंट्री ऑपरेटर को अनियमितता एवं कर्तव्यहीनता के आरोप में सेवा समाप्त एवं एक राजस्व कर्मचारी को निलंबित कर दिया था। वहीं विगत सोमवार को पुनः उनके द्वारा हवेली खड़गपुर के पंचायत सचिव को सरकारी राशि के गबन एवं अनियमितता के आरोप में दोषी पाते हुए तत्काल प्रभाव से निलंबित करते हुए विभागीय कार्रवाई करने का निर्देश दिया गया था। उनके द्वारा लगातार की जा रही इस कार्रवाई से सभी कर्मियों में हड़कंप मच गया है।

इधर जिलाधिकारी ने कहा है कि जिले में किसी भी कर्मियों के खिलाफ यदि कार्यों के प्रति अनियमितता अथवा कर्तव्यहीनता की शिकायत मिलेगी तो उन्हें किसी भी सूरत में बख्शा नहीं जाएगा। उन्होंने सख्त लहजे में सभी कर्मचारियों अथवा कर्मियों को कार्य के प्रति चेताया है।

भूमि विवाद के मामले में बाइक सवार बदमाशों ने महिला को गोली मारकर किया घायल

प्रात: किरण, संवाददाता

समस्तीपुर। समस्तीपुर जिले के शिवाजीनगर प्रखंड अंतर्गत नरसिंहा चौक के समीप बदमाशों ने एक महिला को गोली मार दी जिससे महिला गंभीर रूप से जख्मी हो गई। जानकारी के अनुसार महिला को नरसिंहा चौक से आगे चिमनी के पास अज्ञात बदमाशों ने गोली मार कर पूरी तरह जख्मी कर दिया। जख्मी महिला की पहचान काकरघाट निवासी राम ठाकुर की पत्नी रूबी देवी उम्र करीब 26 साल के रूप में की गई है। जिसे प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र शिवाजीनगर में इलाज के लिए भर्ती कराया गया इसके बाद पुलिस को इसकी सूचना मिली। चिकित्सक ने बेहतर उपचार के

लिए दरभंगा डीएमसीएच रेफर कर दिया। घटना की जानकारी मिलते ही शिवाजीनगर पुलिस स्वास्थ्य केंद्र पहुंच कर, घटना की छानबीन कर रही है। घायल रूबी देवी ने बताया कि रोसडा. से भटौरा के लिए ऑटो से जा रही थी। इसी दौरान नरसिंह चौक पर ऑटो चालक ने ऑटो को रोक दिया, उसके आगे पूर्व से ही दो बाइक पर सवार चार अज्ञात बदमाश मौजूद थे।

इसके बाद महिला को गोली मार कर बुरी तरह से जख्मी कर दिया गया। घायल महिला ने ऑटो चालक पर नोकझोक करने की आरोप लगाते हुए कहा कि रोसडा. से ही ऑटो चालक सही समय पर उसे नहीं पहुंचा। ऑटो चालक को भटोरा चौक तक छोड़ना था लेकिन ऑटो चालक ने नरसिंह चौक पर ही अपनी ऑटो को रोक दी जिसके बाद गोलीबारी की घटना घटित हुई। महिला को पाजर में गोली लगी थी। घटना भूमि विवाद से जुड़ा हुआ बताया गया है। अपर थाना अध्यक्ष हंसराज राम ने बताया कि घटना हुई है मामले की जांच की जा रही है।

महाराजा अहिवरन की जयंती धूमधाम के साथ मनाई गई

प्रात: किरण, संवाददाता

जमुई [झाझा] झाझा बरनवाल सेवा सदन में बरनवाल समाज के लोगों के द्वारा महाराजा अहिवरन की जयंती बड़े ही धूमधाम के साथ मनाई गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता बरनवाल समाज के अध्यक्ष गोपाल बरनवाल ने किया। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित लोगों ने इस आयोजन को समाज के लिए प्रेरणादायक बताया और इसे सामाजिक बुराइयों के उन्मूलन तथा एकजुटता बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना। अध्यक्ष गोपाल बरनवाल ने कहा कि कहा कि महाराजा अहिबरन की जयंती समाज के लोगों द्वारा विगत कई वर्ष पूर्व से ही मनाया जाता रहा है। उन्होंने कहा कि इतिहास गवाह है कि महाराजा

अहिबरन ने बरनवाल समाज की नींव रखी थी और वैश्य समुदाय के विस्तार में अहम भूमिका निभाई।

बरनवाल समाज के लोग जहां भी गए, उन्होंने व्यवसाय के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई और गांव-शहर के साथ-साथ देश के विकास में योगदान दिया।

अन्य वक्ताओं ने अपनी अपनी बातों को विस्तार पूर्वक रखते हुए बरनवाल समाज की मजबूती पर जोर देते हुए सभी को मिलजुल कर रहने के लिए कहा। उपस्थित बरनवाल समाज के लोगों ने महाराजा अहिवरन की तस्वीर पर पुष्प अर्पित करते हुए उन्हें नमन कर उनकी वीरता पर चर्चा किया। मौके पर मौजूद अनिल बरनवाल, कालिका प्रसाद बरनवाल, प्रो. संजय बरनवाल, डॉक्टर औंकार बरनवाल, सीताराम बरनवाल, डॉक्टर ओमप्रकाश बरनवाल, नंदलाल बरनवाल, दयाल शरण, बह्मदेव मोदी सहित कई लोग मौजूद रहे।

महायज्ञ को लेकर आयोजनकर्ताओं ने की बैठक

प्रात: किरण, संवाददाता

जमुई [झाझा] नगर क्षेत्र के अम्बेडकर नगर में श्यामदेव उर्फ वैद्यजी के आवास पर गुरुवार को आगामी वर्ष के अप्रैल माह में होने वाले भव्य श्री श्री 108 लक्ष्मी नारायण महायज्ञ को लेकर आयोजनकर्ता की ओर से एक बैठक की गई ।बैठक की अध्यक्षता समाजसेवी श्यामदेव उर्फ वैद्यजी के द्वारा किया गया। कलश शोभायात्रा में हेलीकॉप्टर से पुष्प वर्षा भी की जाएगी। महायज्ञ के मार्गदर्शक जयदेव महाराज, श्यामदेव ने बताया कि जिला में अबतक सबसे भव्य रूप से इस महायज्ञ को आयोजित की जाएगी जिसमें रासलीला, नृत्य, प्रवचन एवं अन्य कई कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। जिसमे अलग अलग राज्यों से प्रसिद्ध रूप से जानेमाने आचार्य, कथावाचक एवं रासलीला के लिए कलाकार शामिल होंगे। बैठक में भव्य महायज्ञ को लेकर मार्गदर्शन के रूप में जयदेव महाराज, रामबालक पांडेय, संतोष यादव, मुन्ना रावत, वरुण माथुरी, अरविंद यादव, सुनील कुमार एवं अन्य कई लोग मौजूद रहे। जिसमे निर्णय लिया गया कि महायज्ञ बलियो रोड स्थित नदी किनारे छात्रावास के पास आगामी वर्ष के अप्रैल माह में 17 अप्रैल से 25 अप्रैल तक महायज्ञ आयोजित की जाएगी जिसमें 5100 कलश स्थापित किया जाएगा।

जनसुराज के युवा प्रदेश महासचिव बने समीर मधुकर

प्रात: किरण, संवाददाता

तारापुर (मुंगेर)। जनसुराज के संस्थापक पूर्व राज्यसभा सांसद सह चुनाव विश्लेषक प्रशांत किशोर के मार्गदर्शन पर जनसुराज युवा के प्रदेश अध्यक्ष आनंद मिश्रा ने बीते दिनों मुंगेर के एक कार्यक्रम मौके पर तारापुर के कुशवाहा बाहुल्य गांव लौना निवासी पूर्व मुखिया मीना देवी के पुत्र समीर मधुकर को आगामी 20 25 बिहार विधानसभा चुनाव में संगठन को और अधिक मजबूत बनाने को लेकर पार्टी ने इन्हें एक नई जिम्मेदारी सौंपते हुए युवा जनसुराज का प्रदेश महासचिव मनोनीत किया है । गौरतलब है कि युवा के प्रदेश अध्यक्ष श्री मिश्रा ने यंग युवा पीढ़ी के चर्चित एवं तारापुर क्षेत्र में खास कर सभी जाति धर्म के युवाओं के आइकॉन माने जाने वाले समीर मधुकर को बड़ी जिम्मेदारी काफी सूझबूझ के साथ सौंपने की प्रशंसा संपूर्ण क्षेत्र भर में हो रही है । श्री मधुकर पूर्व से भी जनसुराज के युवा जिला अध्यक्ष मुंगेर के पद पर काबिज थे । श्री मधुकर को जनसुराज युवा का प्रदेश महासचिव बनाए जाने की सूचना मिलते ही पार्टी के लोकप्रिय जनसुराज के वरिष्ठ नेता पूर्व प्राचार्य प्रोफेसर पुष्पेंद्र कुमार सिंह, प्रदेश कार्यकारिणी के सदस्य सह मुखिया वीर कुंवर सिंह, जिला अध्यक्ष योगेंद्र मंडल ,पूर्व मुखिया मनोज मिश्रा , रत्नेश सिंह , चैतन्य कुमार इत्यादि ने उम्मीद जताया है की पूरी ईमानदारी एवं निष्ठा के साथ तारापुर के क्षेत्र में संगठन की बेहतर करेंगे।

शराब और बाईक सहित चार आरोपियों को गिरफ्तार कर भेजा गया जेल

प्रात: किरण, संवाददाता

बरियारपुर(मुंगेर)। खड़गपुर - बरियारपुर मुख्यमार्ग संख्या 333 पर फौरलेन के समीप सफेद महिन्द्रा पीकप भान तेज रफ्तार से आ रही थी।बरियारपुर पुलिस गस्ती दल को देख कर भागने के प्रयास किया परन्तु सफल नही हो सका। पुलिस के रोकने पर रद्दी टायर से ढककर पुलिस को चकमा देने मे नकाव साबित हुआ। तलासी के क्रम कार्टुन में बंद विभिन्न ब्रांड के अंग्रेजी शराब 95 कार्टुन 375.1389 बोतल अंग्रेजी शराब के साथ झारखंड राज्य के आशुतोष कुमार पिता निरज झा,प्रितम कुमार

पिता महेन्द्रर दास ,निरज कुमार रमानी पिता मनोज रमानी सभी मूल झारखंड निवासी धनबाद के रहनेवाले है। 30 लीटर शराब निर्माण के उपयुक्त स्प्रीट के वाहन संख्या बी आर 9 सी 2845 पर ले जाने के क्रम मे मुरारी कुमार पिता बिनय झा साकिन नयागांव जिला बेगुसराय को धर दबोचे गए। थाना परिसर लाया गया जहां सुसंगत धाराएं के तहत गिरफ्तार कर मुंगेर जेल भेज दिया गया।

समस्तीपुर जिला के सोमनाहा पंचायत में नि:शुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन

प्रात: किरण, संवाददाता

समस्तीपुर: समस्तीपुर जिले के सोमनाहा पंचायत में श्री राम चंद्र सेवा ट्रस्ट द्वारा आयोजित निःशुल्क चिकित्सा शिविर ने स्थानीय लोगों के बीच स्वास्थ्य जागरूकता को एक नई दिशा दी है। रामजानकी कॉम्प्लेक्स में आयोजित इस शिविर में प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ. मनोज कुमार सिंह और उनकी टीम ने अपनी विशेषज्ञता से सैकड़ों स्थानीय लोगों का स्वास्थ्य परीक्षण किया और उन्हें आवश्यक उपचार प्रदान किया। शिविर का उद्घाटन वीर बाल दिवस के अवसर पर

हुआ, जिसे श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए डॉ. मनोज कुमार सिंह ने इस दिन के महत्व को बताया। उन्होंने कहा कि वीर बाल दिवस सिख धर्म के दसवें गुरु, गुरु गोबिंद सिंह जी के साहिबजादों जोरावर सिंह और फतेह सिंह के बलिदान को सम्मानित करने के लिए मनाया जाता है। इन युवा साहिबजादों की वीरता और साहस को याद करते हुए डॉ. सिंह ने उपस्थित लोगों से समाज में मानवता के प्रति अपने कर्तव्यों को निभाने की अपील की। इसके साथ ही उन्होंने स्वास्थ्य के महत्व पर विस्तार से बात की और लोगों को अपनी सेहत के प्रति जागरूक किया।डॉ. सिंह ने कहा कि स्वच्छता, संतुलित आहार और नियमित स्वास्थ्य जांचें किसी भी व्यक्ति के जीवन को लंबा और स्वस्थ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उन्होंने बताया कि समय पर जांच और उपचार से गंभीर बीमारियों से बचाव संभव है, जिससे न केवल जीवन की गुणवत्ता में सुधार होता है, बल्कि आर्थिक रूप से भी बचत होती है। चिकित्सा शिविर में विशेष रूप से न्यूरोपैथी, मास डेंसिटी, ब्लड जांच, आर्थराइटिस की जांच और अन्य स्वास्थ्य सेवाएं निःशुल्क उपलब्ध कराई गईं। इसके अलावा, स्वास्थ्य संबंधी मार्गदर्शन और दवाइयां भी लोगों को वितरित की गईं। यह शिविर गांव के लोगों के लिए किसी वरदान से कम नहीं था, क्योंकि उन्होंने बिना किसी लागत के स्वास्थ्य परीक्षण कराए और चिकित्सकों से महत्वपूर्ण सलाह प्राप्त की। शिविर में सैकड़ों स्थानीय लोग और मरीज शामिल हुए, जिनमें वरिष्ठ नेता ब्रह्मदेव सिंह, पंचायत मुखिया राधा कुमारी, पंचायत समिति सदस्य कृष्णा देवी, सरपंच शंभु सिंह, जिला पार्षद सत्यप्रकाश कुशवाहा, जिला परिषद रवि रौशन कुमार, ओमप्रकाश कुशवाहा, रविकांत कुशवाहा, महेश चौरसिया, राज कुमार सिंह, कौशल कुमार, लाला प्रसाद, सतीश कुमार सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे। इस आयोजन ने न केवल स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं पर ध्यान केंद्रित किया, बल्कि लोगों को उनके स्वास्थ्य के प्रति जागरूक भी किया। समस्तीपुर जिले के सोमनहा पंचायत में इस प्रकार के आयोजनों ने समाज के हर वर्ग को स्वस्थ जीवन की ओर प्रेरित किया है।

मराँची थाने की पुलिस ने शराब के साथ दो लोगों को किया गिरफ्तार

प्रात: किरण, संवाददाता

मोकामा। मराँची थाने के पुलिस ने 15 लीटर देसी शराब के साथ दो लोगों को गिरफ्तार किया है। मराँची के थानाध्यक्ष ने जानकारी देते हुए बताया कि समकालीन अभियान के तहत कसहा दियारा में छापामारी अभियान चलाया गया। छापामारी के दौरान सिमरिया बिंद टोली के रहने वाले नागों महतो के पुत्र पंकज कुमार और सुबोध कुमार को गिरफ्तार किया गया। जिसके पास से 15 लीटर देसी शराब बरामद किया गया है। पुलिस दोनों लोगों को गिरफ्तार कर जेल भेज दी है।

कैसी होगी कुम्भ के बाद की राजनीति ?

जाते हुए साल की राजनीति के कुम्भ में डुबकी लगाने वाले भारत देश में राजनीति कितनी बदली ये सभी ने देख लिया है। अब नए साल में प्रयाग में होने वाले कुम्भ के आयोजन से देश की राजनीति कितनी प्रभावित होगी कहना कठिन है। प्रयागराज में 13 जनवरी 2025 से महाकुंभ शुरू होने जा रहा है। आम धारणा है कि महाकुंभ के दौरान संगम में स्नान करने से पुण्यकारी फलों की प्राप्ति होती है। महाकुंभ समाप्त 26 फरवरी 2025 को होगा। महाकुम्भ के लिए उत्तरप्देश की सरकार की प्रतिष्ठा दांव पर लगी हुई है।

उत्तर प्रदेश धार्मिक गतिविधियों का नाभि केंद्र तो है ही साथ ही राजनीति का भी नाभि केंद्र है । देश का मुखिया बनने के लिए मौजूदा प्रधानमंत्री नरेंद्र दामोदर दास मोदी को बह इसी उत्तर प्रदेश में आना पड़ा था। इसी उत्तर प्रदेश ने 2014 और 2019 में भाजपा को चुनावी वैतरणी पार कराई थी और इसी उत्तर प्रदेश ने 2024 में भाजपा की नाव को डुबो भी दिया था ,फलस्वरूप देश के हिस्से में एक लंगड़ी सरकार आयी। उत्तर प्रदेश में राम मंदिर तो भाजपा को 400पार नहीं करा पाया लेकिन अब देखना ये है कि महाकुम्भ भाजपा को दिल्ली जितवा सकता है या नहीं ?

अजीब संयोग है कि नए साल में महाकुम्भ और दिल्ली विधानसभा के चुनाव होने हैं। दिल्ली में आम आदमी पार्टी पिछले 12 साल से सत्ता में है। भाजपा ने देश की सत्ता तो तीसरी बार हासिल कर ली लेकिन खास दिल्ली की सत्ता आज भी भाजपा के लिए एक ख्वाब ही है। भाजपा को महाकुम्भ के जरिये अपने हिंदुत्व के एजेंडे को और मारक हथियार बनाकर दिल्ली की सत्ता हासिल करना है। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार देश की लंगड़ी सरकार की मदद से महाकुम्भ के जरिये पुण्य अर्जित करना चाहती है ,लेकिन गंगा में निर्मल जल ही नहीं है। महाकुंभ के दौरान गंगा और यमुना नदियों में बगैर शोधित मल और जल यानी अनट्रीटेड वाटर छोड़े जाने से रोकने और गंगा जल की पर्याप्त उपलब्धता की मांग को लेकर दाखिल याचिकाओं पर नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल नई दिल्ली ने बेहद महत्वपूर्ण फैसला सुनाया है। एनजीटी ने केंद्र व यूपी सरकार से कहा है कि महाकुंभ के दौरान प्रयागराज में गंगाजल की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित की जाए. इसके साथ ही साथ ही गंगाजल की क्वालिटी पीने-आचमन करने और नहाने योग्य भी होनी चाहिए। एनजीटी ने अपने फैसले में कहा है कि महाकुंभ के दौरान जो भी श्रद्धालु आस्था की डुबकी लगाने के लिए प्रयागराज आएं. उन्हें गंगाजल को लेकर कोई दिक्कत नहीं होनी चाहिए. गंगा में आस्था की डुबकी लगाने पर श्रद्धालुओं की सेहत पर कोई खराब असर कतई नहीं पड़ना चाहिए।

प्रयाग में कुम्भ का आयोजन कब से हो रहा है इसका कोई लिखित प्रमाण नहीं है किन्तु ये एक सनातन आयोजन है। और बिना किसी के सहयोग से होता आ रहा है । ये तब भी सम्पन्न हुआ ,जब देश में मुगलों का शासन था और ये तब भी हुआ जब देश में अंग्रेजों का शासन था। आजादी के बाद से इस आयोजन को राजसत्ता की प्रत्यक्ष मदद मिलने लगी लेकिन देश की राजनीति में जब से भाजपा का जन्म हुआ है और भाजपा उत्तर प्रदेश की सत्ता में आई है तब से कुम्भ का आयोजन धार्मिक के साथ ही राजनीतिक आयोजन भी ही गया है। यानि अब महाकुम्भ के माध्यम से राजनीतिक लक्ष्य भी साधे जाने लगे हैं। इस साल उत्तर प्रदेश सरकार के कन्धों पर कुम्भ के जरिये दिल्ली की सत्ता हासिल करने का लक्ष्य है। भाजपा के लिए ये बड़ा लक्ष्य है। आपको बता दें कि प्रयागराज का कुम्भ 14 जनवरी से 10 मार्च 2013 के बीच आयोजित किया गया। यह कुल 55 दिनों के लिए था, इस दौरान इलाहाबाद (प्रयागराज) सर्वाधिक लोकसंख्या वाला शहर बन जाता है। 5 वर्ग कि.मी. के क्षेत्र में 8 करोड़ से ज्यादा लोगों ने हिस्सा लिया था। आंकड़ों के हिसाब से ये दुनिया का सबसे बड़ा जमावड़ा है ,लेकिन आबादी की दृष्टि से देखें तो 144 करोड़ के इस देश में से 1 प्रतिशत आबादी भी कुम्भ नहीं पहुँच पाती।कुम्भ के मेले एक तरफ सद्भाव के केंद्र भी बनते हैं तो अतीत में ये पारस्परिक संघर्ष के साक्षी भी रहे हैं। 1690 में नासिक में शैव और वैष्णव साम्प्रदायों में संघर्ष; 60,000 लोग मारे गए थे। 1760 - शैवों और वैष्णवों के बीच हरिद्वार मेलें में संघर्ष; 1,800 मरे।1820 के हरिद्वार मेले में हुई भगदड़ से 430 लोग मारे गए। भगदड़ की अनेक घटनाएं कुम्भ के मेलों में हो चुकी हैं। पिछले एक दशक में भाजपा ने देश के अनेक धार्मिक आयोजनों को धार्मिक पर्यटन मेलों में बदल दिया है। प्रयाग का तो नाम तक बदल दिया गया।

विपक्ष को दलित वोट भाजपा के पक्ष में जाता हुआ दिख रहा है क्या?

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विपक्ष पर आरोप लगाते हुए कहा है कि कांग्रेस पार्टी बार-बार संविधान की भावना की हत्या की है। पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू से लेकर गांधी परिवार की हर पीढ़ी ने सत्ता में रहते हुए संविधान से छेड़छाड़ की है। संविधान से छेड़छाड़ का दाग कांग्रेस के माथे से नहीं मिटेगा, यह पाप। लोकतंत्र का गला घोंटने का काम किया है नेहरू-गांधी परिवार। कांग्रेस के एक परिवार ने संविधान को चोट पहुंचाने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी है। 75 साल में 55 साल तक एक ही परिवार ने राज किया, इसलिए देश में क्या-क्या हुआ ये जानने का अधिकार सबको है। उक्त बातें लोकसभा में संविधान पर चर्चा का जवाब देते हुए कही।

उन्होंने लोकसभा में 11 संकल्प बताये (1) चाहे नागरिक हो या सरकार हो, सभी अपने कर्तव्यों का पालन करें। (2) हर क्षेत्र, हर समाज को विकास का लाभ मिले। (3) भ्रष्टाचार के प्रति जीरो टॉलरेंस हो भ्रष्टाचारी की सामाजिक स्वीकार्यता न हो। (4) देश के कानून, देश के नियम, देश की परंपराओं के पालन में देश के नागरिकों को गर्व होना चाहिए। (5) गुलामी की मानसिकता से मुक्ति हो, देश की विरासत पर गर्व हो। (6) देश की राजनीति को परिवारवाद से मुक्ति मिले। (7) संविधान का सम्मान हो, राजनीतिक स्वार्थ के लिए संविधान को हथियार न बनाया जाए। (8) जिनको संविधान से आरक्षण मिल रहा है, उसे न छीना जाए, धर्म के आधार पर आरक्षण की हर कोशिश पर रोक लगे। (9) महिलाओं के नेतृत्व में विकास यानि वूमेन लेड डेवलपमेंट को प्राथमिकता दी जाए। (10) राज्य के विकास से राष्ट्र का विकास बने-यह हमारा मंत्र हो। (11) एक भारत श्रेष्ठ भारत का मंत्र सर्वोपरि हो।

शीतकालीन सत्र में ह्यएक देश-एक चुनावह्न संबंधी विधेयक पेश किये जाने और कई विषयों पर भारी हंगामे के बाद संसद की कार्यवाही अनिश्चितकाल के लिए स्थगित हो गई गयी है।

कांग्रेस आंबेडकर की तस्वीरें लेकर संसद परिसर में विरोध कर रही थी। विपक्ष और कांग्रेस नेता गृह मंत्री के बयान के एक हिस्से को प्रचारित कर रहे हैं, लेकिन उसके शेष हिस्से को सुनने के लिए आज भी तैयार नहीं है। बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर के नाम पर चल रही राजनीति शांत होने का नाम नहीं ले रही है। देश भर में कांग्रेस के नेतृत्व में विपक्ष विरोध प्रदर्शन हो रहा है। जिस तरह की सियासत हो रही है, देश के इतिहास में कभी भी ऐसा नहीं हुआ था। इडी (कांग्रेस) गठबंधन द्वारा, बाबा साहेब के नाम पर केन्द्रीय गृह मंत्री से इस्तीफा मांगना तथा सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच हाथापाई, समझ से पड़े हैं। बाबा साहेब संविधान रचना के समय ही इशारा किया था कि संविधान अपने आप में कुछ नहीं कर सकता है, उसकी पालन करने वालों की गुणवत्ता पर सब कुछ निर्भर करेगा। अच्छे प्रतिनिधि संविधान को ठीक से लागू करेंगे और बुरे प्रतिनिधि संविधान का दुरुपयोग करेंगे।

बाबा साहेब जब अपनी सियासी जमीन तलाश रहे थे, उस समय देश में 18 प्रतिशत साक्षरता था और आज 40 प्रतिशत साक्षरता हैं। उस समय साक्षर नेता बाबा साहेब दो-दो बार चुनाव हारे थे या कहिए कि हरवा दिए गए थे। आज राजनीतिक दल को वोट देते समय बाबा साहेब को याद करना चाहिए और साक्षर नेता को उनकी कावलियत को देखते हुए मतदान करना चाहिए, मुझे लगता है कि ऐसा करने से बाबा साहेब के प्रति शायद यही सच्चा प्रेम होगा।

भारत के संविधान-निमार्ता बाबा साहेब डॉ बी आर आंबेडकर देश की राजनीति में अचानक केन्द्र विंदु में आ गए हैं। देश के गृह मंत्री का बाबा साहेब का अपमान का इरादा नहीं था, यह उन्होंने साफ कर चुके हैं, लेकिन विपक्ष ने यह मुद्दा जोरदार ढंग से बाहर उठाकर प्रधानमंत्री और गृह मंत्री को सफाई देने पर मजबूर कर रहे है। इस मुददे को संसद से बाहर उठाने के कारण देश के दलितों को अनावश्यक उल्लेख पर आपत्ति हो रही है, जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए था।

सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल या लूट का अड्डा

सीधे शब्दों में मरीज को शीघ्र स्वास्थ्य लाभ देने के बारे में तो कतई नहीं बल्कि उससे कितने अधिक से अधिक पैसे वसूले जा सकते हैं सारा ध्यान व अस्पतालों का सारा चक्रव्यूह इसी तरीके से रचा जा रहा है। और ऐसा हो भी क्यों न ?

निर्मल रानी
लेखिका

वैसे तो 2012 में प्रसारित किये गये आमिर खान के प्रसिद्ध व लोकप्रिय धारावाहिक सत्यमेव जयते में भारतीय स्वास्थ्य सेवाओं में व्याप्त धांधली व लूट जैसे अति गंभीर विषय को अत्यंत प्रभावी रूप से उठाया जा चुका है। इस में प्रमाणिक तरीके से यह बताया गया था कि किस प्रकार डॉक्टर्स द्वारा मरीजों को बिना जरुरत के दवाइयाँ दी जाती हैं और किस तरह मरीजों का गैर जरूरी इलाज किया जाता है। इसमें कई ऐसे उदाहरण पेश किये गये थे जिससे यह साबित होता है कि स्वास्थ्य सेवाओं में किस तरह की धांधलियां हो रही हैं। सत्यमेव जयते में यह भी दिखाया गया था कि आंध्र प्रदेश के एक गाँव में बड़ी संख्या में महिलाओं की बच्चेदानी (गर्भाशय) निकाल दिया गया, जबकि इसकी जरुरत ही नहीं थी। डॉक्टर्स द्वारा महिलाओं को यह बताया गया था कि अगर उन्होंने ऑप्रेशन नहीं करवाया तो उनकी जान चली जाएगी। जब कि इस कार्यक्रम में भाग ले रही एक सीनियर डॉक्टर का कहना था कि कैंसर के अलावा कोई और मामला नहीं होता जिसमें गर्भाशय को निकालना पड़े। इसी मंच पर यह भी बताया गया था कि कई बार मरीजों से दवाओं की कीमत पचास गुना ज्यादा तक वसूली जाती है। तरह तरह के गैर जरूरी फर्जी टेस्ट करने के लिए मरीज पर दबाव बनाने जैसी अनेक बातें भी सामने आयी थीं। यहाँ तक कि सत्यमेव जयते में डॉक्टरों के व्यवसाय से लेकर मेडिकल कॉलेजों तक सभी पर निगरानी रखने वाली संस्था मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया (एमसीआई) की गड़बड़ियों पर भी चर्चा की गई थी।

परन्तु सत्यमेव जयते द्वारा भारतीय चिकित्सा व्यवस्था में व्याप्त घोर भ्रष्टाचार व लूट के उजागर होने के बावजूद गत 12 वर्षों में इसमें कोई सुधार तो बिल्कुल नहीं आया,हाँ लूट खसोट में और अधिक इजाफा जरूर हो गया है। और भारतीय चिकित्सा व्यवस्था में व्याप्त यह लूट अब इस हद तक पहुँच चुकी है जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। सीधे शब्दों में मरीज को शीघ्र स्वास्थ्य लाभ देने के बारे में तो कतई नहीं बल्कि उससे कितने अधिक से अधिक पैसे वसूले जा सकते हैं सारा ध्यान व अस्पतालों का सारा चक्रव्यूह इसी तरीके से रचा जा रहा है। और ऐसा हो भी क्यों न ? जब सुपर-स्पेशलिटी हॉस्पिटल, फार्मा और हेल्थकेयर कम्पनीज द्वारा सत्ता को चुनावी बांड के रूप में इतने पैसे दे दिए जायें कि उनकी हर तरह की लूट पर सरकारें खामोश रहें? गौरतलब है पिछले दिनों जब सर्वोच्च न्यायालय के निर्देश पर इलेक्टोरल बांड सार्वजनिक किये गए थे उन्हीं चुनावी बॉन्ड के आंकड़ों से पता चला था कि देश की कम से कम 30 फार्मा और हेल्थकेयर कंपनियों ने 5 करोड़ रुपये से अधिक मूल्य के चुनावी बॉन्ड खरीदे थे जो कुल मिलाकर लगभग 900 करोड़ रुपये है। यह कुल 12,155 करोड़ रुपये की राशि का लगभग 7.4% है, जिसके लिए डेटा जारी किया गया था।

नतीजतन आज सुपर-स्पेशलिटी हॉस्पिटल,फार्मा और हेल्थकेयर फर्मों को इस बात की पूरी छूट मिल चुकी है कि वे मरीज की आर्थिक स्थिति के अनुसार जितना चाहे उसका दोहन कर सकते हैं करें। इनको मिली इस शाह का नतीजा है कि आज देश में प्रायः 44 % ऐसी झूठी सर्जरी की जा रही हैं जिनकी जरुरत ही नहीं। करीब 55 % गैर जरूरी हार्ट सर्जरी,लगभग 48 % गर्भाशय सर्जरी करीब 47 % कैंसर सर्जरी,48 % घुटना बदलने वाली शल्य चिकित्सा 45 % प्रसव सर्जरी केवल धन ऐंठने हेतु पूरी तरह अकारण ही की जा रही हैं। यह कोई गढ़े हुये काल्पनिक आंकड़े नहीं बल्कि मार्च 2016 को भारत की एक संसदीय समिति द्वारा स्वीकार किये गये तथ्य हैं। सत्ता संरक्षित इन अस्पतालों को भी पूरी तरह से कॉर्पोरेट कम्पनी की ही तरह टारगेट आधारित व्यवसाय बना दिया गया है। अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिये हर महीने के अंत में इन डॉक्टर्स पर दबाव बढ़ता है और डॉक्टर्स को डढऊ के मरीजों को भी अकारण शल्य चिकित्सा (सर्जरी) की तरफ धकेलना पड़ता है। यूँही नहीं कई बड़े नामी सुपर-स्पेशलिटी हॉस्पिटल अपने सीनियर डॉक्टर्स को एक करोड़ रुपए प्रति माह तक तनख़्वाह देते हैं। इसके बदले में इन्हें प्रत्येक माह एक हजार सामान्य मरीजों को गंभीर मरीज में परिवर्तित करना होता है। ऐसे लूट एक्सपर्ट डॉक्टर्स का ट्रैक रिकार्ड बनता है कि वह मरीजों को लूटने का कितना एक्सपर्ट है उसके हिसाब से ही उसे दूसरे लुटेरे अस्पतालों में मरीजों को लूटने का ठेका यानी नौकरी मिलती है।

कई मामले ऐसे भी सामने आये हैं जिसमें मृत हो चुके मरीजों को भी जिंदा बताकर पैसे वसूले जाते रहे हैं। अस्पताल द्वारा मृत हो चुके मरीजों का इलाज जारी रखने का केवल नाटक चलता है ताकि जितना हो सके पैसे ऐंठे जाते रहें। ऐसे कई मामले अखबारों में भी आते रहते हैं। ब्रेन डेड मरीजों को एक महीना वेंटिलेटर पर रखने जैसा एक अस्पताल का मामला अदालत में साबित हुआ तो अदालत ने सिर्फ 5 लाख की सांत्वना राशि का जुमार्ना उस अस्पताल पर ठोक दिया। इन्हीं भारतीय स्वास्थ्य सम्बन्धी अनियमिताओं के चलते पिछले दिनों मेरे एक पारिवारिक सम्बन्ध रखने वाले संपन्न,शिक्षित व अप्रवासी भारतीय परिवार की एक 76 वर्षीय महिला की समय पूर्व जान चली

स्वामित्व संपत्ति कार्ड : ग्रामीण संपदाओं के आर्थिक लाभ का माध्यम

डॉ. बिजय कुमार बेहरा
लेखक

संपत्ति कार्ड जारी करने से ग्रामीण क्षेत्रों में अप्रयुक्त आर्थिक क्षमता का लाभ मिल रहा है। संपत्ति के मालिक अब व्यवसाय का विस्तार करने, बेहतर आवास में निवेश करने या कृषि उत्पादकता में सुधार करने के लिए बैंक ऋण प्राप्त करके अपनी संपत्ति का आर्थिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस पर 24 अप्रैल,2020 को स्वामित्व योजना शुरू की गई। यह योजना ग्रामीण भारत को सशक्त बनाने की एक ऐतिहासिक पहल है। इसका उद्देश्य देश के सभी बसावट वालेक्षेत्रों में प्रत्येक ग्रामीण घर के मालिक को अधिकार पत्र प्रदान करना था। यह परिवर्तनकारी योजना ग्रामीण संपदाओं से आर्थिक लाभ प्रापंत के द्वार खोल रही है और व्यापक तौर पर ग्राम-स्तरीय योजना को बढ़ावा दे रही है। अपने चरणबद्ध कार्यान्वयनद्वारा यह योजनाभूमि प्रशासन में क्रांति ला रही है और ग्रामीण समुदायों में आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दे रही है।

भूमि अधिकांश आर्थिक गतिविधियों के लिए आधारशिला के रूप में कार्य करती है।यह विकास और समृद्धि का आधार भी बनती है। ग्रामीण भारत के बसावट वाले क्षेत्र (आबादी वाली भूमि) लंबे समय से महत्वपूर्ण सुधारों से अछूते रहे हैं। सीमित सर्वेक्षण किए जाने और सटीक मानचित्र उपलब्ध न होने के कारण, इन क्षेत्रों में संभावित संपत्ति स्वामित्व, अनसुलझे विवाद और संस्थागत ऋण तक पहुंच की कमी जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ा है।

भूमि प्रशासन में इस कमीके कारण ग्रामीण लोग गैर-संस्थागत ऋणदाताओं पर निर्भर होते थे।ऐसे ऋणदाता अत्यधिक ब्याज दर पर वसूली करते थे।इससे गरीबी और वित्तीय असुरक्षा बढ़ती गई। इन चुनौतियों को पहचानते हुए, राज्य राजस्व या पंचायती राज अधिनियमों द्वारा समर्थित संपत्ति कार्ड जारी करने के लिए स्वामित्व योजना की अवधारणा बनाई गई थी। ये कार्ड स्वामित्व का औपचारिक दस्तावेजीकरण प्रदान करते हैं।इसके द्वारा वित्तीय समावेशन और सतत ग्रामीण विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। स्वामित्व योजना को पहले छह राज्यों-महाराष्ट्र, कर्नाटक, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और मध्य प्रदेश में पायलट चरण में शुरू किया गया था। माननीय प्रधानमंत्री ने 11 अक्टूबर,2020 को763गांवों में लगभग एक लाख संपत्ति मालिकों को स्वामित्व कार्ड वितरित किए। शुरूआती सफलता के बादइस योजना को 24 अप्रैल,2021 को पूरे देश में लागू किया गया। आज तक 31 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों ने ग्रामीण आबादी वाले क्षेत्रों के सर्वेक्षण में समन्वित प्रयास सुनिश्चित करने के लिए भारतीय सर्वेक्षण विभाग के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

उन्नत ड्रोन तकनीक को अपनाना इस योजना की सफलता का आधार है। आबादी क्षेत्रों के हाई-रिजॉल्यूशन वाले नक्शे तैयार किए जाते हैं, जिससे संपत्ति का सटीक चित्रण संभव होता है। यह तकनीकी क्रियाकलाप ग्रामीण संपत्तियों के दस्तावेजीकरण में सटीकता, पारदर्शिता और दक्षता सुनिश्चित करता है।

संपत्ति कार्ड जारी करने से ग्रामीण क्षेत्रों में अप्रयुक्त आर्थिक क्षमता का लाभ मिल रहा है। संपत्ति के मालिक अब व्यवसाय का विस्तार करने, बेहतर आवास में निवेश करने या कृषि उत्पादकता में सुधार करने के लिए बैंक ऋण प्राप्त करके अपनी संपत्ति का आर्थिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यह बदलाव अनौपचारिक ऋणदाताओं पर निर्भरता को कम करने के साथ ही वित्तीय स्वतंत्रता की संस्कृति को बढ़ावा भी दे रहा है।

इसके अलावा, सटीक भूमि रिकॉर्ड की उपलब्धता संपत्ति विवादों को कम कर रही है ऐसे विवादों ने ग्रामीण समुदायों पर अत्यधिक बोझ डाला है और न्यायिक प्रणालियों को अवरुद्ध किया है। स्वामित्व योजना संघर्ष को कम करके सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा दे रही है और सामुदायिक संबंधों को सुचारू बना रही है।

वित्तीय सशक्तिकरण के अलावा,स्वामित्व योजना एक सुव्यवस्थित ग्राम विकास को आगे बढ़ा रही है। विस्तृत मानचित्रों का निर्माण संभव होने से स्थानिक नियोजन और पंचायतों में विकास नियंत्रण विनियमन (डीसीआर) की शुरूआत को बल मिला है। ये उपाय असंगठित विकास को औपचारिक बनाते हैं और भूमि का मनोनुकूल इस्तेमाल सुनिश्चित करते हैं। बिल्डिंग परमिशन सिस्टम कायम होने से सुरक्षा मानक और भी अधिक बढ़े हैं और सौंदर्य तथा संरचनात्मक रूप से सशक्त निर्माण को बढ़ावा भी मिला है। योजना से मिलने वाला योगदान सतत विकास लक्ष्य 11 के अनुकूल है।यह स्थायी शहरों और समुदायों पर जोर देता है। नियोजित विकास और टिकाऊ प्रणालियों को प्रोत्साहित करके, स्वामित्व योजना ग्रामीण क्षेत्रों को आर्थिक गतिविधि के केंद्र बनाने के साथ-साथ उन्हें बेहतर जीवन स्तर के रूप में विकसित कर रही है।

स्वामित्व योजना ग्रामीण विकास में पंचायती राज संस्थाओं की भूमिका को मजबूत करती है। सटीक भूमि रिकॉर्ड बेहतर शासन के लिए आधार के रूप में काम करते हैं।इससे डेटा-संचालित निर्णय लेने और सरकारी योजनाओं के कुशल कार्यान्वयन को सक्षम बनाने में मदद मिलती है। इसके अतिरिक्त, बिल्डिंग परमिशन सिस्टम और अन्य पहलों के माध्यम से उत्पन्न राजस्व पंचायतों के स्वयं के स्रोत राजस्व (ओएसआर) में योगदान मिलता है और उनकी वित्तीय स्वायत्तता बढ़ती है। अब तकदेश भर में लाखों स्वामित्व कार्ड वितरित किए जा चुके हैं।यह इस योजना के व्यापक प्रभाव को दशार्ता है। ये प्रयास आर्थिक विकेंद्रीकरण और जमीनी स्तर पर सशक्तिकरण के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को चिन्हित करते हैं। माननीयप्रधानमंत्री27 दिसम्बर,2024कोएक ही दिन में 12 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के 50,000 से अधिक गांवों में 58 लाख स्वामित्व कार्डों के ई-वितरण का शुभारंभ करके इतिहास रचेंगे औरइस योजना के तहत 2 करोड़ से अधिक संपत्ति कार्डों के निर्माण और वितरण का एक और मील का पत्थर हासिल होगा। यह माननीय प्रधानमंत्री के विजन को साकार करता है, जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम का प्रतिनिधित्व करता है और वित्तीय समावेशन, आत्मनिर्भरता और ग्रामीण भारत में उद्यमिता, रोजगार और व्यवसाय की स्थापना के अवसरों के निर्माण के लिए भारत की प्रतिबद्धता (संकल्प) को प्रदर्शित करता है। स्वामित्व योजनाग्रामीण संपत्तियों का आर्थिक लाभ प्राप्त करने केतकनीकी क्रियाकलापों की परिवर्तनकारी शक्ति का प्रमाण है। यह योजना ग्रामीण परिवारों को सशक्त बनाती है और विकसित भारत में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को भी मजबूत करती है।

स्वामित्व एक योजना से कहीं अधिक है।यह एक आत्मनिर्भर ग्रामीण भारत के लिए एक विजन है। ग्रामीणों को उनकी संपत्तियों को भुनाने के लिए उपकरण प्रदान करके, यह उद्यमशीलता और नवाचार को बढ़ावा देता है। जैसे-जैसे ग्रामीण क्षेत्र आर्थिक रूप से अधिक जीवंत होते जाते हैं, वे राष्ट्र के समग्र विकास पथ में योगदान करते हैं।

स्वामित्व योजना की सफलता इसके निरंतर विकास की मांग करती है। जागरूकता अभियानों का विस्तार यह सुनिश्चित करेगा कि प्रत्येक पात्र ग्रामीण परिवार संपत्ति कार्ड से लाभान्वित हो। वित्तीय संस्थानों के साथ सहयोग द्वारा ऋण तक पहुंचना और सरल बन सकता है। वहीं,कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) और मशीन लर्निंग (एमएल) जैसी नई तकनीकों को आपस में जोड़कर ग्रामीण नियोजन के लिए डेटा विश्लेषण को बढ़ाया जा सकता है।

इसके अलावा, योजना की संरचना समान भूमि प्रशासन संबंधी चुनौतियों से जूझ रहे अन्य देशों के लिए एक मॉडल हो सकती है। इस क्षेत्र में भारत का नेतृत्व इसे ग्रामीण विकास के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने में वैश्विक अग्रणी के रूप में स्थापित करता है।

स्वामित्व संपत्ति कार्ड पहल सिर्फ एक दस्तावेजीकरण अभियान से कहीं ज्यादा है।यह ग्रामीण संपत्तियों का आर्थिक लाभ प्राप्त करने, वित्तीय स्वतंत्रता को बढ़ावा देने और समग्र ग्राम विकास को सक्षम करने का एक सशक्त माध्यम है। भूमि प्रशासन में लंबे समय से चली आ रही चुनौतियों का समाधान करके, यह ग्रामीण समुदायों को गरीबी के चक्र से मुक्त होने और विकास के अवसरों को अपनाने के लिए सशक्त बना रहा है।

यह योजना तेजी से आगे बढ़ रही है।यह अभिनव नीति निर्माण और तकनीकी क्रियाकलाप की परिवर्तनकारी शक्ति का प्रमाण बन रही है। स्वामित्व के जरिए, एक समृद्ध, आत्मनिर्भर ग्रामीण भारत का सपना निरंतर साकार हो रहा है।स्वामित्व संपत्ति कार्ड जारी होने से लाखों ग्रामीण परिवारों के पास अब एक मान्यता प्राप्त वित्तीय संपत्ति उपलब्ध है। इसने (1) ग्रामीण भारत में छोटे और मध्यम उद्यमों (एसएमई) का फलना-फूलना, (2) ग्रामीण परिवारों को शिक्षा, आवास या व्यवसाय शुरू करने के लिए बैंक ऋण सुरक्षित करना, और (3) बेहतर घरेलू आय और आर्थिक स्वतंत्रतानिम्नलिखित के लिए रास्ते खोले हैं। मध्य प्रदेश और राजस्थान मेंसंपत्ति मालिकों ने बैंक ऋण प्राप्त करने, आवास सुविधा में निवेश करने और परिवार द्वारा संचालित व्यवसायों का समर्थन करने के लिए स्वामित्व कार्ड का सफलतापूर्वक उपयोग किया है।स्वामित्व संपत्ति कार्ड केवल एक दस्तावेज नहीं है - यह वित्तीय स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता और सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण की कुंजी है।

मिर्जा गालिब: शायरी और गजल के शिखर फनकार थे

ललित गर्ग

मिर्जा असदुल्लाह बेग खान, जो अपने तखल्लुस गालिब से जाने जाते हैं, उर्दू एवं फारसी भाषा के एक महान शायर थे। इनको उर्दू भाषा का सर्वकालिक एवं सार्वदैशिक महान शायर माना जाता है और फारसी कविता के प्रवाह को हिन्दुस्तानी जबान में लोकप्रिय बनाने वाले वे एक महान-फनकार थे। हर मोहब्बत करने वाला आशिक मिर्जा गालिब के शेर, शायरी और गजल जरूर पढ़ता है। हर कोई उनकी शायरी का कायल है। मिर्जा गालिब सर्व-धर्म-सद्भाव एवं मानवीय चेतना के चितेरे थे एवं गहन संवेदनाओं के शिखर सृजनकार थे। गालिब का व्यक्तित्व बड़ा ही आकर्षक एवं बहुआयामी था। गालिब में जिस प्रकार शारीरिक सौंदर्य था, उसी प्रकार उनकी प्रकृति में विनोदप्रियता तथा वक्रता भी थी और ये सब विशेषताएं उनकी कविता एवं शायरी में यत्र-तत्र झलकती रहती हैं। चिन्ताओं से संघर्ष में इनकी सहायक एक तो थी शराब, जिन्दगी के अंतिम समय में जुए की लत भी लग गई। उन्हें शुरू से शतरंज और चौसर खेलने की आदत थी। अक्सर मित्र-मण्डली जमा होती और खेल-तमाशों में वक्त कटता था। अपने मदिरा प्रेम के कारण जो भाव प्रकट किए हैं, वे शेर ऐसे चुटीले तथा विनोदपूर्ण हैं कि उनका जोड़ उर्दू कविता में अन्यत्र नहीं मिलता। गालिब ने शायरी और गजल को एक नया रूप दिया। गालिब के पहले गजल को केवल प्रेम के संदर्भ में देखा जाता है लेकिन उन्होंने गजल में ही जीवन के दर्शन और रहस्यों को दर्शाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अपनी शायरी के कारण वे न सिर्फ हिन्दुस्तान बल्कि पूरी दुनिया में मशहूर हैं। आज भी उनका नाम बड़े अदब के साथ लिया जाता है।

गालिब की प्रारम्भिक शिक्षा के बारे में स्पष्टतः कुछ कहा नहीं जा सकता। उन्होंने अधिकतर फारसी और उर्दू में पारम्परिक मानवीयता, भक्ति और सौन्दर्य रस पर रचनायें लिखी। उन्होंने फारसी और उर्दू दोनो में पारंपरिक गीत काव्य की रहस्यमय-रोमांटिक शैली में सबसे व्यापक रूप से लिखा और यह गजल के रूप में जाना जाता है। उनकी शायरियों में गहन साहित्य और क्लिष्ट भाषा का समावेश था। उन्होंने अपनी शायरी का बड़ा हिस्सा असद के नाम से लिखा है। गालिब हिंदुस्तान में उर्दू अदबी के दुनिया के सबसे रोचक किरदार थे। उनकी जड़ें तुर्क से थीं। वे फारसी कविता को भारतीय भाषा में लोकप्रिय करने में माहिर थे, उन्हें पत्र लिखने का बहुत शौक था। इसीलिए उन्हें पत्र-पुरोधा भी कहा जाता था। आज भी उनके पत्रों को उर्दू साहित्य में एक अहम विरासत माना जाता है। मिर्जा गालिब ने 11 वर्ष की छोटी उम्र में ही अपनी पहली कविता लिखी थी। मिर्जा गालिब की मातृभाषा उर्दू थी लेकिन तुर्की और फारसी भाषाओं पर भी उनकी अच्छी पकड़ थी। उन्होंने अरबी, फारसी, दर्शन और तर्कशक्ति का भी अध्ययन किया था।

गालिब इश्क को जीते थे। वह इश्क का आखिरी छोर थे। उनकी नज्में और शेर ने सालों साल इश्क की तहजीब दुनिया को दी है। अगर हम यूं कहें कि इश्क गालिब से शुरू होता है तो यह कोई आश्चर्यजनक बात नहीं होगी। उनका हर शेर एक जिंदादिल आशिक की तरह इश्क की रस्मों को निभाता है। उनका जीवन संघर्ष से भागते या पलायन करते हुए नहीं बिता और न इनकी कविता एवं शायरी में कहीं निराशा का नाम है। वह इस संघर्ष को जीवन का एक अंश तथा आवश्यक अंग समझते थे। मानव की उच्चता तथा मनुष्यत्व को सब कुछ मानकर उसके भावों तथा विचारों का वर्णन करने में वह अत्यन्त निपुण थे और यह वर्णनशैली ऐसे नए ढंग की है कि इसे पढ़कर शताब्दियों बाद भी पाठक मुग्ध हो जाता है।

मिर्जा का जीवन अनेक विलक्षणताओं एवं विशेताओं का समवाय था। उनके विषय में पहली बात तो यह है कि वह अत्यन्त शिष्ट, शालीन एवं मित्रप्रेमी थे। जो कोई उनसे मिलने आता, उससे खुले दिल से मिलते थे। इसीलिए जो आदमी एक बार इनसे मिलता था, उसे सदा इनसे मिलने की इच्छा बनी रहती थी। मित्रों के प्रति अत्यन्त वफादार थे। उनकी खुशी में खुशी, उनके दुःख में दुःखी। मित्रों को देखकर बाग-बाग हो जाते थे। उनके मित्रों का बहुत बड़ा दायरा था। उसमें हर जाति, धर्म और प्रान्त के लोग थे। वैसे वे शिया मुसलमान थे, पर मजहब की भावनाओं में बहुत उदार और स्वतंत्र चेता थे। गालिब सदा किराये के मकानों में रहे, अपना मकान न बनवा सके। ऐसा मकान ज्यादा पसंद करते थे, जिसमें बैठकखाना जरूर हो और उनके दरवाजे भी अलग हों, जिससे यार-दोस्त बेझिझक आ-जा सकें।

संक्षिप्त खबरें

भारतीय युवा शक्ति संघर्ष मोर्चा का हुआ विस्तार

छपरा सदर। गुरुवार को सामाजिक संगठन भारतीय युवा शक्ति संघर्ष मोर्चा के अध्यक्ष अमित नयन ने बताया कि संगठन के सचिव मंडल का विस्तार किया गया है। अब सचिव मंडल में कल 7 सदस्य हो गए हैं। नए सदस्यों के में सह सचिव के रूप में विकास कुमार गुप्ता, सुमित कुमार सिंह, उपाध्यक्ष के रूप में दिलीप वर्मा, संजना मिश्रा, एवं कोषाध्यक्ष के रूप में ऐश्वर्या सोनी को संगठन के अध्यक्ष अमित नयन एवं सचिव रोहित रमन सिंह ने संयुक्त रूप से सचिन मंडल के सदस्य के रूप में मनोनीत किया। अध्यक्ष अमित नयन ने नए सदस्यों को बधाई देते हुए कहा कि संगठन के विस्तार को युद्ध स्तर पर ले जाना है ताकि संगठन के मूल भाव की ओर तेजी से काम किया जा सके। वहीं सचिव रोहित रमन सिंह ने कहा कि भारतीय युवा शक्ति संघर्ष मोर्चा सामाजिक सरोकार के लिए निरंतर काम करने की दिशा में अग्रसर है नए साथियों का साथ संगठन को आगे बढ़ाने का काम करेगा।

राष्ट्रीय एथलीटों ने दी राष्ट्रीय कोच संजय सिंह को सांत्वना

कोपा / राष्ट्रीय एथलेटिक कोच संजय कुमार सिंह से मिलने वालों का तांता लगा हुआ है। इनकी धर्मपत्नी कुमारी नीलम सिंह का विगत शनिवार को असामयिक निधन हो गया था। वे भाजपा के प्रांतीय नेत्री थीं। संजय सिंह राष्ट्रीय एथलेटिक कोच और वीनर्स स्पोर्ट्स क्लब सम्होता के संस्थापक हैं। गुरुवार को राष्ट्रीय पदक विजेता सह प्रशिक्षक रेलवे स्पोर्ट्स टीम सोनपुर तथा वालीबाल राष्ट्रीय प्रशिक्षक कोच हरेंद्र दास और राष्ट्रीय खिलाड़ी इसीआर हाजीपुर के हुकूम सिंह सम्होता आए और संजय सिंह को सांत्वना दिए। दोनों ही खिलाड़ियों ने बताया कि नीलम जी के हाथों से हमें कई बार भोजन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। संजय ने अपने साथियों से बताया कि मुझे इस मुकाम तक पहुंचाने में मेरी पत्नी का बहुमूल्य सहयोग है।इस मौके पर राष्ट्रीय पदक विजेता शह प्रशिकक्षक रेलवे स्पोर्ट्स टीम सोनपुर शक्ति सिंह, मुकेश यादव और टीकू सिंह समेत कई खिलाड़ी मौजूद थे।

आपसी विवाद में तीन घायल

परसा।थाना क्षेत्र के पूरे छपरा शोभा टोला में आपसी विवाद में हुई मारपीट में दो महिला समेत तीन घायल. सभी घायलों का परिजनो द्वारा आनन फानन में प्राथमिक उपचार हेतु परसा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र परसा में भर्ती कराया गया.जहां चिकित्सकों द्वारा प्राथमिक उपचार किया गया।वही बहेतर इलाज के लिए टुनटुन पंडित को चिकित्सकों ने बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल रेफर कर दिया।घायलों में शोभा टोला निवासीटुनटुन पंडित की पत्नी बबिता देवी, मंटू पंडित की पत्नी सरिता देवी, एवं स्व सुपन पंडित का पुत्र टुनटुन पंडित बताया जाता है।

नीतीश कुमार की सरकार में महिलाएं सशक्त और आत्मनिर्भर बन रही है : भारती मेहता

नारी शक्ति रथ के साथ जदयू प्रदेश महिला सेल के अध्यक्ष पहुंचने पर कार्यकर्ताओं ने कया स्वागत

प्रात :किरण संवाददाता

छपरा । नीतीश कुमार सरकार में महिलाओं को सम्मान मिला है, महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया गया है, महिलाओं के कल्याण के लिए अनेको कार्यक्रम चलाई जा रही है, जिससे बिहार की महिलाएं आत्मनिर्भर बन रही है । गुरुवार को स्थानीय परिसदन में महिला संपर्क यात्रा के तहत नारी शक्ति रथ के साथ जदयू अति महिला प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष सह प्रदेश प्रवक्ता डॉ भारती मेहता के पहुंचने पर जिला जदयू महिला प्रकोष्ठ के अध्यक्ष कुसुम देवी एवं जदयू मुख विंग के जिला अध्यक्ष अल्ताफ आलम राजू सहित अन्य कार्यकताओं ने जमकर स्वागत किया । इस अवसर पर परिसदन में पत्रकारों से बात करते हुए अति पिछड़ा महिला प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष सह प्रवक्ता भारती मेहता ने कहा कि महिला संपर्क यात्रा का उद्देश्य महिलाओं से संपर्क कर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार द्वारा चलाई जा रही कल्याणकारी योजनाओं से उन्हें अवगत कराना है। उन्होंने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि सुशासन की सरकार में लगभग 19 साल से महिलाओं को मान सम्मान मिल रहा है, और सरकार में महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में बेहतर प्रयास कर रही है, कल्याणकारी योजनाओं का लाभ लेकर महिलाएं आत्मनिर्भर बन रही है । भारती मेहता ने कहा कि बिहार के अधिकांश महिलाएं नीतीश कुमार के साथ है, पूरे बिहार में नारी शक्ति रथ भ्रमण कर रही है । वैशाली में महिला संपर्क यात्रा समाप्ति के बाद आज छपरा मुख्यालय पहुंची है । आगामी 30 दिसंबर तक नारी शक्ति रथ विभिन्न प्रखंडों में नारी शक्ति रथ के साथ दौरा करेगी, और महिलाओं से संपर्क कर सरकार के नीतियों से महिलाओं को अवगत कराया जाएगा। प्रेस कॉन्फ्रेंस में महिला प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष भारती मेहता ने यह भी कहा कि बिहार की महिलाएं मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के साथ खड़ी है, जिसका परिणाम आने वाला विधानसभा चुनाव 2025 में देखने को मिलेगा। उन्होंने मीडिया से बात करते हुए कहा कि नीतीश कुमार के निर्देश पर कई प्रकोष्ठ के रात पूरे बिहार में भ्रमण कर रही है, और जनता को जागृत करने का काम कर रही है। उन्होंने कहा कि सुबे की महिलाओं का विश्वास नीतीश कुमार के प्रति बढ़ा है, और सरकार भी महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया है, जिसका परिणाम है कि बिहार की महिलाएं अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो चुकी है। इस अवसर पर अनेको महिला एवं पुरुष कार्यकर्ता उपस्थित थे। जिसमें मुख्य रूप से महिला प्रकोष्ठ के जिला अध्यक्ष कुसुम देवी ,उषा सिंहा,पूजा शर्मा,अनीता मिश्रा,रेणुका कुशवाहा,शोभा देवी,राजकुमारी विभु,लालमुनि देवी,कुमारी गुड्डी जायसवाल,कुसुम रानी,शकीला बानो, चांदनी सिंह ,रिंकी देवी एवं श्वेता कुमारी सहित बड़ी संख्या में महिला कार्यकर्ता शामिल थी ।

आपसी विवाद में जमकर मारपीट में एक कि मौत, कई लोग घायल

प्रात :किरण संवाददाता

बगहा। रामनगर में आपसी विवाद में जमकर मारपीट हुई है। इस मारपीट की घटना में एक युवक की मौत हो गई है जबकि कई लोग जख़्मी हो गए हैं। घायलों में महिलाएं भी शामिल हैं। इन सभी को इलाज के लिए रामनगर उप स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया है। इधर शव को कब्जे में लेकर पुलिस मामले की छानबीन में जुटी है। पूरा मामला रामनगर थाना क्षेत्र के वार्ड नं 01 मुडीला की है। रामनगर पीएचसी प्रभारी डॉ. चंद्रभूषण ने बताया कि कुल 5 लोग अस्पताल में एडमिट किए गए जिसमें से एक की हालत गंभीर थी। लिहाजा उसे रेफर कर दिया गया। वहीं बाकी चार लोगों का इलाज चल रहा है। एक युवक मृत अवस्था में आया था। नतीजतन पुलिस को सूचना दे दी गई है। पुलिस ने शव को अपने कब्जे में ले लिया है।

ठाढ़ी में निःशुल्क चिकित्सा स्वास्थ शिविर का आयोजन

प्रात :किरण संवाददाता

बगहा। रामपुरवा मुखिया प्रतिनिधि सुमन सिंह के सौजन्य से इंडो नेपाल सीमावर्ती स्थित अति पिछड़ा गांव ठाढ़ी में चिकित्सा शिविर का आयोजन वृहस्पतिवार को लगाया गया।इस शिविर में मानव स्वास्थ्य की जांच के बाद निःशुल्क द्वारा का वितरण किया गया। मुखिया प्रतिनिधि सुमन सिंह ने बताया कि ठाढ़ी गांव में स्वास्थ्य शिविर लगाकर लोगों को निःशुल्क दवा दिया गया है।जिससे इस क्षेत्र के लोग स्वास्थ सेवा से लाभान्वित हुए। डॉक्टर पीएचओ घेवरचंद,एएनएम पूजा कुमारी समेत वाल्मीकिनगर थानाध्यक्ष संजय कुमार सिंह,ठाढ़ी वार्ड सदस्य व कई गण्यमान्य लोग उपस्थित थे।

भाकपा की स्थापना के 99 वीं वर्ष गांठ पर मोटरसाइकिल रैली का आयोजन

प्रात :किरण संवाददाता

बेतिया। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना के 99 वीं बर्ष गांठ एवं शताब्दी बर्ष शुरू होने के अवसर पर भाकपा के जिला कार्यालय में पार्टी का झंडा फहरा कर तथा शहिद वेदी पर माल्यार्पण कर किया गया, उसके बाद पार्टी कार्यकताओं ने बेतिया शहर में बाईक रैली निकाल कर शहर के विभिन्न मार्गो से होते हुए किसान मजदूरों की पार्टी भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, छात्र नौजवानों की पार्टी भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, जूल्म और शोषण के खिलाफ लडने वाली पार्टी भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, भाकपा का शताब्दी बर्ष जिन्दाबाद का नारा लगाते हुए पार्टी कार्यालय बलिराम भवन पहुंचे जहां सभा का आयोजन कर पार्टी के 100 बर्षो के गौरवशाली इतिहास पर प्रकाश डालते हुए वक्ताओं ने जनता के जीवन से जुड़े सवालों पर संघर्ष तेज करने का आह्वान किया, आज सत्ता में बैठी शक्तियां संविधान एवं लोकतंत्र के साथ साथ धर्मनिरपेक्षता को समाप्त करने पर तुली हुई है, गरीबों किसानों, नौजवानों महिलाओं के हक पर लगातार चोट किया जा रहा है, बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी भ्रष्टाचार सुड़सा की तरह मुह बढाती जा रहीं हैं इसके खिलाफ संघर्ष तेज करने का संकल्प लिया गया, सभी पार्टी शाखाओं, अंचलों में पार्टी सदस्यता नवीकरण के साथ साथ पार्टी शताब्दी समारोह आयोजित करने नये लोगों खास कर महिलाओं, नौजवानों, अल्पसंख्यकों को पार्टी से जोड़ कर पार्टी के कतार को मजबूत करने का संकल्प लिया गया। झंडोत्तोलन एवं सभा की अध्यक्षता पार्टी के बरिष्ठ साथी अहमद अली ने किया, सभा को पार्टी के राज्य नेता विजयशंकर सिंह, जिला सचिव ओम प्रकाश क्रांति, बब्लू दूबे, राधामोहन यादव, अशोक मिश्र, लक्की, सुबोध मुखिया बाबूलाल चौरसिया रंजना चौहान, कृष्ण नन्द सिंह, खलिकुज्जमा, चन्द्रिका प्रसाद, ज्वाला कांत द्विवेदी, कैलाश दास, एन डी तिवारी, तारिक, चन्द्र भूषण सिंह, शिवजी राय, ध्रुव नाथ तिवारी, संजय सिंह, तारकेश्वर सहनी, मदन शर्मा, मोहन यादव आदि ने संबोधित किया।

28 को जिला निबंधन एवं परामर्श केंद्र डीआरसीसी के प्रांगण में जॉब कैम्प का आयोजन

हेल्प सेन्टर के दूरभाष संख्या-06254-295737 पर अभ्यर्थी संपर्क कर सकते हैं

प्रात :किरण संवाददाता

बेतिया(घनश्याम)। श्रम संसाधन विभाग द्वारा जिला निबंधन एवं परामर्श केंद्र (डीआरसीसी) के प्रांगण में 28 दिसंबर 2024 को जॉब कैम्प का आयोजन किया जाना है। इस दिन पूर्वाह्न 11.00 बजे से अपराह्न 04.00 बजे तक इच्छुक अभ्यर्थी जॉब कैम्प में नियोजक से जॉब के विषय में जानकारी प्राप्त कर अपना आवेदन/बायोडाटा जमा कर सकते हैं। इच्छुक अभ्यर्थी का एनसीएस पोर्टल पर निबंधन कराना अनिवार्य है। जिला नियोजन पदाधिकारी मुकुंद माधव द्वारा बताया गया कि निजी नियोजक द्वारा स्वतंत्र फिल्ड ऑफिसर के पद पर कार्य करने हेतु इच्छुक कुल-30 अभ्यर्थियों का चयन किया जायेगा। कंपनी द्वारा चयनित अभ्यर्थियों को 11100-15000 रूपया प्रतिमाह मानदेय प्रदान की जायेगी। कार्यस्थल पश्चिम चम्पारण जिला होगा। उन्होंने बताया कि अभ्यर्थियों की सुविधा के लिए जिला नियोजनालय में दूरभाष संख्या-06254-295737 पर हेल्प सेन्टर बनाया गया है। अभ्यर्थी विशेष जानकारी के लिए हेल्प सेन्टर पर संपर्क कर सकते हैं।

डीएम ने वितरित किया साईकिल एवं आईएस बॉक्स

प्रात :किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय।जिला पदाधिकारी अमन समीर के द्वारा प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के तहत साइकिल स आइस बॉक्स का 15 लोगो के बीच वितरण किया गया इस योजना के तहत 40% अनुदान पर एवं महिलाओं को 60% अनुदान पर साइकिल स आइस बॉक्स का वितरण किया गय ' जिला पदाधिकारी महोदय ने सभी को संबोधित करते हुए कहा की यह सरकार के द्वारा चलाई गई योजना से स्वच्छ एवं स्वास्थ्यवर्धक मछलियों को उपभोक्ताओं के बीच पहुंचने में कारगर सिद्ध होगा ' जिले में मत्स्य का उत्पादन जितने तेजी से हो रही है उसके लिए बाजार का होना आवश्यक है सरकार इसके लिए लगातार प्रयत्नशील है क इस अवसर पर जिला पदाधिकारी के अलावा श्री प्रदीप कुमार जिला मत्स्य पदाधिकारी, नरेंद्र कुमार, अमृता रंजन, आस्था मिश्रा, श्रीमती चंचल, अख्तर हुसैन, श्री राजू कुमार मत्स्य विकास पदाधिकारी, श्री अंकित कुमार, श्री राम विचार मांझी मत्स्य प्रसार पदाधिकारी, श्री श्रवण पंडित कनिय अभियंता, मत्स्य जीवी सहयोग समिति के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

आरपीएफ व रक्सौल थाना की संयुक्त छापेमारी में करोड़ों रुपए मूल्य के चाइनीज कॉस्मेटिक और इलेक्ट्रॉनिक सामान के साथ गिरफ्तार

प्रात :किरण संवाददाता

रक्सौल। रक्सौल आरपीएफ एवं पुलिस से गुप्त सूचना के आधार पर संयुक्त रूप छापेमारी करते हुए शहर के नागा रोड से करोड़ों रुपए मूल्य के चाईनीज कॉस्मेटिक एवं इलेक्ट्रॉनिक सामान बरामद किया है। मिली जानकारी के अनुसार नागा रोड निवासी शिव प्रसाद के घर स्थित गोदाम से 20 पेटी प्रतिबंधित चाईनीज सामान बरामद किया गया है, जिसका अंतराष्ट्रीय कीमत लगभग दो करोड़ आंकी गई है। जिसकी जानकारी देते हुए आरपीएफ इंस्पेक्टर ऋतुराज कश्यप ने बताया कि मंगलवार को उक्त माल की बुकिंग करने के लिए रक्सौल पार्सल में कुछ लोग गए थे, लेकिन माल लेकर स्टेशन पर नहीं गए थे, जिसके कारण बुकिंग नहीं हुई। इसकी भनक लगते ही आरपीएफ निरीक्षक आर. आर. कश्यप ने पता लगाया कि क्या माल था, जिसकी बुकिंग नहीं हुई, तो पता चला कि चीन से अवैध रूप से लाए गए चाइनीज कॉस्मेटिक और इलेक्ट्रॉनिक सामान है।जिसका भंडारण नागा रोड निवासी शिव प्रसाद और अजय कुमार के घर में बने गोदाम में किया गया है, जिस घर के गोदाम में छापेमारी हुआ, उस मकान पर जानवी ट्रेडर्स प्रोपराइटर अजय कुमार लिखा हुआ है। जिसमें छापेमारी रक्सौल थानाध्यक्ष राजीव नंदन सिन्हा और आरपीएफ इंस्पेक्टर द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। इस दौरान उक्त गोदाम से 20 पेटी माल निकला, जिसमें उक्त सामान रखा गया था। इस धंधा में शामिल होने के आरोप में सिसवा निवासी संजय पटेल और गांधी नगर वार्ड नंबर 9 निवासी रिजवान आलम को गिरफ्तार कर अनुसंधान प्रारंभ कर दिया गया है। आरपीएफ इंस्पेक्टर श्री कश्यप ने बताया कि रिजवान को माल मछली बाजार निवासी रूपेश यादव नामक आदमी ने दिया था, जो अभी गिरफ्त से बाहर है। इतना भारी मात्रा में चाइनीज आइटम नेपाल के रास्ते रक्सौल में आखिर कैसे आया यह सबसे बड़ा सवाल है। इसके पूर्व में भी स्टेशन से 9598 पीस चाइनीज ई-सिगरेट बरामद किया गया था, जो कि भारत में प्रतिबंधित होने के बाद भी अवैध रूप में रक्सौल पहुंचा था।

नगर निगम के कुछ वार्डों में पार्षदों द्वारा अपने सगे संबंधियों के खाते में सफाई कर्मियों के नाम पर हो रहे अवैध उगाही पर अविलम्ब रोक लगाओ : रवीन्द्र कुमार रवि

संविदा एवं दैनिक कर्मियों का वेतनमान 21 हजार रुपये दिया जाए : मुन्नी देवी

- नगर निगम, बेतिया से सेवा निवृत्त मृत एवं कार्यरत कर्मचारियों का पंचम,षष्ठम, एवं सप्तम वेतनमान का अंतर राशि का भुगतान विभागीय पत्र के आलोक में शीघ्र करने की गारंटी करो : एसोसिएशन
- बेतिया नगर निगम में करोड़ों रुपये की सरकारी राशि की लूट के मामला में संगठित गिरोह को गिरफ्तार कर नौकरी से बर्खास्त करो : टीआईसीयू

प्रात :किरण संवाददाता

बेतिया। ऑल इंडिया म्युनिसिपल वर्कर्स एसोसिएशन के शाखा नगर निगम बेतिया की ओर से एक दिवसीय धरना श्रीमती मुन्नी देवी की अध्यक्षता में किया गया ।धरना का संचालन हरेन्द्र राउत ने किया।ऑल इंडिया म्युनिसिपल वर्कर्स एसोसिएशन के जनरल सेक्रेटरी सह ट्रेड यूनियन सेन्टर ऑफ इंडिया के राज्य संयोजक कॉमरेड रवीन्द्र कुमार ह्यरविह्न ने कहा कि शहरी निकाय के सफाई कर्मचारियों द्वारा महामारी जैसे समय में भी सफाई कर्मचारी अपने जान जोखिम में डाल कर काम करते हैं। तभी भी नगर निकाय के कर्मचारियों के अधिकार के प्रति केंद्र व राज्य सरकारें काफी उदासीन है। फलस्वरूप 8 दशक बाद की आजादी में भी दास प्रथा की जिन्दगी जीने के लिए सफाई कर्मी मजबूर है। आगे उन्होंने कहा कि आसमान छूती महंगाई में स्थायी पदों को समाप्त कर सरकार द्वारा एनजीओ प्रथा, निजीकरण, कम मजदूरी में दास प्रथा की ओर धकेलने का प्रयास किया जा रहा है। जनरल सेक्रेटरी रवीन्द्र कुमार ह्यरविह्न ने बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को आड़े हाथों लेते हुये कहा कि वर्ष 2021 में शहरी निकाय कर्मचारियों की अनिश्चितकालीन हड़ताल के दरम्यान 6 सितंबर 2022 को तत्कालीन उपमुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव और यूनियन्स के नेताओं के बीच वार्ता हुयी थी।वार्ता में तत्कालीन उपमुख्यमंत्री श्री यादव के आश्वासन पर अनिश्चितकालीन हड़ताल को स्थगित करने के बावजूद आज 3 वर्ष गुजर जाने पर भी सरकार कुंभकर्णी निंद्रा में सोई हुई है। एसोसिएशन के जनरल सेक्रेटरी ने जोर देकर कहा कि नीतीश कुमार और भाजपा की डबल इंजन की सरकार, नगर निकायों से एनजीओ प्रथा की समाप्ति, दैनिक एवं संविदा व आउट सोर्स कर्मचारियों का नियमितीकरण एवं स्थाई कर्मचारियों की समस्याओं का समाधान के लिये किये गयें अपने वादें को शीघ्र पुरा करें। एसोसिएशन के अध्यक्ष मुन्नी देवी और सचिव हरेन्द्र राउत ने कहा कि यदि सरकार 28 जनवरी 2025 तक एसोसिएशन के नेताओं के साथ निकाय कर्मचारियों की सभी लंबित 7 सूत्री मांगों पर सम्मानजनक वार्ता कर पूरा नहीं करती है तो 29 जनवरी 2025 से बेतिया नगर निगम में सफाई कर्मचारियों द्वारा एक बार फिर आर-पार की लड़ाई के साथ अनिश्चितकालीन चक्का जाम किया जाएगा। धरना में निगम के नेताओं द्वारा अपनी मांगों का एक ज्ञापन महापौर श्रीमती गरिमा देवी सिकारिया,

नगर आयुक्त और जिला समाहर्ता महोदय को 7 सूत्रीं मांगों में जैसे सेवानिवृत्त मृत एवं कार्यरत कर्मियों का पंचम षष्ठम एवं सप्तम वेतनमान का अंतर राशि का भुगतान विभागीय पत्र के आलोक में शीघ्र किया जाए, सेवानिवृत कर्मियों का पेंशन भुगतान अबिलम्ब करने,मृत कर्मियों के परिवार के सदस्यों का पेंशन भुगतान देने, संविदा एवं दैनिक कर्मियों का 21हजार रुपए का न्यूनतम मजदूरी देने की गारंटी करने, नगर निगम के वार्ड संख्या 22, 29, 40 एवं 44 में फर्जी सफाई कर्मियों के नाम पर हो रहे अवैध उगाई पर रोक लगाने,कर्मियों को पीएफ का कटौती पैसों का पूर्ण जानकारी देने, नगर निगम में 2021 से करोड़ों सरकारी राशि की लूट में शामिल संगठित गिरोह के लोगों को शीघ्र गिरफ्तार करने और उन्हें नौकरी से बर्खास्त करने आदि मांगों का एक ज्ञापन सौपा गया। मौके पूर्व पार्षद श्रीमती रीता रवि,भरत शर्मा, अशर्फी राम,स्वामी नाथ राउत, संजय राउत, ज्योति देवी,रघुनाथ राउत, हरिशंकर प्रसाद, आशा देवी, अयोध्या राउत,प्रमिला देवी,रामेश्वर राउत,मीरा देवी,शिवकली देवी,ध्रुवपति देवी,अवधेश राउत,सुधीर कुमार राउत,गायत्री देवी,मेघू राउत, कैलाशी देवी सहित दर्जनों कर्मी उपस्थित थें।

भारत में कम्युनिस्ट आंदोलन का साहस त्याग बलिदान की गौरवमयी इतिहास है : भाकपा माले

प्रात :किरण संवाददाता

बेतिया। ाकपा माले ने भारतीय कम्युनिस्ट आंदोलन का शताब्दी वर्ष पर फासीवाद विरोधी संघर्ष और लोकतंत्रिक शक्तियां विषय पर परिचर्चा का आयोजन किया, परिचर्चा के मुख्य अतिथि भाकपा माले केन्द्रीय कमिटी सदस्य सह सिकटा विधायक वीरेंद्र प्रसाद गुप्ता ने कहा कि 100 सालों में कम्युनिस्टों ने जो व्यक्ति गत ईमानदारी व सार्वजनिक नैतिकता का जो परिचय दिया है, वह भारतीय राजनीति में उसकी कोई मिसाल नहीं है। अगर हमें एक भ्रष्टाचार मुक्त समाज बनाना है। तो यह कम्युनिस्टों के नेतृत्व में ही सम्भव है. आगे कहा कि कम्युनिस्टों ने साम्प्रदायिकता के खिलाफ बिना कोई समझौते किये आंदोलन जारी रखा है। इसके लिए कम्युनिस्टों का कोई विकल्प नहीं। जाति के नाम पर राजनीति बहुत हुई लेकिन जातिवाद खत्म नहीं हुआ। सिर्फ वर्गीय चेतना का विचार ही जातिवाद को खत्म कर सकता है और यह सिर्फ कम्युनिस्टों के पास है। भाकपा माले नेता सुनील कुमार राव ने कहा कि भारत के इतिहास में ते भागा और तेलांगना आंदोलन का काफी महत्वपूर्ण जगह है, यह अदभुत त्याग बलिदान की गौरवमयी वीरगाथा है। इंकलाबी नौजवान सभा जिला अध्यक्ष फरहान राजा ने कहा कि भाजपा समाज को संविधान के बल पर नहीं मनुस्मृति के बल पर चलने की कोशिश कर रहीं हैं, समाज में जाति हिंसा को बढ़ावा देने का काम कर रहीं हैं वरिष्ठ नेता दयानंद दुबे ने कहा कि जो पहले ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर कम्पनी राज और जमींदारों का कब्जा था जिसको संघर्षों के बल पर खत्म किया, कम्युनिस्टों ने बलिदान की मिशाल कायम किया है. इनके अलावा नवीन कुमार, संजय यादव, सुबास चन्द्र कुशवाहा, जवाहर प्रसाद, जितेन्द्र राम आदि नेताओं ने भी सम्बोधित किया, संचालन सुरेन्द्र चौधरी ने किया।

निबंध प्रतियोगिता एवं व्याख्यान का हुआ आयोजन

प्रात :किरण संवाददाता

छपरा सदर। गुरुवार को विश्वेश्वर दयाल सिन्हा मेमोरियल महिला महाविद्यालय,छपरा में वीर बाल दिवस के अवसर पर निबंधन प्रतियोगिता एवं व्याख्यान का आयोजन महाविद्यालय के कार्यक्रम पदाधिकारी प्रो नवलेश कुमार सिंह के नेतृत्व में किया गया। जिसमे महाविद्यालय के छात्राओं द्वारा निबंध प्रतियोगिता में हिस्सा लिया गया।बाल दिवस के अवसर पर अपने अक्षयक्षीय भाषण में बोलते हुए डॉ मनोरंजन कुमार ने कहा कि राष्ट्र का भविष्य में बच्चो एवं युवाओं की अहम भूमिका है। सामाजिक एवं सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है। डॉ विष्णमोहन कुमार द्वारा बीर बाल दिवस के अवसर पर बोलते हुए गुरु गोविंद सिंह के पुत्रों की वीरता और साहस की चर्चा करते हुए कहा गया इन वीर पुत्रो ने हंसते हंसते मृत्यु स्वीकार किया परंतु अपने माता पिता के बताए आदर्शो का त्याग नहीं किया।आज जरूरत है की हम इन वीर बालको से सिख ले और अपने जीवन में आत्मसात करे। इस कार्यक्रम में प्राचार्य डॉ मनोरंजन कुमार , डॉ विष्णमोहन कुमार,प्रो नवलेश कुमार सिंह, डॉ शोभा कुमारी,मनीष ,अमित कुमार आर्यन,कुमार,दीपावली कुमारी,सपना कुमारी, प्रीति, पूजा, रानी, सिमरन, रिंकी, आरती, अंकिता आदि ने भाग लिया।

ऑनलाइन आयोजित हुआ वीर बाल दिवस

प्रात :किरण संवाददाता

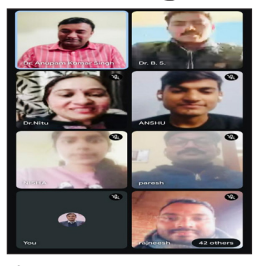

छपरा। राष्ट्रीय सेवा योजना राजेंद्र कॉलेज के तत्वावधान में वीर बाल दिवस मनाया गया। इस ऑनलाइन संगोष्ठी की अध्यक्षता प्राचार्य प्रो. सुशील कुमार श्रीवास्तव ने किया। अपने अध्यक्षीय संबोधन में उन्होंने कहा कि आज का यह दिन गुरु गोविन्द सिंह जी के दो साहिबजादों बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह के प्रति श्रद्धांजलि है जिन्होंने धर्म और सिद्धांत की रक्षा हेतु अपने बलिदान दिए। उनका यह बलिदान बताता है कि नैतिकता और सत्य के लिए खड़ा होना जीवन का सबसे बड़ा मूल्य है। कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ. अनुपम कुमार सिंह ने बताया कि आज के दिन भारत सरकार ने पहली बार ह्यवीर बच्चों का सम्मानह्न करने का निर्णय लिया है, ताकि साहिबजादों की महान वीरता और बलिदान की गाथा को देशभर में प्रचारित किया जा सके। विदित है कि विगत जनवरी 2022 को श्री गुरु गोबिंद सिंह जी के प्रकाश पर्व के दिन माननीय प्रधानमंत्री ने 26 दिसंबर को श्री गुरु गोबिंद सिंह के पुत्रों की शहादत के उपलक्ष्य में वीर बल दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की थी। बाबा जोरावर सिंह (9 वर्ष) और बाबा फतेह सिंह (7 वर्ष) ने मुगलों के सामने झुकने से इनकार कर दिया और धर्म की रक्षा के लिए अपने जीवन का बलिदान दिया। दोनों साहिबजादों को सरहिंद के नवाब द्वारा जिंदा दीवार में चुनवा दिया गया, लेकिन उन्होंने अपने विश्वास से कोई समझौता नहीं किया। गुरु गोबिंद सिंह और उनके परिवार की वीर गाथा को देश के हर कोने तक पहुंचाना, इतिहास की इन घटनाओं के माध्यम से भारतीय समाज को एकता और बलिदान का संदेश देना ही इस कार्यक्रम का उद्देश्य है। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. बेठियार सिंह साहू ने किया । इस संगोष्ठी में डॉ. देवेश रंजन, डॉ. कुमारी नीतू सिंह, डॉ. परेश कुमार, डॉ. रजनीश कुमार यादव, डॉ. धर्मेंद्र कुमार सिंह, विश्वविजय सिंह समेत कई छात्र छात्राओं की उपस्थिति रही। कार्यक्रम के अंत में छात्र-छात्राओं को बताया गया कि अपने इतिहास और संस्कृति को जानना और उसका सम्मान सभी का कर्तव्य होना चाहिए ।

जदयू महिला प्रकोष्ठ की संपर्क यात्रा पहुंची सारण

प्रात :किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। जदयू संगठन प्रभारी रणविजय कुमार एवं जिला अध्यक्ष अल्ताफ आलम राजू ने हरि झंडी दिखा कर रथ को रवाना किया। जदयू महिला प्रकोष्ठ की नारी शक्ति रथ संपर्क यात्रा बृहस्पतिवार को सारण पहुंची यहां पर प्रकोष्ठ की महिला पदाधिकारियों ने मुख्यमंत्री द्वारा महिला उत्थान के लिए किए जा रहे कार्यों को गिनाया गया। सर्किट हाउस छपरा में प्रेस से बात करते हुए महिला प्रकोष्ठ की प्रदेश अध्यक्ष डॉ भारती मेहता ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के द्वारा महिला उत्थान के लिए किए जा रहे विभिन्न योजनाओं को गिनाया गया। उन्होंने मुख्यमंत्री बालिका पोशाक योजना, साइकिल योजना, छात्रवृत्ति योजना, महिला विकास, जीविका सहित विभिन्न कार्यों को गिनाते हुए कहा कि नीतीश कुमार ने महिलाओं को आगे बढ़ाने का काम किया है। जिससे अब महिलाएं पुरुषों से कदम से कदम मिलाकर चल रही है। महिला आरक्षण और महिला कुरियर रोटेशन के बारे में विस्तृत जानकारी दी है 20साल पहले क्या थी बिहार की हालत महिलाएं घर से बाहर नहीं निकलती थीं डर लगता था जब से बिहार में नीतीश कुमार मुख्यमंत्री बने है तब से पंचायत चुनाव में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण देने का किया है। छपरा में जदयू महिला नारी शक्ति रथ 26 दिसंबर को मांझी एवं जलालपुर के समझौता 28 दिसंबर को मढ़ौरा के धेनुकी चौक एवं नगरा प्रखण्ड के गोपालपुर,29 दिसंबर को एकमा प्रखण्ड के रसूलपुर एवं लहलादपुर। 30दिसंबर को गड़खा प्रखण्ड के चस्का विवाह भवन एवं सदर प्रखण्ड के लव कुश खलपुरा में महिला जान संवाद आयोजित की गई है। मुख्य रूप से जिला अध्यक्ष कुसुम देवी ,उषा सिंहा,पूजा शर्मा,अनीता मिश्रा,रेणुका कुशवाहा,शोभा देवी,राजकुमारी विभु,लालमुनि देवी,कुमारी गुड्डी जायसवाल,कुसुम रानी,शकीला बानो, चांदनी सिंह ,रिंकी देवी, स्वेता कुमारी उपस्थित थी।

संक्षिप्त खबरें

वारंटी गया जेल

बिक्रमगंज(रोहतास) : बिक्रमगंज पुलिस ने एक वारंटी को गिरफ्तार कर जांच के उपरांत जेल भेज दिया। बिक्रमगंज थानाध्यक्ष ललन कुमार ने बताया कि पुलिस ने थाना क्षेत्र अंतर्गत अमौना टोला निवासी विजय यादव को गिरफ्तार कर जांच के उपरांत जेल भेज दिया। उन्होंने कहा कि गिरफ्तार अभियुक्त के विरुद्ध बिक्रमगंज व्यवहार न्यायालय से वारंट निर्गत था।

दिसंबर तक होगा राशन कार्डधारियों का ई-केवाईसी

बिक्रमगंज(रोहतास) : राशन कार्डधारियों का ई-केवाईसी 31 दिसंबर 2024 तक ही होगा। इसकी जानकारी बिक्रमगंज केन यूनियन प्रबंधक अंजनी कुमार तिवारी ने दी। उन्होंने कहा कि सभी राशन कार्डधारियों का ई-केवाईसी किया जा रहा है। श्री तिवारी ने बताया कि सरकार के निदेर्शानुसार जो भी लाभार्थी अभी तक राशन कार्ड में अपना ई-केवाईसी नहीं कराएं हैं वो यथाशीघ्र 31 दिसंबर 2024 तक आप कहीं से भी अपना राशन कार्ड नंबर एवं आधार कार्ड नंबर लेकर अपने नजदीकी पीडीएस दुकानदार के पास जाकर ई- केवाईसी करा लें। उन्होंने बताया कि सरकार के द्वारा अंतिम निर्धारित तिथि 31 दिसंबर तक ही ई-केवाईसी करने के लिए समय सीमा निश्चित किया गया है। मौके पर ई-केवाईसी कराने के दौरान काश्मीरी खातून, रेशमा खातून, लालती देवी, हरेंद्र सिंह, सकीना सहित अन्य लाभार्थी मौजूद रहे।

सड़क दुर्घटना में एक ही परिवार के लोग घायल

काराकाट(रोहतास) : काराकाट थाना क्षेत्र के एनएच 120 मुख्य पथ पर इटवा बाल पर बुधवार की देर शाम बिक्रमगाज से बाजार कर लौट रहे एक ही परिवार के तीन सदस्य सड़क दुर्घटना में घायल हो गए। जानकारी के मुताबिक एक ही बाइक पर सवार होकर तीन लोग बिक्रमगज से अपने गांव लौट रहे थे। तभी इटवा बाल पर पीछे से तेज रफ्तार में आ रही एक चार चक्का वाहन ने रौंद कर मौके से फरार हो गया। हादसे में तीनों बाइक सवार दूर जाकर झाड़ी में गिर गए। जिसमे बाइक भी पूरी तरह क्षतिग्रत हो गया। घटना में बाइक सवार तीनों लोग एक ही परिवार के सदस्य बताए जा रहे हैं। घटना में घायल तीनों को काफी चोटें आई है। जिनका इलाज के लिए आस पास के ग्रामीणों द्वारा बिक्रमगंज के किसी निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां तीनों घायलों की इलाज कर रहें चिकित्सकों ने नाजुक स्थिति को देखते हुए हायर सेंटर रेफर कर दिया। घटना में तीनों घायल मानिक परासी गांव निवासी केदार पाण्डेय के पुत्र रविंद्र पाण्डेय व सुनील पाण्डेय और पतोहु सरिता देवी हैं। तीनो घायलों की नाजुक स्थिति में बनारस के किसी निजी अस्पताल में इलाज जारी है।

शटर का ताला तोड़कर लाखों की चोरी

संझौली(रोहतास)। संझौली थाना क्षेत्र अंतर्गत थाना मोड़ के समीप मझौली संपर्क पथ में स्थित ऑनलाइन अमेजॉन ऑफिस कार्यालय में बीते बुधवार की रात अज्ञात चोरों ने शटर का ताला तोड़कर लाखों रुपए चोरी की घटना का अंजाम दिया है। घटना के संबंध में बताया जाता है कि ऑफिस में लगे सीसीटीवी में अज्ञात चोरों का फोटो कैमरे में कैद हो गई है। सूचना पर पहुंची पुलिस ने अमेजॉन कर्मियों से घटना की विस्तृत जानकारी लिया। अमेजॉन के कर्मी अमित कुमार ने घटना की जानकारी देते हुए बताया कि बीते मंगलवार शाम को कार्यालय का ताला बंदकर घर चले गए और अगले दिन बुधवार को क्रिसमस- डे पर ऑफिस बंद था। जब गुरुवार सुबह ऑफिस पहुंचा, तो देखा कि अज्ञात चोरों द्वारा शटर का ताला तोड़कर और काउंटर में रखे नगद करीब 93 हजार 816 चोरी कर ली गई है। इसके बाद चोरी की घटना की सूचना पुलिस को दिया। थानाध्यक्ष मुकेश कुमार ने बताया कि अमेजॉन में चोरी की घटना मामला सामने आई है। पुलिस मामले की विस्तृत जांच कर रही है।

मझौलिया थाना क्षेत्र अंतर्गत नदी किनारे अज्ञात महिला का शव बरामद

बेतिया । मझौलिया थाना क्षेत्र अन्तर्गत नदी किनारे एक अज्ञात महिला का शव मिलने से उस इलाके में सनसनी फैल गई है। मिली जानकारी के अनुसार बुद्धवार की शाम मझौलिया थाना के गढ़वा गांव के पास सिख रहना नदी के किनारे एक 25 वर्षीय अज्ञात महिला का शव बरामद किया गया। शव को पुलिस ने अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हेतु जीएमसीएच अस्पताल बेतिया भेज दिया। सूचना पाकर पहुंचे बेतिया पुलिस अधीक्षक शौर्य सुमन ने घटनास्थल का मुआयना किया एवं आवश्यक दिशा निर्देश दिया। साथ ही घटनास्थल की जांच हेतु एफ एस एल टीम तथा डॉग स्क्वाड टीम को बुलाकर घटनास्थल की जांच करने का निर्देश दिया।

आरा अंचल के आकंठ भ्रष्टाचार, मोटेशन मे लूट तथा 6000 से कम का आय प्रमाण पत्र बनाने पर खेग्रामस का धरना : क्यामुद्दीन

हक दो, वादा निभाओ आंदोलन के तहत वास, आवास, महिला सम्मान योजना, सहित 9 सूत्री मांग पर खेग्रामस का आरा अंचल पर धरना

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। हक दो वादा निभाओ आंदोलन के तहत खेग्रामस के राज्यव्यापी आह्वान पर आरा अंचल /प्रखंड कार्यालय पर धरना दिया गया. यह धरना 9 सूत्री मांग पर आयोजित हुआ. जो जहां बसे है उस जमीन का उन्हें पर्चा दो, प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ भूमिहीनों को दी जाय. लघु उद्यमी योजना के तहत 6000 से कम का आय प्रमाण पत्र बनाने, सामाजिक सुरक्षा पेंशन 3000 करने, सभी गरीब महिलाओं को महिला सम्मान योजना के तहत 2500 देने की मांग, प्रीपेड स्मार्ट मीटर रोक लगाने, 200 युनिट फ्री बिजली मुहैया कराने, मनरेगा मे 200 दिन काम और 600 मजदूरी करने, आरा प्रखंड के बाढ पीड़ितों के बकाया राशी का भुगतान शीघ्र देने, मोटेशन के नाम पर लूट तथा आरा अंचल पदाधिकारी अपने दफ्तर मे बैठे तथा प्रखंड कार्यालय के भ्रष्टाचार पर रोक लगाने की मांग पर आयोजित हुआ. इस धरना की अध्यक्षता शहरी गरीब मोर्चा के नेता लाल मोहर बिन्द ने किया तथा संचालन खेग्रामस नेता कामता प्रसाद बिन्द ने किया। धरना को संबोधित करते हुए भाकपा माले राज्य कमिटी सदस्य क्यामुद्दीन अंसारी ने कहा कि आरा अंचल कार्यालय आकंठ भ्रष्टाचार का अड्डा बन गया है मोटेशन के नाम पर भारी लूट जारी है क्यामुद्दीन अंसारी ने कहा कि गरीबों का राशन 5 केजी के जगह 4 केजी देकर भारी लूट जारी है.आरा सी. ओ.दफ्तर से लगातार फरार रहती है.बाढ रात की राशी मे भारी लूट हुई है। भाकपा माले नेता क्यामुद्दीन अंसारी ने कहा कि नीतिश भाजपा सरकार गरीब विरोधी है नीतिश राज मे नौकरशाह बे लगाम हो गये है. माले नेता ने 9 मार्च 2025 को बदलो बिहार महाजुटान मे हजारों की संख्या मे गरीबों को पटना चलने का गरीबों से आह्वान किया। खेग्रामस नेता कामता प्रसाद बिन्द ने कहा कि जो गरीब जहा ब से है सरकार उन्हें पर्चा दे.तथा सभी जरुरत मंदो को पक्का मकान बनाई जाय तथा आवास योजना मे लूट पर रोक लगाई जाय। भाकपा माले राज्य कमिटी सदस्य क्यामुद्दीन अंसारी के नेतृत्व मे 6 सदसीय प्रतिनिधि मंडल ने आरा प्रखंड विकास पदाधिकारी को 9 सूत्री मांगों का मांग पत्र दिये। आज के धरना मे सामिल प्रमुख लोगों मे राज्य कमिटी सदस्य व आरा मु. सचिव विजय ओझा.जिला कमिटी सदस्य अमित कुमार बंटी, ऐपवा नेत्री संगीता सिंह, जिला कार्यालय सचिव दिलराज प्रीतम, हरिशंकर साह, राजेन्द्र यादव, महेश पासवान, संतोष यादव, दयाशंकर सिंह, पंकज कुशवाहा, शिवनारायण साह थे।

जिला अपर मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी, भोजपुर, डॉ के एन सिन्हा को एक प्रशस्ति पत्र तथा मेडल किया प्रदान

प्रात : किरण संवाददाता

आराः,मेंडल एवं प्रशस्ती पत्र मिलने पर खुशी बिहार सरकार, स्वास्थ्य विभाग जिसका नारा है जीवंत विहार, सपना हो सरकार ,के योजना द्वारा वेक्टर जनित रोग नियंत्रण कार्यालय भोजपुर के पदाधिकारी सह जिला अपर मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी ,भोजपुर, डॉ के एन सिन्हा को एक प्रशस्ति पत्र तथा मेडल प्रदान किया गया जिस पर इनका नाम लिखा था। यह मेडल व प्रशस्ति पत्र वेक्टर जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम अंतर्गत कालाजार उन्मूलन में जिला मलेरिया कार्यालय भोजपुर के समस्त पदाधिकारी एवं कर्मियों के उत्कृष्ट कार्य हेतु सम्मिलित रूप से प्रदान किया गया। आज एसीएमओ कार्यालय, सदर अस्पताल परिसर में एक समारोह का आयोजन कर सभी को बधाई एवं शुभकामना दी गई। डॉ सिन्हा ने कहा कि यह प्रशस्ति पत्र सारे कर्मचारी के मेहनत व कर्तव्य निष्ठा का परिणाम है। इस प्रशस्ति पत्र एवं मेंडल मिलने का जश्न पर कार्यालय में सबको मिठाई खिलाया गया। इस समारोह में जिला मलेरिया कार्यालय के अजीत जी, कुमारी प्रियंका, कामेश्वर जी, अनुज जी, बीरन जी सहित तमाम कर्मचारी तथा एसीएमओ ऑफिस के बड़ा बाबू रामजी बाबू ,रविंद्र जी ,अनिल जी, ओझा जी, तारकेश्वर जी, कामिनी देवी, सुधीर जी ,नागेंद्र चौधरी , छोटू जी तथा लेप्रोसी ऑफिसर डॉ दयानंद उपस्थित थे। इस मेडल को मिलने में विशेष योगदान रहा अजीत पटेल एवं कुमारी प्रियंका जी का, जिन्होंने कालाजार के मरीजों को खोज खोज कर सब का इलाज करवाया एवं उस क्षेत्र में चारों तरफ कीटनाशक दवा का छिड़काव कराया। आज भोजपुर जिला कालाजार के रोगियों से करीब-करीब मुक्त है।

संभावना स्कूल में दो दिवसीय रजत जयंती समारोह का शुभारंभ

विधायक अमरेंद्र प्रताप सिंह व अन्य अतिथियों ने संयुक्त रूप से कार्यक्रम का किया उद्घाटन

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। शहर के शुभ नारायण नगर मझौंवा स्थित संभावना आवासीय उच्च विद्यालय के रजत जयंती के दो दिवसीय समारोह का आगाज गुरुवार को धूमधाम से हुआ। रजत जयंती समारोह का उद्घाटन आरा विधायक अमरेंद्र प्रताप सिंह, मुख्य अतिथि पूर्व सह थल सेनाध्यक्ष लेफ्टिनेंट जनरल श्रीकृष्ण सिंह, विशिष्ट अतिथि वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति आचार्य धर्मेंद्र तिवारी, कर्नल राणा प्रताप सिंह (सेनि), निदेशक डॉ. कुमार द्विजेंद्र, प्राचार्या डॉ. अर्चना सिंह ने संयुक्त रुप से दीप प्रज्वलित कर किया। प्रथम दिन वर्ग प्री प्राइमरी से लेकर 5 तक के बच्चे समारोह में शामिल हुए। संचालन वरीय शिक्षक अरविंद ओझा, छात्र आलोक आतुल्य एवं छात्रा साक्षी राज ने किया। स्वागत गीत स्कूल की छात्र-छात्राओं द्वारा पेश किया गया। इस मौके पर अतिथियों द्वारा बच्चों द्वारा निर्मित कला एवं शिल्प प्रदर्शनी का स्वावलोकन किया गया। तत्पश्चात अतिथियों द्वारा विद्यालय की स्मारिका ह्लप्रतिबिंबह्व का विमोचन किया गया। उद्घाटनकर्ता आरा विधायक अमरेंद्र प्रताप सिंह ने कहा कि संभावना स्कूल आज अपनी रजत जयंती मना रहा है। इस विद्यालय ने खुद श्रम व संसाधन के बल पर यह मुकाम हासिल किया है। हमारे देश की शिक्षा पद्धति पुरातन रही है। सबसे पहले सभ्यता की शुरूआत भारत से हुई है और दुनिया के कोने-कोने में पहुंची है। शिक्षा के महत्व को उकेरने का श्रेय इसी धरती को जाता है। इस विद्यालय में कला, साहित्य और विज्ञान का समागम दिखाई दे रहा है। इसके लिए सभी बधाई के पात्र है। मुख्य अतिथि पूर्व सह थल सेनाध्यक्ष लेफ्टिनेंट जनरल श्रीकृष्ण सिंह ने कहा कि पुराने समय में शिक्षण व्यवस्था निम्न था, जबकि शिक्षा का स्तर ऊंचा था। पहले शिक्षा पर हमें गर्व है। पहले अभिभावक बच्चों की गलती शिक्षक से बताते थे, तो बच्चे डरते थे। आज समय बदल गया है। आज शिक्षक ही बच्चे की गलती उनके अभिभावकों से बता रहें हैं। कैरेक्टर बिल्डिंग के लिए शिक्षा पद्धति को संभालना होगा। शिक्षा ही सभी चीजों की नींव है। विशिष्ट अतिथि वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति आचार्य धर्मेंद्र तिवारी ने कहा कि पुरातन संस्कृति में वर्णित है कि वह पुत्री, जो अपने दोनों वंश को पवित्र कर देती है। इसका उदाहरण विद्यालय के प्राचार्या डॉ. अर्चना सिंह है। भारत के ऋग्वेद्र को साधने का प्रयास इस विद्यालय के शिक्षण कार्य में दिखता है। विद्यालय की शिक्षा वहां के छात्र-छात्राओं से पहचानी जाती है। उन्होंने बच्चों के कला एवं शिल्प प्रदर्शनी की जमकर प्रशंसा की, कहा कि आज सभी देश के लोग दुविधा में है। जहां सुविधा है, वही दुविधा है। इसलिए बच्चों को सुविधाभोगी नही बनाएं। विद्या का मतलब सिर्फ नौकरी नहीं, बल्कि चरित्र का निर्माण होता है। संभावना प्रतीक का पहचान है। सैन्य संतुलित संविधान का नाम संभावना है। आने वाले समय में स्वच्छ नागरिक बनाने में यह विद्यालय सक्षम होगा। साधना में शक्ति है। निश्चित रुप से विद्यालय आने वाले समय में महाविद्यालय नहीं बल्कि विश्व विद्यालय बनेगा। कर्नल राणा प्रताप सिंह (सेनि) ने कहा कि विद्यालय दिन-प्रतिदिन प्रगति के पथ की ओर अग्रसर है, उन्होंने बच्चों के भी बच्चों को विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रशंसा की। निदेशक डॉ. कुमार द्विजेंद्र ने कहा कि 45 दिवसीय कार्यशाला में बच्चों ने प्रयोग कर सीखा है। इसके बाद अपनी परफॉर्मेंस दी है। इसके लिए कला शिक्षकों एवं प्रशिक्षकों की मेहनत का परिणाम है, उन्होंने कार्यक्रम को सफल बनाने में लगे शिक्षक, शिक्षिका, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों समेत अन्य को धन्यवाद दिया। प्राचार्या डॉ. अर्चना सिंह ने कहा कि बच्चों में प्रतिभा कूट-कूट कर भरी है। जरूरत है, उन्हें समय पर निखारने की। सुविधा देना गलत नहीं है, लेकिन बच्चे को सुविधाभोगी बनाना गलत है। आज के परिवेश में बच्चों को ऐसी शिक्षा दें कि वे हरेक परिस्थिति में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा सकें। हमारे शिक्षक चाणक्य के रूप में चंद्रगुप्त की खोज कर रहे हैं।

सांस्कृतिक कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं ने दिखाया जलवा

एक से बढ़कर एक प्रस्तुति देकर दर्शकों का मोहा मन

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। संभावना आवासीय उच्च विद्यालय के रजत जयंती समारोह में कार्यक्रम के दौरान विद्यालय की छात्र-छात्राओं ने अपनी कलाकारी दिखाई। एक से बढकर एक प्रस्तुति देकर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दि या। समारोह के दौरान श्रेया, आकृति, सौम्या व टीम ने स्वागत गीत पेश कर अतिथियों को मंत्र मुक्त कर दिया। तत्पश्चात मिक्स डांस दिव्या कुमारी, रेहमा तनवीर, सौरभ कुमार, श्रेया कुमारी, अंशु पाल, अयंश राज, जाह्नवी सिंह, दिव्याश कुमार, श्रेयंश पाल, अंश राज, आनंदी सिंह, आदर्श पांडेय, अकबर इमाम, विवान कुमार ने पेश किया। भोजपुरी गीत काहे ह्लकहे के त सभे केहू आपन....ह्व को आर्या, युबिका, सौम्या, खुशहाल, अभिनव, अंकुश, कृतिका, श्रेया, ऋषि ने प्रस्तुत कर श्रोताओं को भाव विभोर कर दिया। वहीं डांस ह्लचक धूम-धूम...ह्व की प्रस्तुति कर साक्षी मिश्रा, नंदनी कुमारी, कुमारी प्रियांशी, आनंदी सिंह, आरोही कुमारी, श्रेयांशी, दिव्या कुमारी, रेहमा तनवीर, श्रेया कुमारी, आदया ने खूब तालियां बटोरी। वही नाटक ह्लअंधेर नगरी चौपट राजा...ह्व का मंचन किया गया, जिसमें अयान कुमार यादव, अंशुमान पांडेय, अंकुश कुमार, विवान कुमार, दुर्गेश यादव, तान्या कुमारी, अभिनव, श्रेयाग्नी, पीयूष सिंह, प्रीति कुमारी, आशीष कुमार, सुमित कुमार, ध्रुव कुमार, वर्णित यादव, अंश कुमार, प्रियम कुमारी, मिहिर कुमार, राजवीर सिंह एवं सन्नी कुमारी ने शानदार अभिनय की प्रस्तुति दी। इधर, एकल गायन ह्लतेरे जीवन में खुशियां...ह्व को शौर्य कुमार ने प्रस्तुत किया। वहीं ह्लसड़क सुरक्षा जीवन के लिए होती है....ह्व पर आधारित गीत शिवानी, अंकित, युविका, आदित्या, अभिनव और आर्या ने प्रस्तुत किया। डांस ह्लबेटी हमरो अनमोल.....ह्व को खुशी, सगुन, श्रेया, शंगवी, सरिया, अंशिका, सौम्या, परी, श्रेया, पल्लवी, ऋषिका, जूही, आरोही एवं रोमा ने प्रस्तुत किया। माइम ह्लवेस्टेज आफ वाटर...ह्व को नवीन कुमार, रितिका, आराध्या, आरुषी, आराध्या ने प्रस्तुत कर लोगों को झूमने पर मजबूर कर दिया। राजस्थानी लोक नृत्य ह्लघूमरह्व को मानवी कुमारी, सृष्टि कुमारी, साक्षी कुमारी, आरोही सिंह, तनु कुमारी, माही कुमारी, आस्था कुमारी नेपेश कर दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया। ह्लवंदे मातरमह्व की प्रस्तुति कृतिका कुमारी, सौम्या कुमारी, आर्या कुमारी, शौर्य कुमार एवं खुशहाल राज ने पेश किया।

तृतीय भगवान बिरसा मुंडा ट्रॉफी ओपन नेशनल ताइक्वांडो चैंपियनशिप 2024, भाग लेने के 10 छात्र एवं छात्राएं रवाना हुई रांची

प्रात : किरण संवाददाता

आराःसंस्कृति पब्लिक स्कूल , कायमनगर , आरा के 10 छात्र एवं छात्राएं तृतीय भगवान बिरसा मुंडा ट्रॉफी ओपन नेशनल ताइक्वांडो चैंपियनशिप 2024 में भाग लेने हेतु खेलगांव ,रांची झारखंड के लिए रेल मार्ग से दिनांक 26 दिसंबर 2024 को प्रस्थान करेंगे ।यह प्रतियोगिता दिनांक 27 दिसंबर से 29 दिसंबर 2024 तक त्रिदिवसीय आयोजन है। ताइक्वांडो के प्रशिक्षित छात्रों में हंसी तिवारी ,सुशांत सिंह ,आशीष प्रसाद ,ऋषभ राज ,समनित नयन , नक्ष कुमार ,सुमित ,आशीष सिंह कीर्ति कुमारी एवं आदर्श कुमार है विद्यालय की प्राचार्य जाकिया यास्मीन , निदेशक डॉक्टर आलोक सिंह एवं सचिव डॉक्टर अजय सिंह ने सभी प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन करते हुए खेल को खेल भावना से खेलते हुए उत्कृष्ट प्रदर्शन कर विद्यालय के साथ अपने जिला एवं राज्य का नाम रौशन करने की सलाह दी।

गुरू गोविन्द सिंह के पुत्रो के शहादत पर वीर बाल दिवस के अवसर पर भाजपा भोजपुर द्वारा विभिन्न कार्यक्रम का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। सिकखों के दसवे गुरु गोबिंद सिंह के पुत्रो के शहादत दिन को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 16 दिसम्बर को वीर बाल दिवस के रुप में घोषित किया गया। वीर बाल दिवस के अवसर पर भारतीय जनता पार्टी भोजपुर द्वारा जिला कार्यालय में साहबजादो के शहादत और उनके जीवनी पर चित्र प्रदर्शनी लगाया गया। कार्यालय में चित्र प्रदर्शनी का अवलोकन भाजपा जिलाध्यक्ष दुर्गा राज,जिला उपाध्यक्ष ई.धीरेन्द्र सिंह,जिला मंत्री संतोष चंद्रवंशी, मीडिया प्रभारी संजय कुमार सिंह, प्रवक्ता निशांत सिंह सेंगर सहित जिला पदाधिकारी,कार्यकर्ता आदि द्वारा किया गया। वहीं महादेवा स्थित गुरूद्वारा मे सिक्ख परंपरा से वीर शहीद साहिबजादों को श्रद्धांजलि दी गई। उक्त कार्यक्रम में भाजपा जिलाध्यक्ष, विधायकगण,पदाधिकारीगण, कार्यकताओं ने श्रद्धांजलि देते हुए वीर साहबजादो को याद किए।

काराकाट में अटल बिहारी वाजपेई जन्म शताब्दी समारोह का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

काराकाट(रोहतास) : काराकाट प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत मोथा गांव स्थित दुर्गा मंदिर के परिसर में गुरुवार को पूर्व प्रधानमंत्री श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेई जन्मशताब्दी समारोह एवं वीर बाल दिवस बड़े ही उत्साह के साथ मनाया गया । जहां मण्डल चौपाल कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया । कार्यक्रम में भाजपा कार्यकताओं ने भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई के तैलचित्र पर पुष्प अर्पित किया । कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रहे पूर्व विधायक राजेश्वर राज ने कहा कि भारत को मजबूत बनाने,भारत को सशक्त करने,भारत की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में वाजपेयी की मुख्य भूमिका रही है । उन्होंने उनके व्यक्तित्व एवं मार्गदर्शन पर प्रकाश डाला । कार्यक्रम में वीर बाल दिवस पर जोरावर सिंह व फतेह सिंह के बलिदान पर प्रकाश डाला । श्री राज ने कहा कि बाबा जोरावर सिंह एवं बाबा फतेह सिंह के धर्म की रक्षा के लिए सर्वोच्च बलिदान को याद किया । कार्यक्रम में भाजपा के दिव्यांग प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष मुन्ना पांडेय, जिला प्रवक्ता अखिलेश पांडेय, मंडल पूर्व अध्यक्ष सुरेश गुप्ता, काराकाट मंडल अध्यक्ष ललित मोहन सिंह, गोड़ारी मंडल अध्यक्ष अजीत सिंह, युवा मोर्चा काराकाट मंडल अध्यक्ष सनी गुप्ता, ददन पांडेय, मनोज गुप्ता, विशाल पांडेय, मोथा के पूर्व मुखिया विनोद पासवान, शक्ति केंद्र प्रमुख बंटी सिंह, अनिल पांडेय, आनंदी साह सहित सैकड़ों भाजपा कार्यकर्ता शामिल थे ।

जक्की बिगहा लूट कांड का पुलिस ने किया उद्भेदन

प्रात : किरण संवाददाता

डिहरी(रोहतास) : डिहरी नगर थाना क्षेत्र के जक्की बिगहा में स्थित फ्लीपकार्ट के गोदाम में हथियार का भय दिखाकर 30 अक्टूबर को कैशियर और कर्मचारी से 4 लाख रुपये की हुई लूट का पुलिस ने उद्भेदन किया है। इस कांड के सरगना बघौला थाना क्षेत्र के कारन निवासी अजित यादव को अकोढीगोला - आयरकोठा पथ से गिरफ्तार कर लिया गया। एसपी रोहतास रौशन कुमार ने प्रेसवार्ता के माध्यम से बताया कि 30 अक्टूबर को रात 09:50 बजे 6-7 की संख्या में अज्ञात अपराधकर्मियों द्वारा डिहरी नगर थानाक्षेत्र अंतर्गत जक्की बिधा स्थित फ्लीपकार्ट के गोदाम में पिस्टल का भय दिखाकर कैशियर एवं कर्मचारियों से चार लाख रूपया लूट लिया गया था। इस संबंध में डिहरी नगर थाना में एक प्राथमिकी दर्ज की गई थी। इस काण्ड को गंभीरता से लिया गया तथा इसके उद्भेदन के लिए अन०पु०पदा० डिहरी-01 के नेतृतव में एक छापामारी दल का गठन किया गया। जिसमें डी०आई०यू० टीम को भी शामिल किया गया। उक्त काण्ड में तकनिकी अनुसंधान एवं विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि यह काण्ड अजित यादव गिरोह के द्वारा कारित किया गया है। गुरुवार को गुप्त सूचना मिली कि अजित यादव अकोढ़ीगोला थाना क्षेत्र में कहीं छूपा हुआ है। जो आयरकोठा से सासाराम की ओर जाने वाला है। इस सूचना पर त्वरित कार्यवाही करते हुए गठित टीम के द्वारा अकोढ़ीगोला - आयरकोठा रोड में घेराबंदी की गई। जहाँ एक चोरी के मोटरसाइकिल के साथ बघौला थाना क्षेत्र के कारन निवासी अजित यादव पिता शिवजी सिंह को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार अभियुक्त अजित यादव से विशेष टीम के द्वारा गहन पूछताछ की गई। जिसमें उसने डिहरी फ्लीपकार्ट लूटकाण्ड, बड्डी स्वर्ण व्यवसायी हत्याकाण्ड, में अपनी संलिप्तता स्वीकार करते हुए इस काण्ड में अपने सहयोगियों के नाम का खुलासा किया है। जिसकी गिरफ्तारी के लिए छापामारी की जा रही है।गिरफ्तार अजित यादव नोखा थाना के एक काण्ड, अकोढ़ीगोला थाना के एक काण्ड में फरार चल रहा था। इसके गिरोह रोहतास जिला एवं अगल-बगल के जिलो में हत्या, लूट, डकैती जैसे संगीन अपराध में संलिप्त रहा है। इसकी गिरफ्तारी की सूचना अगल - बगल के जिलों में दी गई है। जहाँ से इसके अन्य अपराधिक इतिहास प्राप्त किया जा रहा है।

आस्था : हवन पूजन भंडारे के साथ श्रीलक्ष्मी नारायण महायज्ञ हुई संपन्न

प्रात : किरण संवाददाता

नोखा (रोहतास) नगर परिषद क्षेत्र के आक्सन कान्वेंट स्कूल के प्रांगण में परम पूज्य संत श्रीलक्ष्मी प्रपन्न जीयर स्वामी जी महाराज के सानिध्य में आयोजित 21 दिसंबर से चल रहे श्रीलक्ष्मी नारायण महायज्ञ गुरुवार को पूजन-अर्चन, हवन, दीक्षारंभ संस्कार एवं विशाल भंडारे के साथ संपन्न हो गया। महायज्ञ के अतिम दिन श्री त्रिदंडी स्वामी जी महाराज के परम शिष्य श्री लक्ष्मी प्रपन्न जीयर स्वामी जी महाराज ने प्रवचन के दौरान लोगों को समझाते हुए कहा कि जिसको जपने से मन भर जाए उसी को मंत्र कहते हैं। जो मंत्र का मतलब होता है कि भटकाव से बचाए, गलत मार्ग से बचाए, गंदे कर्मो से बचाए। जिस व्यक्ति के पास जुआ, शराब, वेश्यावृत्ति की प्रवृत्ति बढ़ जाए उसका विनाश निश्चित है। उसे कोई नहीं बचा सकता। स्वामी जी ने कहा कि जहां की मिट्टी उसर या बंजर हो वहां पर घर मकान नहीं बनाना चाहिए । अगर मजबूरी बस उतनी ही भूमि हो तो कम से कम 10 फीट नीचे तक की मिट्टी निकाल कर फेंक देना चाहिए और उसमें दूसरे जगह से उपजाऊ मिट्टी डालकर तब घर बनाना चाहिए, नहीं तो वास्तु दोष लगता है। उस पर कभी भी विकास नहीं हो पाता है ना ही लक्ष्मी का वास होता है। जिस प्रकार आधुनिक युग में लोग बुलेट प्रूफ का इस्तेमाल करते हैं। उसी तरह संतों के लिए नारायण कवच है । नारायण कवच धारण करने के बाद उनका कोई कुछ नहीं बिगाड़ पाता है। उस पर हमेशा लक्ष्मी नारायण की कृपा बनी रहती है। यज्ञोपवीत तथा कन्यादान जीवन में एक ही बार होता है। दुर्भाग्यवश किसी की बच्ची को दोबारा विवाह करना पड़े। तो ऐसे ही कर देना चाहिए कन्या दान नहीं करना चाहिए। मनु महाराज के अनुसार यज्ञोपवित्र का उम्र 8 वर्ष 11 वर्ष 12 वर्ष है। पराशर महाराज जी के अनुसार दुगना हो गया है 16 , 22 व 24 वर्ष। इसी में मुहूर्त के अनुसार यज्ञोपवित करनी चाहिए। जो भी व्यक्ति धर्म से हटकर जीना चाहता है उसका विनाश निश्चित है। जो धर्म की मयार्दा का पालन नहीं करेगा उसका विकास कभी भी संभव नहीं है। मौके पर प्रवचन के दौरान हजारों हजार श्रद्धालु मौजूद थे।

दिन दहाड़े बेखौफ बदमाशों ने मोथा पुल पर शिक्षक को लुटा

प्रात : किरण संवाददाता

काराकाट(रोहतास) : काराकाट थाना क्षेत्र में बदमाशों की आतंक दिन पर दिन बढ़ते ही जा रहा है। जहां दिन दहाड़े बेखौफ बदमाशों ने एक शिक्षक को पिस्तौल से हमला कर बाइक सहित नगद रुपया छीन लिया। घटना गुरुवार शाम करीब 430 की बयता जा रहा है। घटना में बदमाशों ने शिक्षक पर हथियार की पिछले हिस्से से हमला कर लहूलुहान कर दिया। जानकारी अनुसार बिक्रमगंज निवासी स्वर्गीय विनोद गुप्ता के पुत्र सुमन कुमार गुप्ता उत्क्रमित मध्य विद्यालय सोनवर्षा में शिक्षक है। रोज की तरह स्कूल से छुट्टी होने के बाद करथ रजवाहा पथ से काराकाट की रास्ते बिक्रमगंज जा रहे थे। तभी अचानक मोथा पुल के पास बाइक पर सवार तीन बदमाशों ने आगे अपनी बाइक खड़ा कर रोकवाया और बाइक की चाभी निकाल ली। इसका विरोध करने पर बदमाशों ने कमर में रखे बंदूक निकाली और शिक्षक पर भिड़ा दिया। शिक्षक ने शोर मचाना चाहा तभी एक बदमाश ने उन्हें बंदूक की पिछले हिस्सा (हुत्था) से वार कर घायल कर दिया। शिक्षक ने बताया की उनके पैकेट में रखे करीब पांच हजार रुपए सहित एक हीरो स्पलेंडर बाइक जिसका रजिस्ट्रेशन नंबर बीआर 24 एएच 8268 था उसे तीन बदमाशों ने हथियारों से हमला कर छीन ले गए। घटना में घायल शिक्षक की प्राथमिकी उपचार गोडारी एसएचसी में कराया । शिक्षक ने तीन अज्ञात बदमाशों के विरुद्ध थाना में लिखित आवेदन दिया है। प्रभारी थानाध्यक्ष संजय कुमार यादव ने बताया की शिक्षक द्वारा आवेदन मिला है। जांच कर करवाई की जाएगी। फिलहाल घटना स्थल पर गस्ती टीम को भेज कर जानकारी ली जा रही है।

भ्रष्टाचार : राज्य खाद्य निगम के आईटी मैनेजर रिश्वत मांगने के मामलें में निलंबित

प्रात : किरण संवाददाता

रोहतास (ब्यूरो रिपोर्ट) रोहतास रिश्वत मांगने के मामले में राज्य खाद्य निगम रोहतास के आईटी मैनेजर पर कार्रवाई की गई है। उन्हें कार्यालय काम से मुक्त कर दिया गया है। मामले की जानकारी देते हुए मंगलवार को डीपीआरओ ने बताया कि अकोढ़ीगोला के एक राइस मील के निदेशक राजीव रंजन कुमार ने परिवाद दायर किया था। उन्होंने कहा था कि राज्य खाद्य निगम रोहतास के आईटी मैनेजर चंदन कुमार राय की ओर से मिल टैग करने के लिए रिश्वत की मांग की जाती है और रिश्वत नहीं देने पर मामले को उलझा दिया जाता है। उक्त आरोप की संयुक्त जांच डीडीसी रोहतास एवं एसडीएम डेहरी से कराई गई। इन्होंने जांच रिपोर्ट सौंपी। जांच रिपोर्ट में आईटी मेनेजर चंदन कुमार राय को दोषी पाया गया है। इस संबंध में आईटी मैनेजर ने स्पष्टीकरण भी दिया है, जिसे स्वीकार योग्य नहीं माना गया। जांच रिपोर्ट के आलोक में राज्य खाद्य निगम, रोहतास के आईटी मैनेजर चंदन कुमार राय को तत्काल प्रभाव से आईटी मैनेज चंदन कुमार राय कार्यालय कार्य से हटाने का निर्देश दिया गया। साथ ही राज्य खाद्य निगम के जिला प्रबंधक को चेतावनी दी गई है।

प्रभावती अस्पताल के नये भवन का जिलाधिकारी ने किया निरीक्षण

प्रात: किरण, संवाददाता

गया। प्रभावती अस्पताल के पुराने भवन को अब जल्द ही 29 करोड़ की लागत से तैयार नये भवन में शिफ्ट कर दिया जायेगा। इस भवन को 25 सौ स्कवायर मीटर में तैयार किया गया है। नये भवन को शिफ्ट करने के लिये सभी आवश्यक कार्य लगभग पूर्ण कर ली गयी है। फिलहाल बिजली कनेक्शन की तैयारी चल रही है। इसके लिए साउथ बिहार पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी से बात हुई है। स्वास्थ्य विभाग द्वारा इस दिशा जोर–शोर से तैयारी की जा रही है। जिला पदाधिकारी डॉ त्यागराजन एसएम द्वारा प्रभावती अस्पताल के नये भवन का निरीक्षण किया गया है। इस दौरान नये भवन में तैयार किये जा रहे सभी विभागों की व्यवस्था को समझा। भवन निर्माण बिहार मेडिकल सर्विसेज एंड इंफ्रास्ट्रक्चर कॉरपोरेशन द्वारा किया गया है। प्रभावती अस्पताल के नये भवन निर्माण की प्रोजेक्ट मैनेजर दिव्या भट्ट एव सिविल सर्जन ने जिला पदाधिकारी को सभी विभागों के कक्षों का बयोरा दिया है। मैनेजर प्रोजेक्ट ने बताया कि यह भवन चार मंजिल की है। इसे 25 सौ स्कवायर फीट में बनाया गया है। भवन निर्माण की लागत राशि 29.2 करोड़ रुपये हैं। आगे बताया कि ग्रांउड फ्लोर पर सीटी स्कैन की व्यवस्था है। इसके अलावा यहां पर एक्सरे, रेडियोलॉजी, अल्ट्रासांउड लैब, इसीजी कराने की व्यवस्था की गयी है। ग्राउंड फ्लोर पर ही तीन प्रकार के लैब तैयार किये गये हैं, जिसमें ब्लड कलेक्शन, माइक्रोबायोलॉजी लैब, पैथोलॉजी लैब, रेडियोलोजी रूम, क्लीनिकल बायोकेमेस्ट्री लैब की व्यवस्था है। यहां पर दो वेटिंग रिसेप्शन भी हैं।नये भवन के पहले तल्ले पर पर बर्थ यूनिट तैयार किया गया है, जहां पर प्रसव के बाद नवजात शिशु के रखने की व्यवस्था है। पोस्ट आपरेटिव और प्री–लेबर वार्ड बनाये गये हैं। पहले तल्ले पर ही आउटबॉर्न नर्सरी है जहां बाहर से आये बच्चों का इलाज होगा। इसके अलावा इसी तल्ले पर प्री–मैच्योर नर्सरी, रेडिएंट वार्मर नर्सरी की व्यवस्था होगी। इस तल्ले पर चिकित्सकों के लिए कक्ष बनाया गया है तथा ओटी रूम है। दूसरे तल्ले पर जनरल वार्ड बनाया गया है। यहां पर जनरल वार्ड तीन प्रकार के हैं। इनमें दो जनरल वार्ड पंद्रह बेड के हैं। चार जनरल वार्ड चार बेड के हैं। एक जनरल वार्ड सात बेड का है। इसके अलावा मीटिंग रूम और अस्पताल अध्यक्ष के चैंबर बनाये गये हैं। इसके अलावा 61 बेड का जेनरल वार्ड भी बनाया गया है। तीसरे तल्ले पर आपरेशन थियेटर है। इसमें एक आइसीयू है और एक अस्पताल प्रबंधन का आफिस बनाया गया है। नर्सिंग स्टॉफ के लिए तथा सर्जन के लिए अलग–अलग कक्ष बने हैं। पुरुष तथा महिला सर्जन के लिए अलग–अलग कक्ष बनाये गये हैं। इसमें सात बेड का पोस्ट आपरेटिव वॉर्ड बनाया गया है। आपरेशन थियेटर को स्ट्राइल करने का भी कक्ष है। इसमें अलग अलग 02 ऑपरेशन थिएटर बनाया गया है। इसके अलावा 12 बेड का आईसीयू वार्ड बनाया गया है। चौथे तल्ले पर ड्रग कंट्रोल आफिस है। स्वास्थ्य विभागों के विभिन्न अधिकारियों के चैंबर होंगे। इसके साथ ही आयुष चिकित्सकों के लिए पंचकर्मा थियेटर बनाया गया है। माइनर ओटी ऑपरेशन थिएटर, ड्रग कंट्रोल ऑफिस, मेडिकल स्टोर आयुर्वेद संबंधित एवं क्लीनिकल लैबोरेट्री भी बनाए गए हैं। भवन में तीन अलग–अलग लिफ्ट बनाये गये हैं जिससे मरीज तथा परिजनों एवं चिकित्सकों के आने जाने की सुविधा होगी। चौथे तल्ले पर वेटिंग तथा रिसेप्शन की जगह बनायी गयी है। इसके अलावा एक सर्विस ब्लॉक बनाया गया है। भवन से हटकर एक फायर टैंक बनाया गया है। फायर सेफ्टी टैंक पूरे कैंपस की सुरक्षा को ध्यान में रखकर 2 लाख लीटर पानी क्षमता वाले अंडरग्राउंड वॉटर टैंक के साथ फायर सेफ्टी की व्यवस्था रखी गई है ताकि किसी भी विपरीत परिस्थिति में बिना बाहरी सहायता के अस्पताल में अग्निसमन संबंधित बचाव कार्य किया जा सके। अलग–अलग सर्विस ब्लॉक भी बनाये गये हैं। सर्विस ब्लॉक में कपड़ा धोने, आयरन करने तथा स्ट्रालाइज करने की व्यवस्था है।जिला पदाधिकारी ने जिला अर्ली इंटरवेंशन सेंटर का भी निरीक्षण किया गया है। यह विशेष कर बच्चों का स्पेशल वार्ड प्रभावती अस्पताल में बनाया गया है। इसमें मुख्य रूप से ऑडियोलॉजिक्ल टेस्ट, आंख संबंधित उपचार, ऑक्यूपेशनल थेरेपी, खेल थेरेपी, बिहेवियर मोडिफिकेशन सहित अन्य प्रकार के ट्रेनिंग प्रोग्राम बच्चों को करवाया जाता है ताकि बच्चे पूरी तरह स्वस्थ रह सके।

अटल सदियों तक भारत के आदर्श राष्ट्रपुरुष जाने जाएंगे : रविंद्र पाण्डेय

प्रात: किरण, संवाददाता

औरंगाबाद। आई एम ए हाल में चाणक्य परिषद ने भारत के पूर्व प्रधानमंत्री भारतरत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी की जन्म शताब्दी एवं भारतरत्न महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी के 162 में जयंती समारोह के अवसर पर भव्य कार्यक्रम आयोजित किया था जिसका उद्घाटन मुख्य अतिथि गिरिडीह के पूर्व सांसद रविंद्र कुमार पाण्डेय अध्यक्ष रामानुज पाण्डेय विशिष्ट अतिथि कृष्ण बल्लभ प्रसाद सिंह बबुआ जी भाजपा प्रदेश कार्य समिति के सदस्य गोपाल शरण सिंह लोजपा के प्रदेश प्रवक्ता कुमार सौरभ सिंह संगठन के मुख्य संरक्षक भैरवनाथ पाठक मुख्य मार्गदर्शक प्रोफेसर चंद्रशेखर पांडे हम पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुनील चौबे डॉक्टर शंभू शरण सिंह शंभू नाथ पाण्डेय दीप प्रज्वलित कर एवं श्रद्धांजलि अर्पित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया मुख्य अतिथि रविंद्र पांडे जी को उन सभी अतिथियों को सम्मानित किया गया कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि रविंद्र कुमार पांडे जी ने कहा अटल जी विश्व राजनीति के एक विलक्षण राजनेता थे जिन्हें सदियों तक दुनिया याद रखेगी उन्होंने भारत को परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्र बनाया और विकास की जो धारा प्रवाहित की उस पर बढ़ते हुए आज भारत दुनिया के विकसित राष्ट्रों को टक्कर दे रहा है हमें गर्व है कि उनके साथ उनके सानिध्य में देश की संसद में काम करने का हमें अवसर मिला उनकी एक बात हमेशा हमें याद है कि हमारे प्रतिनिधि दिल्ली और संसद से लगाव कम रखें ज्यादा से ज्यादा लगाओ और जुड़ाव अपने क्षेत्र और जमीन से रखें तभी वह अपने क्षेत्र का और इस देश का उत्थान कर पाएंगे देश के लोगों के प्रति और कार्यकताओं के प्रति उनका गहरा लगाव था वह जितना देश के विकास के प्रति चिंतित थे वहीं उतना ही देश की सुरक्षा के प्रति भी चिंतित थे और यही कारण है कि उन्होंने कारगिल युद्ध में जहां पाकिस्तान को पराजित किया वहीं देश के सारे गांव को सड़कों से जोड़ने का गांव में शिक्षा और स्वास्थ्य की सुविधा बहाल करने का बहुत पूर्व काम किया उनके बताए हुए मार्ग पर चलकर ही भारत विकसित राष्ट्र बन सकता है महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी हम सबों के लिए सदैव श्रद्धा के पात्र हैं उन्होंने इस देश में स्वाधीनता का अलख जगाने एवं काशी विश्वविद्यालय स्थापित कर देश को ज्ञान विज्ञान और स्वास्थ्य के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने की नींव डाली चाणक्य परिषद ऐसे महापुरुषों की प्रत्येक वर्ष जयंती मना कर अपने महापुरुषों के मार्ग पर चलने के लिए समाज को प्रेरित करती है यह सराहनीय कार्य है इस अवसर पर संबोधित करते हुए प्रदेश कार्य समिति सदस्य गोपाल शरण सिंह ने कहा चाणक्य परिषद का यह कार्यक्रम अनूठा कार्यक्रम है।

रक्तसेवा के लिए दरभंगा में रक्तदानियों के मेला में सम्मानित होंगे बमेंद्र

प्रात: किरण, संवाददाता

औरंगाबाद। देश के सभी राज्यों से रक्तदान क्षेत्र में सेवा दे रहे रक्तदानियों का मेला लगेगा आगामी 11 एवं 12 जनवरी को दरभंगा में। दरभंगा की संस्था समर्पण मिथिला द्वारा दिनांक 11 एवं 12 जनवरी 2025 को राष्ट्रीय रक्तदाता सम्मेलन का आयोजन सुनिश्चित किया गया है। इस रक्तदाता सम्मेलन में देश के अलग-अलग प्रदेशों से रक्तदान क्षेत्र से जुड़े रक्तदाता एवं संस्थाओं को सम्मानित भी किया जाएगा। औरंगाबाद के रक्त सेवक बमेंद्र कुमार सिंह को भी उक्त कार्यक्रम में रक्तदान के प्रति जागरूकता अभियान चलाने ,रक्तदान शिविर का आयोजन करने एवं जरूरतमंदों को रक्त उपलब्ध कराने के लिए सम्मानित किया जाएगा। कार्यक्रम का आयोजन दरभंगा के दलान रिसोर्ट में किया जाएगा। बमेंद्र ने बताया कि रक्तदान ही एक ऐसी सेवा है जो निस्वार्थ रूप से किया जाता है। इस सम्मान का श्रेय पथ प्रदर्शक के सभी रक्तदाताओं को जाता है जिनके सहयोग से समय-समय पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाता है एवं जरूरतमंदों को रक्त उपलब्ध कराया जाता है। औरंगाबाद की चर्चित स्वयंसेवी संस्था पथ प्रदर्शक के सचिव बमेंद्र कुमार सिंह लगातार रक्तदान के प्रति युवाओं को जागरुक कर उनसे रक्तदान कराते हैं। बमेंद्र ने बताया कि रक्तदान के प्रति जागरूकता लाने के लिए पथ प्रदर्शक द्वारा वर्ष 2021 से मिशन रक्तदान हिंदुस्तान अभियान चलाया जा रहा है जिसके तहत अब तक सात राज्यों के 16 शहरों में रक्तदान शिविर का आयोजन वहां की स्थानीय संस्थाओं के सहयोग से किया जा चुका है। पथ प्रदर्शक द्वारा 2015 से अब तक लगभग 200 रकदार शिविरों का आयोजन किया जा चुका है।

बैदराबाद साईं किंडरगारटेन स्कूल में हर्षोल्लास के साथ मना क्रिसमस

अरवल। बैदराबाद साईं किंडरगारटेन स्कूल में बच्चे के साथ क्रिसमस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। स्कूली बच्चें ने कार्यक्रम में बेहद उत्साह, जोश और उल्लास के देखे गए । क्रिसमस डे के अवसर पर कार्यक्रम में स्कूली बच्चों ने कई प्रकार के मनचले किया । अभिभावकों व गणमान्य लोगों ने इस अनोखे पल का आनंद लिया । छात्रों ने जिंगल बेल्स पर नृत्य किया और जब सांता क्लॉज ने मंच पर प्रवेश किया तब अभिभावक ने ताली बजाते हुए इसका आनंद लिया, तो दूसरी तरफ क्रिसमस कैरल सॉन्ग, जिंगल बेल जिंगल बेल जिंगल ऑल द वे और वी विश यू अ मैरी क्रिसमस एंड ए हैप्पी न्यू ईयर आदि गीत के साथ गानों का मधुर गीत गाकर समा बांध दिया। समारोह में खेलों में सर्वश्रेष्ठ व उम्दा प्रदर्शन के लिए छात्रों और अभिभावकों को उपहार देकर सम्मानित किया गया। इस दौरान साई किंडरगारटेन स्कूल के डायरेक्टर सीमा सिंह शिक्षिका सलोनी सिंह मैनेजर सौरभ सिंह मौजूद रहे।

34वां कंटिन्युयिंग ऑर्थोपेडिक एजुकेशन कार्यक्रम 28-29 दिसंबर को पटना में : पारस एचएमआरआई

प्रात: किरण, संवाददाता

पटना। देशभर के प्रमुख हड्डी रोग विशेषज्ञ और अंतरराष्ट्रीय चिकित्सा विशेषज्ञ 28 और 29 दिसंबर को पटना में आयोजित होने वाले 34वें कंटिन्युयिंग ऑर्थोपेडिक एजुकेशन कार्यक्रम (सीओई) में शिरकत करेंगे। यह कार्यक्रम पारस एचएमआरआई और ऑर्थोपेडिक रिसर्च एंड एजुकेशन फाउंडेशन इंडिया (ओआरईएफ) के संयुक्त तत्वावधान में लेमन ट्री प्रीमियर होटल में आयोजित होगा। यह कार्यक्रम बिहार आर्थोपेडिक एसोसिएशन द्वारा समर्थित है। बिहार मेडिकल रजिस्ट्रेशन काउंसिल ने इस शैक्षिक कार्यक्रम के लिए 8 क्रेडिट पॉइंट्स मान्यता प्रदान की है। इस बार का विषय ह्युघुटने के जोड़ के आसपास के फ्रैक्चरह्म पर केंद्रित है। पारस एचएमआरआई में गुरुवार को आयोजित संवाददाता सम्मेलन में ओआरईएफ के चेयरमैन और आयोजन अध्यक्ष डॉ. जॉन मुखोपाध्याय ने बताया कि 1983 में पद्म भूषण डॉ. (प्रो.) बी. मुखोपाध्याय द्वारा शुरू किए गए इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य हड्डी रोग सर्जनों के कौशल और ज्ञान को उन्नत करना है। कोरोना महामारी के कारण पिछले कुछ वर्षों तक इसका भौतिक आयोजन बाधित रहा, लेकिन इस बार बड़ी संख्या में विशेषज्ञों और प्रतिभागियों की भागीदारी की उम्मीद है। इस दो दिवसीय कार्यक्रम में इंदौर के डॉ. (प्रो.) डीके तनेजा, कोलकाता के डॉ. राजीव चटर्जी, मुजफ्फरनगर के डॉ. मुकेश जैन, गंगा हॉस्पिटल कोयंबटूर के डॉ. दीन दयालन, और एम्स दिल्ली के डॉ. विवेक त्रिखा जैसे अनुभवी विशेषज्ञ अपने अनुभव साझा करेंगे। अंतरराष्ट्रीय सत्र में चीन, थाइलैंड और बिहार के अनुभवी डॉक्टर उन्नत फ्रैक्चर प्रबंधन और नवीनतम तकनीकों पर अपने विचार प्रस्तुत करेंगे। पारस एचएमआरआई के डायरेक्टर जेनेरल सर्जरी डॉ. ए.ए. हई ने कहा कि पारस एचएमआरआई चिकित्सा शिक्षा और कौशल विकास को बढ़ावा देने के लिए हमेशा तत्पर रहता है। यह आयोजन विशेषज्ञों के लिए एक मंच प्रदान करेगा, जहां वे आधुनिक उपचार विधियों पर चर्चा करेंगे और ज्ञान साझा करेंगे। पारस एचएमआरआई के फैसिलिटी डायरेक्टर अनिल कुमार ने कहा कि पटना के लिए यह गर्व की बात है कि ऐसा उच्चस्तरीय आयोजन यहां हो रहा है। उन्होंने कहा कि यह कार्यक्रम चिकित्सा जगत में तकनीकी प्रगति पर ध्यान केंद्रित करेगा और भविष्य में भी इस तरह के आयोजनों के लिए हम प्रतिबद्ध हैं। आयोजन सचिव डॉ. जानकी शरण भदानी ने बताया कि इस कार्यक्रम में देशभर के नामी ऑर्थोपेडिक विशेषज्ञों के साथ चीन और थाइलैंड के डॉक्टर भी ऑनलाइन माध्यम से जुड़ेंगे। कार्यक्रम का उद्देश्य हड्डी रोग विशेषज्ञों को नई तकनीकों और उपचार विधियों से अवगत कराना है।

बाल दिवस पर मत्स्यजीवी संघ के लोगों के साथ चर्चा

प्रात: किरण, संवाददाता

औरंगाबाद। धार्मिक नगरी देव में वीर बाल दिवस के मौके पर मत्स्यजीवी संघ के लोगो के साथ चर्चा कर वीर बाल दिवस की प्रासंगिकता पर संवाद किया। सुनील प्रताप मुन्ना की अध्यक्षता में कार्यक्रम आयोजित किया गया।भाजपा जिला कोषाध्यक्ष सह बिहार विधान परिषद के सभापति प्रतिनिधि आलोक कुमार सिंह ने कहा कि धर्म संस्कृति के प्रति सच्ची प्रतिबद्धता व्यक्त करने वाले मुगलों के सल्तनत को चुनौती देते हुए सनातन धर्म के लिये प्राण त्यागने वाले बाबा जोरावर सिंह जी , एवं बाबा फतेह सिंह जी के बलिदान पर आज देश वीर बाल दिवस के रूप में मना रहा । उस समय के युवाओं के सामने जो राष्ट्र रक्षा की चुनौतियां थी उसी प्रकार आज के युवाओं और समाज के सभी वर्ग के लोगो के समक्ष विकसित भारत का लक्ष्य है । हम सब को मिल कर मजबूत राष्ट्र के लिये मिल कर काम करना होगा । माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा आज के इस तिथि को वीर बाल दिवस घोषित किया गया है । आज इस अवसर पर औरंगाबाद जिले के धार्मिक नगरी देव में मत्स्यजीवी संघ के लोगो के साथ चर्चा कर वीर बाल दिवस की प्रासंगिकता पर संवाद किया गया। इस अवसर पर कपील चौधरी , दशरथ चौधरी , शत्रुघ्न चौधरी , सत्येंद्र कुमार बमबम , भरत चौधरी , राजू कुमार चौधरी , अनिल चौधरी , छोटू चौधरी , पिंटू चौधरी , नंदू चौधरी , गोविंद चौधरी , आनंद चौधरी ,अभिषेक चौधरी विकास चौधरी विकास चौधरी , भगवान चौधरी , विक्की चौधरी , पंकज चौधरी , मंटू चौधरी , डाबल चौधरी ,मिथुन चौधरी सहित अन्य सभी मत्स्य जीवी संघ के लोगों को अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया गया । कार्यक्रम में अनूप कुमार गुप्ता , वार्ड पार्षद प्रतिनिधि मनोज कुमार रितेश कुमार बिट्टू ,जगदीश सिंह नेता जी , रामेश्वर प्रसाद , रामरूप यादव,बुलु कुमार , सूजीत कुमार सिंह सहित अन्य उपस्थित रहे ।

एसपी के निर्देश पर कुर्था थाने में दर्ज हुई प्राथमिकी

- विगत दिनो दिल्ली में हुई थी एक मजदूर की मौत
- हत्या की आशंका जता रहे परिजन

प्रात: किरण, संवाददाता

कुर्था (अरवल) दिल्ली में कुर्था थाना क्षेत्र के मेदिनीपुर बड़हिया के एक युवक की मौत हो गई थी इसके बाद उनके परिजनों ने हत्या की आशंका जताई है. प्रेस विज्ञप्ति देते हुए मृतका की मां राधिका देवी ने बताया कि मेरा बेटा देतेन्द्र कुमार 49 बर्ष जो दिल्ली के 268 थर्ड फ्लोर मस्जिद मोड साउथ एक्सटेंशन पुलिस स्टेशन कोटला मुबारकपुर न्यू दिल्ली में मनोरंजन टीवी के ऑफिस में कार्य करता था बिगत 18 दिसम्बर की सुबह दस बजे एक नम्बर से कॉल आया जिसका न0 9967572670 है। इसी नम्बर से बताया गया कि आपका बेटा देवेन्द्र कुमार की मृत्यु हो गई है। यह सुनकर मेरे परिवार वालो ने दूसरे बेटे शैलेन्द्र कुमार को फोन करके बताया तो शैलेन्द्र कुमार ने इसी नम्बर पर कॉल कर जानकारी ली, उन्हें निरू सेट्टी से बात करने को बोला गया जिसका न0 9891362401, 8851257084 है। इसी नम्बर से बात हुआ तो बताया कि देवेन्द्र कुमार की मृत्यु हो गई है, अगर एक घंटे के अंदर नहीं आया तो आपके बेटे की लाश को लावारिश घोषित कर दिया जाएगा ।जब शैलेन्द्र उस स्थान पर लगभग शाम चार बजे पहुंच कर फोन किया तो बताया कि मृतक का दाह संस्कार कर दिया गया ।उन्लोगो से बात कर उनके बारे में जानकारी लेना चाहा तो बताने से इनकार किया और धमकी भरे शब्दो में बोला की तुम सब बिहार से आकर मुझे क्या बिगाड़ लोगे । इन्ही सब बातो से आशंका हुई कि निरु सेट्टी और उनके सहयोगियों ने मिलकर मेरे बेटे दिवेन्द्र कुमार की साजिश के तहत हत्या कर दिया है ।वहीं मृतक की माता राधिका देवी ने बताया कि किसी ने दाह संस्कार की वीडियो बनाकर मेरे बेटे के मोबाइल पर भेजा वहीं उन्होंने पूरी घटना की निष्पक्ष जांच की मांग करते हुए न्याय दिलाने की मांग की है ।साथ ही उक्त घटना में शामिल लोगों पर कानूनी कार्रवाई की मांग की है हालांकि गुरुवार 26 दिसंबर को मृतक की माता राधिका देवी के बयान पर कुर्था थाने में प्राथमिकी दर्ज की गई इस संबंध में कुर्था थानाध्यक्ष सुरेंद्र कुमार ने बताया कि कुर्था थाना में 00/ 24 के तहत एफआईआर दर्ज करते हुए दिल्ली के संबंधित थाने को फॉरवर्ड की जाएगी जिस थाना क्षेत्र में उक्त घटना घटी इसके बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

भाजपा नेताओं ने किया वीर बाल दिवस कार्यक्रम का आयोजन

प्रात: किरण, संवाददाता

कुर्था (अरवल) भारतीय जनता पार्टी कुर्था मंडल के तत्वधान में उच्च विद्यालय लारी के सभागार में वीर बाल दिवस कार्यक्रम का आयोजन भारतीय जनता पार्टी के मंडल अध्यक्ष सुधीर शर्मा के अध्यक्षता में किया गया वही कार्यक्रम का संचालन जिला मंत्री राहुल कुमार ने किया कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारतीय जनता पार्टी के जिलाध्यक्ष धर्मेंद्र तिवारी ने अपने संबोधन में कहा कि बीर बाल दिवस 26 दिसंबर 2022 से भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पूरा देश ही नहीं बल्कि विदेशों में भी मनाया जा रहा है सनातन धर्म के रक्षा के लिए सिख धर्म के 10वे गुरु गोविंद सिंह के साहिबजादो लाडले सरदार जोरावर सिंह एवं सरदार फतेह सिंह 7 साल और 5 साल की उम्र में मुगल आक्रांताओं के दमन, अन्याय को स्वीकार नहीं किया फल स्वरुप उन्हें दीवाल में चुनवा दिया गया उन्हीं के याद में प्रत्येक वर्ष 26 दिसंबर को बीर बाल दिवस मनाया जाता है। इस मौके पर जिला महामंत्री रामाशीष दास ,शक्ति केंद्र के प्रमुख हरेंद्र कुमार दीपक, बूथ अध्यक्ष प्रीतम कुमार, विद्यालय के प्रभारी बृज किशोर कुमार, सहित महाविद्यालय के सभी शिक्षक एवं सैकड़ो छात्र-छात्र उपस्थित थे सभी ने बीर बालको के तैल चित्र पर श्रद्धांजलि अर्पित किया।

रसलपुर जिला कार्यालय में मनाया गया जन्म शताब्दी समारोह

प्रात: किरण, संवाददाता

गया।भाजपा गया जिला कार्यालय में आज भारत के पूर्व प्रधानमंत्री और भारतीय जनता पार्टी के संस्थापक नेताओं में से एक, अटल बिहारी वाजपेयी की जन्म शताब्दी समारोह मनाया गया है। इस अवसर पर बिहार प्रदेश भाजपा उपाध्यक्ष सरोज रंजन पटेल, पूर्व सांसद रामजी मांझी, पूर्व जिला अध्यक्ष धनराज शर्मा, और मुकेश शर्मा सहित पार्टी के कई प्रमुख नेता उपस्थित रहे हैं।इस कार्यक्रम की अध्यक्षता भाजपा जिला उपाध्यक्ष अजय कुमार तन्नी ने की है। तथा संचालन जिला महामंत्री पप्पू चंद्रवंशी के द्वारा किया गया सर्वप्रथम उनके चित्र पर माला पुष्प से चढ़ा कर श्रद्धा सुमन अर्पित किया गया इसके बाद भारतीय जनता पार्टी के नेताओं के द्वारा अटल बिहारी वाजपेई जी के अटल पथ पर जुलूस शकल में चलकर सच्ची श्रद्धांजलि दी गई है ।इस अवसर पर प्रदेश उपाध्यक्ष सरोज रंजन पटेल के द्वारा अपने संबोधन के दौरान अटल बिहारी वाजपेयी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है। अपने उद्बोधन में कहा कि वाजपेयी न केवल भारतीय जनता पार्टी के संस्थापक नेताओं में से एक थे, बल्कि उन्होंने देश की राजनीति में एक नई दिशा दी है। उनके नेतृत्व में भारत ने परमाणु शक्ति के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल की और कूटनीतिक दृष्टि से विश्व में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। उन्होंने कहा कि वाजपेयी ने संगठन को मजबूत करने के लिए जमीनी स्तर पर काम किया और अपनी ओजस्वी वाणी और कविताओं के माध्यम से लोगों के दिलों में विशेष स्थान बनाया है ।पूर्व सांसद रामजी मांझी ने अपने संबोधन में वाजपेयी जी की दूरदर्शिता और आदर्शों की प्रशंसा की गई है। उन्होंने कहा कि वाजपेयी ने लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ किया और राजनीति को सेवा का माध्यम माना है। पूर्व जिला अध्यक्ष धनराज शर्मा और मुकेश शर्मा ने वाजपेयी की सादगी, त्याग और समर्पण को याद करते हुए कहा कि वे हम सभी के लिए प्रेरणा स्रोत हैं ।कार्यक्रम में अटल बिहारी वाजपेयी के जीवन से जुड़े महत्वपूर्ण प्रसंगों और उनकी कविताओं का पाठ भी किया गया है। वक्ताओं ने इस बात पर जोर दिया कि पार्टी केकार्यकताओं को उनके विचारों और आदर्शों से प्रेरणा लेकर संगठन और समाज की सेवा करनी चाहिए।अंत में, कार्यक्रम के अध्यक्ष अजय कुमार तन्नी ने सभी उपस्थित लोगों का धन्यवाद किया और कहा कि वाजपेयी जी के योगदान को आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाना हम सभी का कर्तव्य है। समारोह के दौरान पार्टी कार्यकताओं ने उनके जीवन से प्रेरणा लेते हुए उनके आदर्शों पर चलने का संकल्प लिया है। आज के कार्यक्रम में पूर्व जिला अध्यक्ष जयेन्नद्र शर्मा , अनिल स्वामी, अनंत धीश अमन,जिला उपाध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद, डा शालनी कुमारी,श्रवण शाणिडल्य,हरे राम सिंह,डा मनिष पंकज मिश्रा,संपूल देवी ,जिला महामंत्री रंजन सिंह, जिला मंत्री कमल सिन्हा , संतोष सिंह, सरजू ठाकुर ,संजू साह, रूपेश कुमार वर्मा, दयानंद गिरी ,संजय दास, कार्यालय मंत्री राजेश कुमार सिंह ,विनोद पासवान ,अमित पासवान, मिथिलेश मांझी।

गुरुद्वारा जाकर दो महान बाल शहीदों को श्रद्धांजलि दी गई

प्रात: किरण, संवाददाता

गया ।वीर बाल दिवस के अवसर पर भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा के सह प्रभारी डॉ मनीष पंकज मिश्रा सहित भाजपा नेताओं के साथ गया स्थित गुरुद्वारा पहुंचकर माथा टेका उनके बलिदानी दिवस पर श्रद्धांजलि दी गई है। इस अवसर पर डॉ मनीष पंकज मिश्रा ने कहा वीर बाल दिवस भारत में सिख धर्म के दो महान बाल शहीदों, साहिबजादे जोरावर सिंह और फतेह सिंह, के बलिदान को श्रद्धांजलि देने के लिए मनाया जाता है। इन दोनों बालकों ने अपने अदम्य साहस, अडिग विश्वास और धर्म की रक्षा के लिए अप्रतिम बलिदान दिया है। यह दिन उनके बलिदान और निडरता की स्मृति में हर साल 26 दिसंबर को मनाया जाता है। साहिबजादे गुरु गोविंद सिंह जी के चार पुत्रों में से दो, जोरावर सिंह 9 वर्ष और फतेह सिंह 7 वर्ष, ने बचपन में ही अपने अद्वितीय बलिदान से इतिहास में अमर हो गए हैं। मुगल शासक औरंगजेब के शासनकाल में, सिख धर्म और संस्कृति को समाप्त करने के लिए अनेक प्रयास किए गए हैं। साहिब जादों को सरहिंद के गवर्नर वजीर खान ने बंदी बना लिया और उन्हें इस्लाम स्वीकार करने के लिए मजबूर किया है ।नन्हे बालकों ने अपनी आस्था और धर्म के लिए हर प्रताड़ना सहन की, लेकिन धर्म परिवर्तन से इनकार कर दिया है। उनके इस अद्वितीय साहस से क्रोधित होकर, वजीर खान ने उन्हें जिंदा दीवार में चिनवा दिया है। इस हृदयविदारक घटना ने न केवल सिख समुदाय को बल्कि समस्त मानवता को धर्म, आस्था और स्वतंत्रता के प्रति प्रेरित किया है ।वीर बाल दिवस उन साहसी बच्चों की प्रेरक कहानी को जन-जन तक पहुंचाने का दिन है। यह हमें सिखाता है कि सत्य और धर्म की रक्षा के लिए कोई भी बलिदान छोटा नहीं होता है। उनका बलिदान न केवल सिख इतिहास का गौरव है, बल्कि वह सभी बच्चों और युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है। वीर बाल दिवस पर हम उन शहीदों को नमन करते हैं, जिन्होंने अपनी जान देकर मानवता को धर्म और सच्चाई का मूल्य सिखाया है। आज के कार्यक्रम में मुख्य ग्रंथि बेअंत सिंह,गुरुद्वारा सदस्य मंजीत सिंह वार्ड पार्षद 15 दीपक चंद्रवंशी,जिला मीडिया प्रभारी संतोष ठाकुर,दीपक पांडेय,महेश यादव,मंटू कुमार बबलू गुप्ता।

100 दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यक्रम के निमित शिक्षकों का प्रशिक्षण

प्रात: किरण, संवाददाता

औरंगाबाद। बारुण प्रखंड के प्रखंड संसाधन केंद्र के तत्वावधान में केशव उच्च विद्यालय के सभागार में प्रखंड के अधीन सभी प्राथमिक एवं मध्य विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों का प्रशिक्षण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। 100 दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यक्रम के निमित प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रथम एजुकेशनल फाऊंडेशन ट्रस्ट के समन्वयक शिवाकांत तिवारी ने बताया कि विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों को गणित स्किल एवं हिंदी स्किल के बारे में विशेष रूप से बताया जाए ताकि वह 100 दिनों में इन दोनों ही विषयों में पारंगत हो जाए। प्रशिक्षण के मौके पर प्रखंड संसाधन केंद्र बारुण के बीआरपी सतीश कुमार पांडेय,रेवती रमन शर्मा बीपीएम दीपक कुमार की गरिमामई उपस्थिति रही। प्रथम एजुकेशन फाऊंडेशन के सिआईएम डॉली कुमारी ने बताया कि आज जिस तरह से शैक्षणिक परिवर्तन का दौर चल रहा है ऐसी स्थिति में सभी विद्यालयों में इस तरह का कार्यक्रम को यदि मूर्त रूप प्रदान किया जाए तो हम बच्चों के गुणात्मक शिक्षा को सही तरीके से क्रियान्वित कर सकते हैं। मौके पर प्रधानाध्यापक अरविंद कुमार,ज्योति शंकर, विनोद कुमार सिंह, संजय कुमार सद्दाम रिजवी अनिल दूबे,सहित अन्य उपस्थित थे।

सबके चहेते थे बाबू सुरेश नारायण जयंती पर लोगों ने दी श्रद्धांजलि

प्रात: किरण, संवाददाता

गया। गुरुवार को देवघाट स्थित प्रभा कुटीर में बाबू सुरेश नारायण मेमोरियल ट्रस्ट की ओर समाजसेवी, पिंडदानी, पत्रकार रहे सुरेश नारायण की 82 वीं जयंती समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उपस्थित लोगों ने सुरेश बाबू की प्रतिमा पर श्रद्धा सुमन अर्पित कर उनके जीवन कृतित्व पर चर्चा की। साथ ही इनके द्वारा किए गए कार्यों को याद करते हुए उनके बताए हुए मार्गों पर चलने का संकल्प लिया। वक्ताओं ने कहा कि सुरेश बाबू सबके चहेते थे। वे निस्वार्थ पूर्वक जनहित का कार्य करते रहते थे। शहर के सामाजिक, साहित्यिक और पितृपक्ष मेला में तीर्थ यात्रियों की सेवा में इनकी सक्रिय भूमिका रहती थी। आज वे नहीं है लेकिन उनके द्वारा किए गए कार्य सदैव हम सबों के स्मृतियों में रहेगी। पिता की स्मृतियों को ताजा करते हुए उनके पुत्र जदयू के प्रदेश महासचिव सह मुख्यालय प्रभारी चंदन कुमार सिंह ने गरीबों के बीच कंबल एवं मिठाइयों का वितरण किया। इस मौके पर चंदन कुमार सिंह ने कहा कि गरीब असहाय लोगों को कंबल देने से एक अलग ही अनुभूति होती है। पुत्र का कर्तव्य है कि अपने पिता के कार्यों का अनुसरण करें। मेरे पिताजी जीवन पर्यंत गरीब और दीन दुखियों की सेवा करते रहे।अपने पिता से प्रेरणा पाकर गरीबो, वृद्धजनों और असहायों बीच कंबल का वितरण कर उन्हें याद किया। इस अवसर पर वैष्णवी,आराध्य श्री, जितेंद्र कुमार, धर्मेंद्र कुमार सिंह उर्फ डूल सिंह, गोल्डी गायब, मुकेश गुपुत, अरविंद चरण प्रियदर्शी, कपिल प्रसाद सहित कई लोग उपस्थित थे।

जिला मुख्यालय स्थित झल्लू बाबू सभागार में शिक्षा विभाग की हुई समीक्षा बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा। जिला पदाधिकारी के निदेशानुसार जिला शिक्षा पदाधिकारी मो. सईद अंसारी द्वारा गुरुवार को जिला मुख्यालय स्थित झल्लू बाबू सभागार में शिक्षा विभाग की समीक्षा बैठक की गई। बैठक में जिला के शिक्षा विभाग के जिलास्तरीय एवं प्रखंड स्तरीय सभी पदाधिकारी उपस्थित रहे। बैठक में शिक्षा विभाग अंतर्गत चल रहे विभिन्न योजनाओं की विस्तृत समीक्षा की गई। शिक्षा विभाग अंतर्गत पी बी एल (प्रोजेक्ट बेस्ड लर्निंग) के संजय कुमार क्रांति, प्रेमलता, दिलीप कुमार एवं चंदन कुमार पीबीएल के संबंध में अपनी प्रस्तुति प्रस्तुत किए। विद्यालयों के अतिक्रमण किए गए भूमि को मुक्त कराने हेतु जहाँ वाद दायर नहीं की गई है वहाँ वाद दायर करवाने एवं जहाँ पूर्व से ही वाद दायर की जा चुकी है, अंचलाधिकारी से समन्वय स्थापित कर भूमि को मुक्त कराने हेतु सभी प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी को निदेशित किया गया। जी ए पी के सर्वे की भी बैठक में विस्तृत समीक्षा की गई। के जी बी भी की समीक्षा के क्रम में छात्राओ के ठहराव ही विशेष प्रयत्न करने हेतु निदेशित किया गया। विद्यालयों के आधारभूत संरचना की समीक्षा के उपरांत निमार्णाधीन कार्यो को अविलंब पूर्ण करवाने हेतु निदेशित किया गया।

नगर पंचायत एवं ग्राम पंचायत में होगा खेल क्लब का गठन, 14 से 45 वर्ष के महिला एवं पुरुष होंगे सदस्य

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा । खेल के माहौल को विकसित करने के उद्देश्य से नगर पंचायत एवं ग्राम पंचायत में खेल क्लब का गठन किया जायेगा। खेल क्लबों की मुख्य भूमिका वर्तमान समय में उभरते हुए खेलों व उक्त खेल के खिलाड़ियों को उत्साहित व प्रोत्साहित करना तथा गांव-गांव में छुपे हुए खेल प्रतिभा को उभारना व निखारना है। साथ ही यह खेल क्लब शारीरिक गतिविधियों व प्रतिभाओं के विकास के लिए सामुदायिक केंद्रों के रूप में कार्य करते हैं। खेल क्लब का उद्देश्य खेलों में भागीदारी को सरल व सर्वसुलभ बनाना तथा खेल क्लबों को आवश्यक संसाधन तथा सहायता प्रदान करके उभरती हुई प्रतिभाओं की पहचान करना व उन्हें आगे लाना है। इसके लिए पंचायत में अवस्थित खेल क्लब के सभी सदस्य उसी पंचायत के निवासी होने चाहिये। सदस्यों की आयु सीमा 14 से 45 वर्ष हो। क्लब में महिला व पुरुष दोनों की भागीदारी होनी चाहिये। प्राथमिकता चिन्हित खेल विद्या में रुचि रखने वाले ही सदस्य के रूप में मान्य होंगे। क्लब के सदस्यों में यथासंभव शारीरिक शिक्षक, राष्ट्रीय, अंतराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी व एनआइएस प्रशिक्षक में से एक होना चाहिये. इसके लिए बिहार राज्य खेल प्राधिकरण पटना के पोर्टल पर पंजीकरण कराया जा सकता है। विशेष जानकारी हेल्पलाईन खेल प्राधिकरण द्वारा औपचारिक रूप नंबर 9263885599 व ईमेल के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं। इस पोर्टल पर खेल पर खेल क्लबों के साथ-साथ व्यक्तिगत खिलाड़ी भी पंजीयन कर सकते हैं। पोर्टल के माध्यम से 28 फरवरी तक पंजीकरण किया जा सकता है।आवेदक आवश्यक मानकों को पूरा करते हैं, तो इसे बिहार राज्य खेल प्राधिकरण द्वारा औपचारिक रूप से पंजीकरण किया जाएगा। एथलेटिक्स, तलवारबाजी, कबड्डी, साईक्लिंग, तीरंदाजी, बॉलीबॉल, रग्बी, हॉकी, बैडमिंटन, कुस्ती, शूटिंग,भारोत्तोलन, हैण्डबॉल, फुटबॉल, टेबुल-टेनिस, बॉक्सिंग व सेपक टाकरा जैसे खेल विधाओं को खेल क्लब के गठन के लिए चयनित किया गया है।

कार टी-सेल थेरेपी और बोन मैरो ट्रांसप्लांट गंभीर रक्त विकारों के लिए जीवनदायी उपचार

प्रात : किरण संवाददाता

पटनाः बोन मैरो ट्रांसप्लांट गंभीर रक्त विकारों और कैंसर से पीड़ित व्यक्तियों के लिए एक क्रांतिकारी उपचार विकल्प है। इसमें अस्वस्थ बोन मैरो को स्वस्थ स्टेम सेल्स से बदल दिया जाता है, जिससे शरीर नई और स्वस्थ रक्त सेल्स बनाता है और प्रतिरक्षा प्रणाली को पुनः सशक्त करता है। यह उन मरीजों के लिए विशेष रूप से लाभदायक है, जिनकी स्थिति अन्य उपचारों से ठीक नहीं हो रही हो। बीएमटी ऐसे समय में उम्मीद की किरण बनता है जब अन्य विकल्प सीमित प्रतीत होते हैं। मैक्स सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल साकेत के बोन मैरो ट्रांसप्लांट, हेमेटोलॉजी ऑन्कोलॉजी विभाग के सीनियर डायरेक्टर डॉ. रयाज अहमद ने बताया कि ह्स्टेम सेल्स, बोन मैरो ट्रांसप्लांट का आधार होती हैं, जो स्वस्थ ब्लड सेल्स के निर्माण और रक्त उत्पादन की बहाली में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। प्रत्यारोपण के बाद ये सेल्स बोन मैरो का पुनर्निर्माण करती हैं और रेड ब्लड सेल्स (ऑक्सीजन ले जाने के लिए), व्हाइट ब्लड सेल्स (संक्रमणों से लड़ने के लिए), और प्लेटलेट्स (रक्तस्राव रोकने के लिए) उत्पन्न करती हैं। स्टेम सेल प्रत्यारोपण मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं: ऑटोलॉगस, जिसमें मरीज की अपनी स्वस्थ सेल्स उपयोग की जाती हैं, और एलोजेनिक, जिसमें दाता की सेल्स उन मरीजों के लिए उपयोग की जाती हैं जिनकी बोन मैरो गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त हो।

स्वच्छ भारत मिशन के तहत पंचायत को स्वच्छ व सुंदर बनाने के लिए फैलाई गई जागरूकता

प्रात : किरण संवाददाता

नयानगर (मधेपुरा)। उदाकिशुनगंज प्रखंड क्षेत्र के बुधामा पंचायत में स्वच्छ भारत मिशन के तहत ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन केंद्र का उद्घाटन बुधवार को किया गया। उद्घाटन के मौके पर मौजूद बुधामा पंचायत के मुखिया पंकज कुमार सिंह, ब्लॉक कॉर्डिनेटर राजकिशोर झा, स्वच्छता पर्यवेक्षक गुरुदेव मुखिया, पंचायत सचिव माया कुमारी ने संयुक्त रूप से उद्घाटन किया। इसके उपरांत घर घर कचरा कलेक्शन करने वाली ई रिक्शा को हरी झंडी दिखा कर रवाना किया। इस मौके पर पंचायत के मुखिया श्री सिंह ने कहा स्वच्छ भारत अभियान का मुख्य उद्देश्य ग्रामीणों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाना है। और पंचायत को स्वच्छ और सुंदर बनाने के लिए जागरुकता भी फैलाई जायेगी। मुखिया श्री सिंह ने यह भी कहा की गांव को स्वच्छ और सुंदर बनाने के लिए कचरे को सुनिश्चित स्थान पे रखना अत्यंत आवश्यक है। जिससे गांव मुहल्ला साफ सुथरा के साथ साथ गांव में बीमारियों से भी ग्रामीणों को राहत मिलेगी। श्री सिंह ने कहा कचरा को यत्र तत्र फेंकने से स्वस्थ पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इससे कई दुष्प्रभाव होते है। मौके पर मुखिया श्री सिंह ने ग्रामीणों से अपील किया। अपने घर के आगे साफ सफाई रख कर गांव को स्वच्छ बनाने में सभी ग्रामीणों का सहयोग जरूरी है। मौके पर मोजूद स्वच्छता पर्यवेक्षक गुरुदेव मुखिया ने कहा स्वच्छ भारत अभियान के तहत पंचायत को कूड़ा कचरा से मुक्त बनाने के लिए रिसोर्स रिकवरी सेंटर का निर्माण कराया गया है। जहां ग्रामीण क्षेत्रों में ठोस एवं तरल अपशिष्ट पदार्थों का प्रबन्धन किया जा सके। इस मौके पर मौजूद पूर्व जिप सदस्य अमन कुमार यादव, बुधामा कैंप प्रभारी जीउत राम, उप सरपंच रणवीर कुमार, पूर्व सरपंच केसी पासवान, पवन साहनी, मिथुन कुमार, लाल सिंह, मुसहरु चौधरी, शालिग्राम भारती, मंटू ऋषिदेव, मुकेश मुखिया, पंकज ऋषिदेव, श्रवण सिंह आदि मौजूद थे।

जेपी नेशनल अवार्ड 2024 से नई दिल्ली मे सम्मानित हुए दीप श्रेष्ठ

प्रात : किरण संवाददाता

लोकनायक जयप्रकाश अंतरराष्ट्रीय अध्ययन विकास केन्द्र द्वारा नई दिल्ली में जे पी नेशनल अवार्ड 2024 का आयोजन किया गया। उक्त समारोह में पटना के दीप श्रेष्ठ को फिल्म और टी वी क्षेत्र में बेस्ट डायरेक्टर अवार्ड से सम्मानित किया गया। श्री दीप श्रेष्ठ को यह सम्मान दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर मे आयोजित समारोह में भाजपा के पूर्व सांसद सह एस आई एस के संस्थापक आर के सिन्हा, भाजपा से नरकटियागंज विधायक रश्मि वर्मा और अभय जी द्वारा अंग वस्त्र, पुष्प गुच्छ, प्रमाण पत्र और स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। उक्त समारोह के मुख्य अतिथि पर्यटन एवं सांस्कृतिक मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत थे। समारोह में जाने माने कई फिल्मी हस्तियों और सामाज के विभिन्न क्षेत्र मे काम करने वाले लोगों को भी सम्मानित किया गया। यह समारोह विगत आठ वर्षों से आयोजित हो रहा है। सम्मान प्राप्त करने के बाद बिहार के लब्ध प्रतिष्ठित निर्देशक सह कलाकार दीप श्रेष्ठ ने कहा कि सम्मान मिलने के बाद सम्मानित होने वालों की जवाबदेही और अधिक बढ़ जाता है।

जमीनी विवाद को ले हुई गोली बारी घटना में तीन गिरफ्तार अन्य आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी जारी

प्रात : किरण संवाददाता

शंकरपुर (मधेपुरा)। शंकरपुर थाना क्षेत्र के रायभीर बसंतपुर गांव वार्ड नंबर 13 में वर्षों से चल रहे दो पक्षों के बीच जमीन विवाद मामले में एक चौंकाने वाला मामला सामने आया। इस संबंध में शंकरपुर थाना अध्यक्ष रोशन कुमार ने जनकारी दी। बताते चले कि बीते दिनों मंगलवार की सुबह 11 बजे के आस पास सचेन यादव एवं महेंद्र यादव के बीच हुई हिंसक लड़ाई में जमीनदार सचेन यादव एवं उनके पुत्र गंभीर रूप से घायल हो गया था। जिसका इलाज जननायक कपूर्री ठाकुर मेडिकल कॉलेज में चल रहा है। जानकारी के अनुसार शंकरपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत रायभीर बसंतपुर गांव वार्ड नंबर 13 में जमीनी विवाद में चली गोली। इस गोली कांड में दो व्यक्ति घायल हो गया। घटना के संबंध में बताया गया कि शंकरपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत रायभीर बसंतपुर वार्ड नंबर 13 में विवादित खेत को जोतने को लेकर एक पक्ष के द्वारा मना करने पर विवाद बढ़ गया। जिसमें एक पक्ष के दो लोग मारपीट व गोली लगने से घायल हो गए। पीड़ित सचेन यादव ने बताया कि उनके खेत को ट्रेक्टर से जोता जा रहा था। जिसका विरोध करने पर विरोधी अजय यादव, विजय यादव, ओमप्रकाश यादव, संजय यादव, प्रभाष यादव, रामेश्वर यादव रोशन यादव सहित अन्य ने मारपीट करना शुरू कर दिया। इस बीच गोली भी चलाई गई। जिसमें सचेन यादव एवं ब्रजेश यादव घायल हो गए। दोनों का इलाज मेडिकल कॉलेज में चल रहा है। इस बाबत शंकरपुर थानाध्यक्ष रौशन कुमार ने बताया कि मारपीट की घटना की सूचना मिली थी। जिसके तुरंत बाद स्थल पर पुलिस बल के द्वारा पहुंच कर जांच किया गया। प्राप्त वीडियो के अनुसार निर्दयतापूर्ण रूप से मारपीट की गई है। उन्होंने कहा प्राप्त वीडियो के अनुसार गोली चलने की बात सामने आने पर स्थल निरीक्षण किया गया लेकिन कोई भी खोखा या गोली स्थल पर नहीं मिली। प्राप्त वीडियो के अवलोकन से गोली चलाने की बात सामने नहीं आई है। इसमें दोनों पक्ष के लोगों ने एफआईआर दर्ज कराया है। एक पक्ष से 10 और दूसरे पक्ष से 14 लोगों को नामजद आरोपी बनाया गया है। पुलिस ने फिलहाल तीन लोगों को गिरफ्तार किया है। अन्य आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी जारी है।

सरकार गन्ना के उत्पादन लागत की समीक्षा कर मूल्य घोषित करें

प्रात : किरण संवाददाता

पटना । गन्ना मूल्य में 20रु/ क्विंटल की वृद्धि ऊट के मुहँ में जीरा जैसा। गन्ना का दाम हरियाणा में400रु, पंजाब में401रु ।था बगल नेपाल दे रहा है 418रु। मुख्यमंत्री गन्ना के उत्पादन लागत की समीक्षा कर मूल्य घोषित करें। चीनी के साथ अन्य उत्पादों के कीमतों को जोड़ कर गन्ना का दाम तय हो। कृषि प्रधान बिहार में नये पेराई सत्र 2024-25के लिए गन्ने की कीमत 365एवं375 रु प्रति क्विंटल अपर्याप्त हैं। गन्ने का उत्पादन लागत 600 रु प्रति क्विंटल आता है। बिहार राज्य गन्ना किसान मोर्चा के संयोजक अशोक प्रसाद सिंह तथा सह-संयोजक डा आनन्द किशोर ने इस पर प्रशन्नता व्यक्त की है कि किसानों की बर्षो से रीगा चीनी मिल को चालू करने की चिर लंबित माँग को मुख्यमंत्री जी ने अपने प्रगति यात्रा में पुरा कर उसका उद्घाटन कर रहे हैं ।साथ ही उद्घाटन के साथ रीगा चीनी मिल के मजदूरों की पुनर्वापसी तथा किसानों का बकाया 52 करोड़ रुपये का सीघ्र भुगतान की घोषणा करे ।यही आज किसानों एवं मजदूरों की उनसे माँग है ।गन्ना के बढ़ते उत्पादन लागत को माननीय मुख्यमंत्री जी ने इस यात्रा में महसूस किया है ।यह अच्छी बात है ।परन्तु मूल्य तय करने में लागत की उन्होंने ने अनदेखी किया है। संयुक्त किसान संघर्ष मोर्चा तथा बिहार राज्य गन्ना किसान मोर्चा लगातार मुख्य मंत्री से गन्नामूल्य निर्धारण में हस्तक्षेप करने की सरकार से लगातार मांग करती रही है। हम मुख्यमंत्री जी से आज फिर मांग करतें हैं कि गन्ना का उत्पादन लागत 600रु प्रति क्विंटल से अधिक आता है। इसलिए कम से कम गन्ना का मूल्य 600 रु प्रति क्विंटल घोषित करें। मुख्यमंत्री जी से हमारी मांग है कि किसान संगठनों तथा विभागीय अधिकारियों के साथ गन्ना उत्पादन लागत की समीक्षा कर राजन कमिटी की सिफारिश के आधार पर चीनी सहित गन्ना पराई में उसके सभी उत्पादों का मुल्य जोड़ कर किसान हित में गन्ना मूल्य निर्धारित हो। अभी पडोसी देश नेपाल में 418रु, पंजाब में401रु तथा हरियाणा में 400रु प्रति क्विंटल गन्ना का मूल्य किसानों को भुगतान हो रहा है ।जबकि बिहार के किसानों को सबसे कम कीमत मिल रहा है।

भाकपा के स्थापना शताब्दी वर्ष पूरे होने के अवसर पर आयोजित हुई समारोह

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के शताब्दी वर्ष पर गुरुवार को कॉलेज चौक स्थित भाकपा कार्यालय में पार्टी के वयोवृद्ध नेता एवं बीएनएमयू के पूर्व कुल सचिव प्रो. शचींद्र महतो के द्वारा झंडा रोहण से प्रारंभ हुआ। इस अवसर पर पार्टी कार्यकताओं ने झंडा गीत गाकर पार्टी को मजबूत बनाने एवं सांप्रदायिक और पूंजीवादी ताकत के खिलाफ संघर्ष तेज करने का संकल्प लिया। मौके पर भाकपा के राष्ट्रीय परिषद सदस्य प्रमोद प्रभाकर ने संबोधित करते हुए कहा कि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का जन्म 26 दिसंबर 1925 को कानपुर शहर में साम्राज्यवादियों के खिलाफ राष्ट्रीय आजादी के लिए संघर्ष तेज करने के उद्देश्य हुआ था। उन्होंने कहा कि भारतीय संविधान और लोकतंत्र की रक्षा करेंगे पार्टी संगठन और जन संगठन को मजबूत बनाएंगे तथा देश में वामपंथी जनवादी विकल्प तैयार करेंगे। भाकपा के जिला मंत्री विद्याधर मुखिया ने कहा कि सबसे पहले भाकपा के नेता मौलाना हसरत मोहानी ने ही कांग्रेस के अहमदाबाद अधिवेशन में पूर्ण आजादी का नारा दिया था। भाकपा के राज्य परिषद सदस्य शैलेंद्र कुमार एवं उमाकांत सिंह ने कहा कि आजादी की लड़ाई में दर्जनों कम्युनिस्ट नेताओं को काला पानी की सजा दी गई जेल में यातनाएं दी गई बावजूद कम्युनिस्ट पार्टी के विकास को रोकना संभव नहीं हुआ। किसान नेता रामदेव सिंह एवं मुकुंद प्रसाद यादव ने कहा कि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का चुनाव चिन्ह आजाद भारत का सबसे पुराना चुनाव चिन्ह है हमें पार्टी के गौरवशाली इतिहास पर गर्व है। इस अवसर पर पार्टी के वरीय नेता अंबिका मंडल, दिलीप पटेल, रमेश कुमार शर्मा, मोहम्मद चांद, बाबूलाल मंडल, प्रमोद कुमार सिंह, अरुण कुमार तांती, मोहम्मद सिराज, सच्चीदा शर्मा, अजीत शर्मा, मनोज राम, अनिल पासवान, चंद्रशेखर पोद्दार, भुनेश्वरी शर्मा, मोहम्मद हकीम, दिवाकर कुमार, मोहम्मद फैयाज, सिंटू कुमार, आशीर्वाद कुमार एवं महिला नेत्री अहिल्यादेवी आदि ने अपना विचार प्रकट किया। सभी नेताओं ने कहा कि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के गौरवशाली इतिहास को हम आगे बढ़ाएंगे पार्टी के संकल्पों को धरती पर उतारेंगे, साम्राजवादी और सांप्रदायिक ताकत को परास्त कर समता मूलक समाज बनाएंगे। अंत में भाकपा नेता एवं बी एन एम यू के पूर्व कुल सचिव प्रो. सचिंद्र महतो ने कहा कि आज भी सिद्धांतों और विचारों को मजबूती से मानने वाली पार्टी भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी है, हमें गर्व है कि हम इसके सदस्य हैं। उन्होंने पार्टी को मजबूत बनाने एवं जन संघर्ष को तेज करने का आह्वान किया।

जीरो टॉलरेंस नीति के तहत किसानों को निर्धारित मूल्य पर उर्वरक तथा बीज की शत्त आपूर्ति करने को ले हुई बैठक

मधेपुरा । रबी वित्तीय वर्ष 2024-25 में किसानों को उर्वरक तथा बीज की माँग अत्यधिक रहती है। राज्य में जीरो टॉलरेंस नीति के तहत किसानों को निर्धारित मूल्य पर उर्वरक तथा बीज की शतत आपूर्ति करने हेतु तथा बिक्रेताओं के द्वारा उर्वरकों की कालाबाजारी एवं जमा खोरी पर रोक लगाने हेतु किसान के हित में जिला स्तर पर क्विक रिसपोन्स टीम का गठन किया गया हैं। उक्त कार्य हेतु बेचन विश्वास, लिपिक, जिला कृषि कार्यालय, मधेपुरा को प्राधिकृत किया गया है। किसानों द्वारा प्राप्त शिकायत को प्रत्येक दिन शिकायतपंजी में दर्ज कर इसका निराकरण जिला कृषि पदाधिकारी द्वारा किया जाना है। इस कार्य में श्री विश्वास को सहयोग करने हेतु मो. मोती रहमान को प्राधिकृत किया गया है। कार्यालय कार्य अवधि 10 बजे से संध्या 5 बजे तक कार्यरत रहेगी, जिसका संपर्क सूत्र- 06476295020 है। किसान उर्वरक एवं बीज से संबंधित शिकायत संपर्क सूत्र पर निर्धारित समय अवधि के बीच कर सकते है। किसी प्रकार की शिकायत हेतु 6476295020 एवं जिला कृषि पदाधिकारी फोन नं0-9431818758 से संपर्क किया जा सकता है।

प्रशिक्षु आईएएस कृतिका मिश्रा को नप के ईओ के साथ बीडीओ व सीईओ की भी मिली जिम्मेदारी

प्रात : किरण संवाददाता

उदाकिशुनगंज (मधेपुरा) । सामान्य प्रशासन विभाग बिहार पटना की दिनांक छह मार्च 2024 की अधिसूचना और दिनांक 19 मार्च 2024 के आलोक में बिहार लोक प्रशासन एवं ग्रामीण विकास संस्थान ब्रह्मयोनी पर्वत कुशडीहरा गया के दिनांक 30 मार्च 2024 के पत्र आलोक में सामाहरणालय मधेपुरा (सामान्य शाखा) के दिनांक 18 नवंबर 2024 एवं दिनांक 24 नवंबर 2024 द्वारा निर्धारित जिला स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम पूनर्निधारित किया गया है। इसके तहत उदाकिशुनगंज अनुमंडल के एडिशनल एसडीओ, नप के ईओ के साथ साथ अब आईएएस कृतिका मिश्रा को उदाकिशुनगंज प्रखंड का बीडीओ और सीओ की भी जिम्मेदारी मिली है। वह 16 मार्च 2025 तक प्रशिक्षण के दौरान अपने कर्तव्यों का निर्वहन करेंगे ।उक्त के आलोक में सुश्री कृतिका मिश्रा भाप्रसे (2023) प्रशिक्षु सहायक समाहर्त्ता-सह- सहायक दण्डाधिकारी, मधेपुरा को आदेश दिया गया है कि वह प्रखंड विकास पदाधिकारी, उदाकिशुनगंज एवं अंचल अधिकारी, उदाकिशुनगंज का सम्पूर्ण प्रभार ग्रहण कर संबंधित कार्यालय के सम्पूर्ण दायित्वों का निर्वहन करना सुनिश्चित करेंगे। प्रखंड विकास पदाधिकारी अंचल अधिकारी, उदाकिशुनगंज को निदेश दिया गया है कि उन्हें प्रशिक्षण के दौरान आवश्यक सहयोग प्रदान करेंगे। बिहार कोषागार संहिता 2011 के नियम 84 के तहत सुश्री कृतिका मिश्रा भाप्रसे (2023), प्रशिक्षु सहायक समाहर्त्ता-सह-सहायक दण्डाधिकारी, मधेपुरा को प्रखंड अंचल कार्यालय, उदाकिशुनगंज के स्थापना अन्तर्गत सभी शीर्षों के लिए उपर्युक्त अवधि में निकासी एवं व्ययन पदाधिकारी की शक्ति प्रदान की गई है।

एनएसएस तथा एनसीसी के संयुक्त तत्वावधान में वीर बाल दिवस पर परिचर्चा का हुआ आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा ।ठाकुर प्रसाद महाविद्यालय के में राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) तथा राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी) के संयुक्त तत्वावधान में वीर बाल दिवस के अवसर पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उपस्थित शिक्षकों एवं शोधार्थियों ने सिखों के दसवें गुरु गुरु गोबिंद सिंह के दो छोटे साहेबजादों बाबा जोरावर सिंह एवं बाबा फतेह सिंह को याद किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि बीएनएमयू में इतिहास एवं संस्कृति विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. ललन प्रसाद अद्री ने कहा कि यह दिन बाबा जोरावर सिंह एवं बाबा फतेह सिंह की शहादत दिवस के रूप में जाना जाता है। इन दोनों वीरों ने अपनी छोटी उम्र में ही धर्म एवं राष्ट्र की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया। इन दोनों ने निरंकुश शासक के सामने झुकने से इनकार कर दिया और साहस के साथ अत्याचारियों का सामना किया। इनका साहस एवं बलिदान अविस्मरणीय है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रधानाचार्य प्रो. कैलाश प्रसाद यादव ने कहा कि सिखों के दसवें गुरु गोबिंद सिंह को चार बेटे हुए- अजीत, जुझार, जोरावर और फतेह। इन चारों ने मुगल सेना के अत्याचारों का डटकर मुकाबला किया। लेकिन दुर्भाग्य से मुगलों ने अत्यंत अल्पायु में ही इन चारों वीर बालकों की हत्या कर दी। उन्होंने बताया कि दोनों वीर बालकों की शहादत की याद में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वर्ष 2022 से वीर बाल दिवस मनाने की शुरूआत की है। इसी कड़ी में सभी शिक्षण संस्थानों में यह दिवस मनाया जाता है ।कार्यक्रम का संचालन करते हुए दर्शनशास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ. सुधांशु शेखर ने कहा कि योद्धा संन्यासी गुरु गोविंद सिंह एवं उनके पूरे परिवार का शौर्य एवं बलिदान अविस्मरणीय है। भारत सरकार द्वारा इस अवसर पर देश के युवाओं और बच्चों को उनके अद्वितीय योगदान और कार्यों के लिए सम्मानित भी किया जाता है। इस अवसर पर सुमित कुमार, राजनंदन कुमार, केशव कुमार, रुदल कुमार, सत्यम कुमार, नीरज कुमार, नितीश कुमार, अरुण, रंजन कुमार, गौरव सिंह, सुभाष कुमार, सत्यम कुमार, पुरंदर यादव, राजीव कुमार, दिलखुश कुमार, राहुल कुमार, अंकेश कुमार, दिलखुश कुमार, संजीत कुमार, हिमांशु कुमार, धनंजय कुमार, सुनील कुमार, शोधार्थी सौरभ कुमार चौहान आदि उपस्थित थे।

ठाकुर प्रसाद महाविद्यालय में 28 दिसंबर को होने वाले संवाद में देशभर के दर्शनशास्त्रियों का होगा जमावड़ा

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा ।बीएनएमयू की अंगीभूत इकाई ठाकुर प्रसाद महाविद्यालय में आगामी 28 दिसंबर, 2024 को महाकाव्यों का दर्शन विषयक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत संचालित भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित इस कार्यक्रम में देशभर के दर्शनशास्त्रियों का जमावड़ा होगा। कार्यक्रम का उद्घाटन भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के पूर्व अध्यक्ष एवं भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला (हिमाचल प्रदेश) के राष्ट्रीय फेलो प्रो. रमेशचंद्र सिन्हा करेंगे। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता दर्शनशास्त्र विभाग, हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर (मध्यप्रदेश) के पूर्व अध्यक्ष तथा अखिल भारतीय दर्शन परिषद् के पूर्व महासचिव प्रो. (डॉ.) अम्बिका दत्त शर्मा होंगे। उन्होंने बताया कि इस अवसर पर मुख्य अतिथि पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़) में दर्शनशास्त्र विभाग की सेवानिवृत्त अध्यक्षा प्रो. शोभा निगम होंगी। कार्यक्रम की अध्यक्षता दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उत्तर प्रदेश) के पूर्व प्रति कुलपति एवं उत्तर भारत दर्शन परिषद् के पूर्व अध्यक्ष प्रो. सभाजीत मिश्र करेंगे। कार्यक्रम में संपूर्ति वक्तव्य दर्शनशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश) के पूर्व अध्यक्ष तथा अखिल भारतीय दर्शन परिषद् के अध्यक्ष प्रो. जटाशंकर द्वारा दिया जाएगा। स्वागत भाषण ठाकुर प्रसाद महाविद्यालय, मधेपुरा के प्रधानाचार्य प्रो. कैलाश प्रसाद यादव द्वारा दिया जाएगा। संचालन दर्शनशास्त्र विभागाध्यक्ष डॉ. सुधांशु शेखर करेंगे धन्यवाद ज्ञापन पटना विश्वविद्यालय, पटना में दर्शनशास्त्र विभाग की पूर्व अध्यक्षा एवं दर्शन परिषद्, बिहार की अध्यक्षा प्रो. पूनम सिंह करेंगी।

पिछले 15 दिनों तक चले बिहार सरस मेला का गुरुवार को हुआ समापन

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। ग्रामीण विकास विभाग के तत्वाधान में जीविका के द्वारा आयोजित बिहार सरस मेला कई मायनो में खास रहा । अब तक आयोजित सभी बिहार सरस मेला की तुलना में यह मेला इस बार का सरस मेला खरीद-बिक्री एवं आगंतुकों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि कर गया । औसतन प्रतिदिन 1 लाख लोग आये। 15 दिनों में 16 लाख से अधिक लोग आये ' लगभग 21 करोड़ रुपये के उत्पादों एवं व्यंजनों की खरीद-बिक्री हुई। बिहार सरस मेला का अवलोकन चार-चार पीढ़ियों ने किया और सदियों पुरानी संस्कृति, शिल्प, परम्परा और देशी व्यंजनों को देख हर्षित हुए ' सरस मेला अपने अन्दर लोक संस्कृति, परंपरा एवं लोक कला को अपने अंदर समेटे हुए राष्ट्रीय स्तर पर परिलक्षित हुआ और आगंतुकों को लुभाया ' मेला में बिहार समेत आँध्रप्रदेश, आसाम, छत्तीसगढ़, दिल्ली, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, झारखण्ड, केरला, कर्नाटका, मध्य प्रदेश, मणिपुर, महाराष्ट्र, मेघालय, ओड़िसा, पंजाब, राजस्थान, तमिलनाडु,तेलंगाना,उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, एवं पश्चिम बंगाल से आई स्वयं सहायता समूह से जुडी ग्रामीण शिल्पकार एवं स्वरोजगारी अपने-अपने प्रदेश के शिल्प, उत्पाद, परंपरा, संस्कृति एवं व्यंजन को लेकर उपस्थित हुए । देश के 25 राज्यों से आई स्वयं सहायता समूह से जुडी महिलाओं एवं स्वरोजगारियों के 500 से अधिक स्टॉल से ग्रामीण शिल्प एवं कलाकृतियाँ एवं उत्पादों की खरीद-बिक्री हुई ' जिसमे 300 स्टॉल स्वयं सहायता समूह से जुडी महिलाओं के लिए स्टॉल , फूड जोन में दीदी की रसोई समेत व्यंजनों के 50 स्टॉल के साथ ही अन्य डेढ़ सौ से अधिक स्टॉल , महिला विकास निगम ,महिला उद्योग संघ तथा विभिन्न विभागों, संस्थानों एवं बैंको के लिए रहे जहाँ पर विभिन्न योजनाओं से आगंतुकों को जागरूक एवं लाभान्वित किया जाता रहा। भाषा पर आधारित हैंगर बिहा में बोली जाने वाली भाषाओँ के नाम पर बने हैंगर में भाषा को भी स्थापित किया ' मगही, भोजपुरी , अंगिका एवं मैथली के नाम पर बने हैंगर्स में शिल्प बाजार सजा ।

केंद्रीय एमएसएमई मंत्री से मिले कांग्रेस नेता मिन्नत रहमानी -सुपौल जिले में इंडस्ट्रियल कॉरिडोर स्थापित किये जाने का किया अनुरोध

प्रात : किरण संवाददाता

सुपौल। विगत विधानसभा चुनाव में सुपौल विधानसभा से महागठबंधन के प्रत्याशी रहे कांग्रेस नेता मिन्नत रहमानी लगातार सुपौल जिले में विकास कार्यों को लेकर प्रत्यनशील रहते हैं। इसी कड़ी में उन्होंने बुधवार को दिल्ली में केंद्री सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्री जीतन राम मांझी से मुलाकात की है। मीटिंग के दौरान उन्होंने जिले में इंडस्ट्रियल कॉरिडोर एवं टेक्नोलॉजी एक्सटेंशन सेंटर स्थापित किये जाने को लेकर विस्तृत चर्चा की और उनसे अनुरोध किया कि क्षेत्र के लिए उनकी मांगों पर विचार किया जाये। मुलाकात के दौरान उन्होंने केंद्रीय मंत्री से कहा कि बिहार में कोसी क्षेत्र अभी भी विकास से कोसो दूर है। यहां के लाखों मजदूरों, कामगार एवं युवा नौकरी हेतु लगातार दूसरे प्रदेशों में पलायन हो रहे हैं। इस क्षेत्र में मखाना प्रोसेसिंग यूनिट, जूट मिल, मछली पालन, मक्का उत्पादन आदि को यदि सरकार प्रोत्साहित करे तो सिर्फ सुपौल या कोसी ही नहीं बल्कि बिहार के आर्थिक विकास में बड़ी भूमिका निभाई जा सकती है । विगत दिनों आपने बिहार में इंडस्ट्रियल कॉरिडोर समेत पाँच टेक्नोलॉजी एक्सटेंशन सेंटर स्थापित करने की प्रक्रिया शुरू की है जो कि एक ऐतिहासिक कदम है। वहीं, पाँचों केंद्र में एक भी केंद्र कोसी या सीमांचल ज़िले में नहीं है। अतः आप से आग्रह है कि बिहार का दूसरा इंडस्ट्रियल कॉरिडोर एवं एक टेक्नोलॉजी एक्सटेंशन सेंटर सुपौल में स्थापित करने की कृपा की जाए, जिससे हजारों परिवार को रोजगार का बड़ा अवसर मिलेगा और पलायन पर काफी हद तक रोक लगेगी। मीटिंग के दौरान केंद्रीय मंत्री जीतन राम मांझी ने मांगों को पूरा किये जाने का भरोसा दिया है। उन्होंने कहा कि वे राज्य के विकास के लिए लगातार काम रहे हैं। इस दौरान मिन्नत रहमानी ने केंद्रीय मंत्री आग्रह किया कि एकबार वे सुपौल का स्वयं दौरा कर हकीकत और वस्तु स्थिति को देखें, जिससे जिले वासियों को खुशी होगी। केंद्रीय मंत्री से मुलाकात के बाद मीडिया में बयान जारी कर मिन्नत रहमानी ने ये आरोप लगाया है पिछले तीस वर्ष से लगतार सुपौल से बिहार सरकार और केंद्र सरकार में मंत्री हैं लेकिन सुपौल में उद्योग लगाने हेतु कोई पहल नहीं किया गया ।

आज भारतीय महिला टीम की नजरें वेस्टइंडीज का सूपड़ा साफ करने पर

वडोदरा (एजेंसी)। भारतीय महिला टीम खराब फॉर्म से जूझ रही वेस्टइंडीज के खिलाफ तीसरे और आखिरी एक दिवसीय मैच में शुक्रवार को 'क्लीन स्वीप' के इरादे से उतरेगी। ऑस्ट्रेलिया दौरे पर तीनों वनडे हारने के बाद भारतीय टीम ने अपनी सरजमीं पर वेस्टइंडीज के खिलाफ जीत की राह पर वापसी की है। भारतीय टीम ने श्रृंखला में 300 से अधिक के स्कोर बनाए हैं। पहले मैच में स्मृति मंधाना के साथ पारी का आगाज करने वाली पत्रिका रावल ने दूसरे वनडे में बेहतर प्रदर्शन करके उम्मीद जगाई है। हरलीन देयोल ने दूसरे मैच में तीसरे नंबर पर उतरकर शतक जड़ा और वह इस लय को कायम रखना चाहेंगी। पूरी तरह से फिट होने के बाद कप्तान हरमनप्रीत कौर भी आत्मविश्वास से भरी लग रही हैं लेकिन अभी तक बड़ी पारी नहीं खेल पाई हैं। गेंदबाजी में रेणुका ठाकुर ने तेज गेंदबाजी में अगुवाई की है जबकि युवा टिटास साधू को भी विकेट मिले हैं। लेग स्पिनर प्रिया मिश्रा ने भी प्रभावित किया है। यह मुकाबला चूंकि औपचारिकता का है लिहाजा भारतीय टीम में तनुजा कंवर और तेजल हसब्निस को उतारा जा सकता है। वेस्टइंडीज टीम को जीत के साथ स्वदेश लौटने के लिए अपने प्रदर्शन में काफी सुधार करना होगा। उसके लिए सिर्फ हेली मैथ्यूज ही प्रभावित कर सकी हैं।

टीमें :

भारत – हरमनप्रीत कौर (कप्तान), स्मृति मंधाना (उपकप्तान), प्रतिका रावल, जेमिमा रोड्रिग्स, हरलीन देयोल, रिचा घोष (विकेटकीपर), उमा छेत्री (विकेटकीपर), तेजल हसब्निस, दीप्ति शर्मा, मिन्नू मणि, प्रिया मिश्रा, तनुजा कंवर, टिटास साधु, साइमा ठाकुर, रेणुका सिंह ठाकुर।

वेस्टइंडीज – हेली मैथ्यूज (कप्तान), शेमाइन कैंपबेल (उप-कप्तान), आलिया एलेने, शमिलिया कॉनेल, नेरिसा क्राफ्टन, डींड्रा डोटिन, अफी फ्लेचर, शबिका गजनबी, चिनेले हेनरी, ज़ैदा जेम्स, कियाना जोसेफ, मैंडी मंगरू, अश्मिनी मुनिसर, करिश्मा रामहरैक, राशदा विलियम्स।

समय – सुबह 9.30 बजे से।

टिम साउदी करेंगे आईएलटी 20 के तीसरे संस्करण में शारजाह वारियर्स की कप्तानी

शारजाह (एजेंसी)। न्यूजीलैंड के तेज गेंदबाजों में से एक टिम साउदी डीपी वर्ल्ड आईएलटी-20 के तीसरे संस्करण के लिए शारजाह वारियर्स टीम की कप्तानी करेंगे। शारजाह वारियर्स का मानना है कि साउदी का

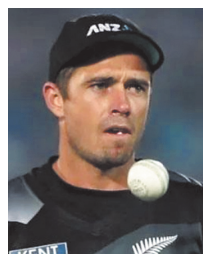

अनुभव और खेल का ज्ञान आईएलटी-20 के आगामी सीजन के लिए टीम को मजबूती देगा। आईएलटी-20 तीसरे सत्र की शुरुआत 11 जनवरी को होगी और शारजाह वारियर्स अपना पहला मैच 12 जनवरी को गुजरात जायंट्स के खिलाफ खेलेगा। इस अवसर पर टिम साउदी ने कहा, 'शारजाह वारियर्स के पास एक शानदार टीम है, जिसमें कई बेहतरीन बल्लेबाज और योग्य और कुशल गेंदबाज हैं। इतने प्रतिभाशाली क्रिकेटरों की कप्तानी करना और उनके साथ रहना वाकई रोमांचक होगा। टीम प्रबंधन के साथ मेरी बातचीत भी अब तक काफी सफल रही है और हमें पूरा भरोसा है कि यह सत्र अच्छा रहेगा। मैं टीम में शामिल होने और उसका नेतृत्व करने के लिए वाकई उत्साहित हूं।

भारत-आस्ट्रेलिया टेस्ट

चार खिलाड़ियों के अर्धशतक, हेड शून्य पर आउट, ऑस्ट्रेलिया 311/6

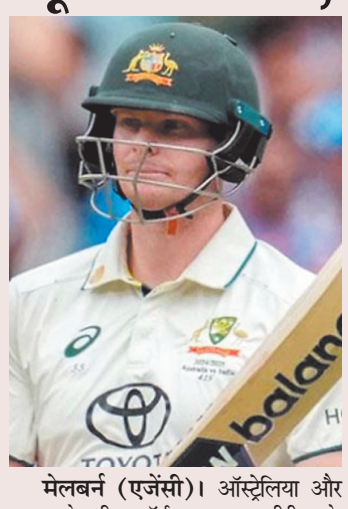

मेलबर्न (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया और भारत के बीच बॉर्डर गावस्कर सीरीज के तहत चौथे टेस्ट बॉक्सिंग डे टेस्ट के रूप में खेला जा रहा है। ऑस्ट्रेलिया ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए 6 विकेट के नुकसान पर 311 रन बनाते हुए पहले दिन की समाप्ति की। स्टंप्स तक स्टीव स्मिथ 68 रन बनाकर पैट कमिंस (8) के साथ क्रीज पर मौजूद रहे।

उस्मान ख्वाजा (57), सैम कॉन्स्टास (60) और मार्नस लाबुशाने (72) की अर्धशतकीय पारियों के बाद स्मिथ ने भी अर्धशतक लगा दिया है। वहीं इस बार ट्रेविस हेड को भारतीय गेंदबाजों ने अपना प्रदर्शन शुरू करने से पहले ही आउट कर दिया। ऑस्ट्रेलियाई कप्तान पैट कमिंस ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी उस्मान ख्वाजा और सैम कॉन्स्टास की सलामी जोड़ी ने अच्छी शुरुआत करते हुए पहले विकेट के लिए 89रनों की साझेदारी की। 20वें ओवर में रवींद्र जडेजा ने सैम कॉन्स्टास को पगबाधा आउट कर इस साझेदारी को तोड़ा। कॉन्स्टास ने 65 गेंदों में छह चौके और दो छक्के लगाते हुए पदार्पण टेस्ट में अपना पहला अर्धशतक बनाते हुए (60)रनों की पारी खेली।

इसके बाद बल्लेबाजी करने आये मार्नसन लाबुशेन ने उस्मान ख्वाज के साथ मोर्चा संभाला। दोनों बल्लेबाजों के बीच दूसरे विकेट लिए 65 रनों की साझेदारी हुई। 45वें ओवर में जसप्रीत बुमराह ने उस्मान ख्वाजा को केएल राहुल के हाथों कैच आउट कराकर इस साझेदारी को तोड़ा।

स्टीव स्मिथ का अर्धशतक, डॉन ब्रैडमैन के साथ एलीट क्लब में हुए शामिल

स्टीव स्मिथ मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड पर टेस्ट मैचों में 10 या उससे अधिक बार 50 प्लस स्कोर बनाने वाले दिग्गज डॉन ब्रैडमैन बल्लेबाजों की एलीट सूची में शामिल हो गए हैं। दाएं हाथ के इस बल्लेबाज ने रोहित शर्मा की कप्तानी वाली भारत के खिलाफ बॉक्सिंग डे टेस्ट में यह उपलब्धि हासिल की। ??पहले दिन 35 वर्षीय स्मिथ ब्रैडमैन, ग्रेग चैपल और रिकी पोंटिंग के साथ इस सूची में शामिल हो गए। चैपल 17 टेस्ट मैचों में 13 पचास प्लस स्कोर के साथ सूची में शीर्ष पर हैं। ब्रैडमैन और पोंटिंग मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड पर क्रमशः 12 और 11 पचास प्लस स्कोर के साथ सूची में दूसरे और तीसरे स्थान पर हैं। स्मिथ ने मेलबर्न टेस्ट के पहले दिन चाय के बाद के सत्र में 71 गेंदों पर अपना अर्धशतक पूरा किया।

ग्रेग चैपल – 17 टेस्ट में 13
डॉन ब्रैडमैन – 11 टेस्ट में 12
रिकी पोंटिंग – 15 टेस्ट में 11
स्टीव स्मिथ – 12 टेस्ट में 10

स्टीव स्मिथ एक और बड़ी उपलब्धि के करीब

स्मिथ फिलहाल टेस्ट क्रिकेट में 9000 रन बनाने वाले ऑस्ट्रेलिया के चौथे बल्लेबाज बनने के करीब हैं। उनसे पहले पोंटिंग, एलन बॉर्डर और स्टीव वॉ हैं। पर्थ और एडिलेड में बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के पहले दो टेस्ट में स्मिथ का प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा। ब्रिसबेन के गाबा में तीसरे टेस्ट में शानदार शतक के साथ स्मिथ ने फॉर्म में वापसी की। पहली पारी में उन्होंने 190 गेंदों पर 12 चौकों की मदद से 101 रन बनाए जिसके बाद जसप्रीत बुमराह ने उनका विकेट लिया। उन्होंने चौथे विकेट के लिए ट्रैविस हेड के साथ 241 रनों की साझेदारी भी की। ऑस्ट्रेलिया पिछली दो बार 2018-19 और 2020-21 में भारत के दौरे पर हारने के बाद मौजूदा टेस्ट श्रृंखला जीतने की कोशिश कर रहा है।

खेल जगत 2024

ये हैं इस साल में हुए भारतीय खेल जगत के 5 सबसे बड़े विवाद

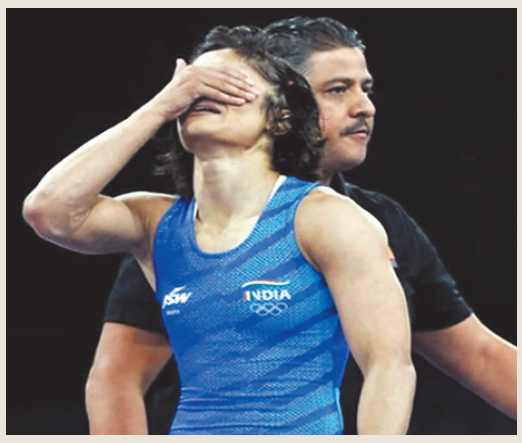

नईदिल्ली (एजेंसी)। साल 2024 भारतीय खेल जगत के लिए कई महत्वपूर्ण उपलब्धियों का वर्ष रहा। जहां एक ओर रोहित शर्मा की कप्तानी में भारतीय क्रिकेट टीम ने वेस्टइंडीज और यूएसए की मेज़बानी में टी20 वर्ल्ड कप जीता, वहीं चेस में डी गुकेश ने चीन के डिंग लिरेन को हराकर वर्ल्ड विजेता बने। साल 2024 भारतीय खेल जगत के लिए कई महत्वपूर्ण उपलब्धियों का वर्ष रहा। जहां एक ओर रोहित शर्मा की कप्तानी में भारतीय क्रिकेट टीम ने वेस्टइंडीज और यूएसए की मेज़बानी में टी20 वर्ल्ड कप जीता, वहीं चेस में डी गुकेश ने चीन के डिंग लिरेन को हराकर वर्ल्ड चैंपियन बनने का इतिहास रच दिया। पेरिस ओलंपिक में भी भारतीय खिलाड़ियों ने अच्छा प्रदर्शन किया, जहां नीरज चोपड़ा ने सिल्वर मेडल जीता और मनु भाकर ने शूटिंग में दो मेडल हासिल किए। हालांकि, इस वर्ष खेल जगत में कुछ विवाद भी रहे, जिनकी चर्चा काफी रही। आइए जानते हैं 2024 के पांच प्रमुख खेल विवादों के बारे में।

1. **पेरिस ओलंपिक में विनेश फोगाट की डिसक्वालीफिकेशन** – पेरिस ओलंपिक में भारतीय महिला पहलवान विनेश फोगाट के लिए यह साल बेहद दुखद रहा। वह गोल्ड मेडल मुकाबले में पहुंच चुकी थीं, लेकिन 100 ग्राम अधिक वजन के कारण उन्हें फाइनल से डिसक्वालीफाई कर दिया गया। इस फैसले के बाद देशभर में गुस्सा फैल गया। फोगाट ने कोर्ट ऑफ आर्बिट्रेशन फॉर स्पोर्ट्स (सीएएस) में अपील की, लेकिन उनका फैसला भी उनके खिलाफ ही आया। इस फैसले के बाद फोगाट ने रेसलिंग से संन्यास लेने की घोषणा की।
2. **इगोर स्टिमैक और एआईएफएफ के बीच विवाद** – 2024 में भारतीय फुटबॉल में भी बड़ा विवाद सामने आया, जब अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) ने मुख्य कोच इगोर स्टिमैक को बर्खास्त कर दिया। टीम इंडिया के फीफा वर्ल्ड कप 2026 के लिए क्वालीफाई न कर पाने पर यह कदम उठाया गया। स्टिमैक ने एआईएफएफ के फैसले की आलोचना करते हुए बकाए का भुगतान न किए जाने का आरोप लगाया। बाद में एआईएफएफ ने उन्हें 400,000 अमेरिकी डॉलर का बकाया भुगतान किया।
3. **अंतिम पंघाल का पेरिस ओलंपिक से स्वदेश लौटना** – पेरिस ओलंपिक में एक और विवाद तब उठा जब भारतीय पहलवान अंतिम पंघाल को नियमों की अनदेखी करने के कारण वापस भारत लौटना पड़ा। पंघाल ने खेल गांव से बाहर जाने के लिए अपना आधिकारिक कार्ड अपनी बहन को दे दिया था, जो नियमों के खिलाफ था। इसके परिणामस्वरूप उन्हें देश वापस भेज दिया गया और इस मामले में उन्हें अनुशासनात्मक कार्रवाई का सामना करना पड़ा।
4. **बीसीसीआई के केंद्रीय अनुबंध से ईशान किशन और श्रेयस अय्यर का बाहर होना** – बीसीसीआई ने साल की शुरुआत में ईशान किशन और श्रेयस अय्यर को अपने केंद्रीय अनुबंध से बाहर कर दिया। दोनों पर भारतीय टीम से बाहर रहते हुए घरेलू क्रिकेट खेलने का आदेश दिया गया था। बाद में किशन ने निजी कारणों से क्रिकेट से ब्रेक लिया और अय्यर ने भी इंग्लैंड के खिलाफ घरेलू टेस्ट सीरीज में शामिल होने के बजाय फिटनेस समस्याओं का हवाला दिया। इन दोनों को अनुशासन के उल्लंघन के कारण केंद्रीय अनुबंध से बाहर किया गया।
5. **संजीव गोयनका और केएल राहुल के बीच विवाद** – 2024 आईपीएल के दौरान एक और विवाद सामने आया, जब लखनऊ सुपर जायंट्स के मालिक संजीव गोयनका ने कप्तान केएल राहुल को एक मैच के बाद मैदान पर फटकार लगाई। लखनऊ को सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा था और इस हार के बाद गोयनका राहुल से बातचीत करते हुए दिखे। यह बातचीत काफी तीखी थी और इसने एक बड़ा विवाद खड़ा कर दिया। कई फैंस ने गोयनका की राहुल को सार्वजनिक रूप से अपमानित करने के लिए आलोचना की।इन विवादों ने 2024 में भारतीय खेल जगत में काफी चर्चा बटोरी, हालांकि इसके बावजूद भारतीय खिलाड़ियों ने अपनी मेहनत और प्रदर्शन से कई उपलब्धियां भी हासिल की।

कोंस्टास से जानबूझकर टकराए कोहली पर आईसीसी सख्त, भारी जुर्माने के साथ एक डिमेरिट अंक भी जुड़ा

मेलबर्न (एजेंसी)। अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) मेलबर्न में बॉक्सिंग डे टेस्ट के पहले दिन बल्लेबाजी स्टार विराट कोहली और ऑस्ट्रेलियाई किशोर डेब्यूटेंट सैम कोंस्टास के बीच मैदान पर हुई झड़प की समीक्षा के बाद कोहली पर मैच फीस का 20 प्रतिशत जुर्माना लगाया गया है। इसी के साथ ही उनके अनुशासनात्मक रिकॉर्ड में एक डिमेरिट अंक जोड़ा गया है।

यह घटना ऑस्ट्रेलियाई पारी के 10वें ओवर के बाद हुई जब कोहली और कोंस्टास के एक दूसरे के पास से गुजरते हुए कंधे टकरा गए। ऐसा लग रहा था कि कोहली जानबूझकर युवा सैम कोंस्टास से टकरा गए थे। उस समय कमेंट्री कर रहे पूर्व ऑस्ट्रेलियाई कप्तान रिकी पोंटिंग ने टिप्पणी की कि उनका मानना ??है कि कोहली ने जानबूझकर ऐसा किया था। रिप्ले से पता चला कि कोहली को अपनी गति के बारे में पूरी जानकारी थी, जबकि कोंस्टास अपना सिर नीचे करके अपने दस्ताने ठीक कर रहे थे, और अनजाने में भारतीय बल्लेबाज से टकरा गए।

कोहली पर जुर्माने से पहले

आईसीसी के एक वरिष्ठ सूत्र के अनुसार अनुशासनात्मक कार्रवाई की जानकारी दी गई थी। सूत्र ने खुलासा किया, अब मैच रेफरी और अंपायरों को फुटेज की समीक्षा करनी है और स्थिति का आकलन करना है। वे इसमें शामिल खिलाड़ियों को स्पष्टीकरण के लिए बुला सकते हैं। सूत्र ने कहा, अगर कोहली द्वारा दिया गया स्पष्टीकरण अधिकारियों को संतुष्ट नहीं करता है, तो उन्हें डिमेरिट पॉइंट के रूप में सजा का सामना करना पड़ सकता है।

नियम क्या कहता है ?

खेल के नियमों के संरक्षक मैरीलेबोन क्रिकेट क्लब (एमसीसी) के अनुसार, 'किसी अन्य खिलाड़ी के साथ अनुचित और जानबूझकर शारीरिक संपर्क बनाना' लेवल 2 का अपराध है। यह MCC कानून के अध्याय 42.1 – अस्वीकार्य आचरण के अंतर्गत आता है।

प्लेइंग 11

- **ऑस्ट्रेलिया** – उस्मान ख्वाजा, सैम कोंस्टास, मार्नस लाबुशेन, स्टीवन स्मिथ, ट्रैविस हेड, मिशेल मार्श, एलेक्स कैरी (विकेट कीपर), पैट कमिंस (कप्तान), मिशेल स्टार्क, नाथन लियोन, स्कॉट बोलैंड
- **भारत** – यशस्वी जयसवाल, केएल राहुल, रोहित शर्मा (कप्तान), विराट कोहली, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), रवींद्र जड़ेजा, नितीश कुमार रेड्डी, वाशिंगटन सुंदर, जसप्रित बुमरा, मोहम्मद सिराज, आकाश दीप

डेब्यू टेस्ट में चमके सैम कोंस्टास, अर्धशतक बनाने वाले सबसे युवा खिलाड़ियों में शामिल हुए

मेलबर्न (ऑस्ट्रेलिया) (एजेंसी)। डेब्यूटेंट सैम कोंस्टास ने गुरुवार को मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड पर भारत के खिलाफ बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के बॉक्सिंग डे टेस्ट के दौरान ऑस्ट्रेलिया के लिए एक बड़ी उपलब्धि हासिल की। ??कोंस्टास टेस्ट क्रिकेट में ऑस्ट्रेलिया के लिए अर्धशतक बनाने वाले दूसरे सबसे युवा खिलाड़ी बन गए हैं। 19 साल और 85 दिन की उम्र में कोंस्टास ने एमसीजी में अपना पहला अंतरराष्ट्रीय अर्धशतक लगाते हुए रिकॉर्ड बुक में अपना नाम दर्ज करवाया है। इयान क्रेग इस सूची में शीर्ष स्थान पर हैं। उन्होंने 1953 में 17 वर्ष और 240 दिन की उम्र में अपना पहला अर्धशतक लगाया था। नील हार्वे 1948 में 19 वर्ष और 121 दिन की उम्र में अर्धशतक लगाने के बाद तीसरे स्थान पर हैं। इस बीच आर्ची जैक्सन 1929 में 19 वर्ष और 150 दिन की उम्र में

अर्धशतक लगाने के साथ चौथे स्थान पर हैं। युवा बल्लेबाज ने भारत के खिलाफ अपने डेब्यू मैच में 65 गेंदों पर 60 रनों की पारी खेली। उन्होंने क्रीज पर अपने समय के दौरान 6 चौके और 2 छक्के लगाए।

19 वर्षीय कोंस्टास ने गुरुवार को निडर क्रिकेट खेला। हालांकि 20वें ओवर में भारतीय स्पिनर रवींद्र जडेजा द्वारा आउट होने पर उनकी पारी समाप्त हो गई। पर्थ टेस्ट के बाद भारत के दौरे पर आए प्रधानमंत्री एकादश के खिलाफ दो दिवसीय मैच में खेलते हुए कोंस्टास ने मेहमान टीम के खिलाफ शतक बनाकर सुर्खियां बटोरीं। अपने 11 प्रथम श्रेणी मैचों में कोंस्टास ने 42.2 की औसत से 718 रन बनाए हैं, जिसमें दो शतक और तीन अर्धशतक शामिल हैं। कोंस्टास ने ऑस्ट्रेलिया की आईसीसी 19 विश्व कप 2024 जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्होंने सात पारियों में 27.28 की औसत से 191 रन बनाए जिसमें एक शतक भी शामिल है। उन्होंने बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी से पहले ऑस्ट्रेलिया ए और भारत ए के बीच दो मैचों की सीरीज में भी हिस्सा लिया, जिसमें उन्होंने 4 पारियों में 92 रन बनाए, जिसमें मैच जीतने वाली 73* रन की पारी भी शामिल थी। भारत के खिलाफ वार्म-अप पिंक-बॉल गेम में उन्होंने एक दुर्जेय भारतीय आक्रमण के खिलाफ 97 गेंदों पर 107 रनों की शानदार पारी खेलकर अपना दबदबा कायम किया जिससे उन्हें भारत के खिलाफ टेस्ट में डेब्यू करने का मौका मिला।

ऑस्ट्रेलियाई कोंस्टास बोले, कोहली गलती से उनसे टकरा गए

भारत के स्टार बल्लेबाज विराट कोहली और टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण करने वाले सैम कोंस्टास के बीच चौथे टेस्ट के पहले दिन बृहस्पतिवार को मैदान पर झड़प हो गई लेकिन 19 वर्ष के आस्ट्रेलियाई बल्लेबाज ने इसे तूल नहीं देते हुए कहा कि कोहली गलती से उनसे टकरा गए। ऑस्ट्रेलियाई पारी के 10वें ओवर के बाद जब खिलाड़ी एक दूसरे के सामने से गुजर रहे थे तब कोहली और कोंस्टास के कंधे टकरा गए। दोनों खिलाड़ियों ने पलटकर एक दूसरे को घूरकर देखा और कुछ बोले भी। इस बीच ऑस्ट्रेलिया के सलामी बल्लेबाज उस्मान ख्वाजा ने आकर दोनों को अलग किया। मैदानी अंपायरों ने भी दोनों से बात की। पहले दिन का खेल समाप्त होने के बाद कोंस्टास ने कहा कि कोहली जान बूझकर उनसे नहीं टकराए थे। उन्होंने कहा, 'विराट कोहली गलती से मुझसे टकरा गए। यह क्रिकेट है और तनाव में ऐसा हो जाता है। कोंस्टास ने दूसरे सत्र के दौरान कहा, 'मुझे लगता है कि हम दोनों पर जज्बात हावी हो गए थे। मुझे समझ में ही नहीं आया। मैं अपने दस्ताने पहन रहा था कि अचानक उनका कंधा मुझसे टकराया। क्रिकेट में यह सब होता रहता है।

शिखर धवन बने सांता, मनाया एनजीओ के बच्चों संग क्रिसमस

मुंबई (एजेंसी)। टीम इंडिया के पूर्व सलामी बल्लेबाज शिखर धवन ने क्रिसमस पर कुछ बच्चों को सरप्राइज देकर उनका

दिन खास बना दिया। 39 वर्षीय व्यक्ति उत्सव में सीक्रेट सांता बने और विभिन्न गैर सरकारी संगठनों के बच्चों के साथ बातचीत की। धवन ने बच्चों के लिए तस्वीरें खींची और ऑटोग्राफ दिए, जिन्हें क्रिसमस उत्सव के दौरान भोजन और उपहार प्रदान किए गए। इस कार्यक्रम का वीडियो क्रिकेट स्टार के एनजीओ - शिखर धवन फाउंडेशन - ने इंस्टाग्राम पर साझा किया था।

एनजीओ ने पोस्ट को कैप्शन दिया- साझा आनंद दोगुना आनंद है और इस क्रिसमस - शिखर धवन फाउंडेशन में हमने ऐसा ही करने का फैसला किया। उत्सव का दिन जब हमारे संस्थापक ने विभिन्न एनजीओ के बच्चों के लिए गुप्त सांता की भूमिका निभाई और इसे एक यादगार क्रिसमस बना दिया! गौरतलब है कि शिखर धवन फाउंडेशन हर साल भारत में 11 नए एनजीओ को गोद लेता है। इसने पहले नेत्र जांच शिविर, रक्तदान शिविर और वंचितों के लिए राशन वितरण अभियान जैसी चीजें आयोजित की हैं।

कपिल देव के बयान पर बोले अश्विन

किसी को दोष नहीं... किसी से नाराज नहीं हूं

चेन्नई (एजेंसी)। गाबा में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीसरे टेस्ट के बाद अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट को अलविदा कहने के बाद रविचंद्रन अश्विन ने अपने चौंकाने वाले संन्यास पर सफाई दी। टेस्ट क्रिकेट इतिहास में भारत के दूसरे सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज ने संन्यास लेने का फैसला करने से पहले श्रृंखला में अभी तक सिर्फ एक मैच खेला है। अश्विन को पर्थ में पहले टेस्ट में बाहर रखा गया था, जहां वाशिंगटन सुंदर को एकमात्र स्पिनर के रूप में प्राथमिकता दी गई थी। अश्विन ने एडिलेड में गुलाबी गेंद का टेस्ट खेला था लेकिन रवींद्र जडेजा को हरी झंडी मिलने के बाद उन्हें ब्रिस्बेन में बाहर कर दिया गया था।

भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने अश्विन के संन्यास के बाद टिप्पणी की कि स्टार स्पिनर पर्थ में टीम में शामिल होने पर निर्णय पर विचार कर रहे थे और उन्हें उन्हें दूसरा मैच खेलने के लिए मनाना पड़ा। भारतीय क्रिकेट के दिग्गज कपिल देव अश्विन के

बाहर जाने से नाखुश थे और उन्होंने दावा किया कि स्टार स्पिनर बेहतर विदाई का हकदार था। हालांकि 106 टेस्ट मैचों के अनुभवी ने इसकी आवश्यकता से इनकार किया, दावा किया कि यह एक ऐसी प्रथा थी जिसमें वह विश्वास नहीं करते थे और इसे सुपर सेलिब्रिटी संस्कृति का हिस्सा कहा। अश्विन ने कहा कि जहां तक मेरा सवाल है, भव्य विदाई गलत है। मुझे नहीं लगता कि आपको किसी को भी भव्य विदाई समारोह देना चाहिए। खासकर, मेरा दृढ़ विश्वास है कि आपको मुझे भव्य विदाई नहीं देनी चाहिए। मैं नहीं चाहता कि किसी को शर्मिंदगी उठानी पड़े। मेरे लिए आंसू की एक बूंद। मुझे लगता है कि भव्य विदाई एक सुपर सेलिब्रिटी संस्कृति का हिस्सा है।

अश्विन ने आगे दावा किया कि उन्हें कोई पछतावा नहीं है और उन्होंने अपने फैसले के लिए किसी को दोषी ठहराने से इनकार कर दिया। 2011 विश्व कप विजेता ने खुलासा किया कि टीम इंडिया के लिए खेलना बंद करने का आह्वान करने के बाद वह रोए नहीं थे। उन्होंने कहा कि मुझे इसका कोई अफसोस नहीं है। शून्य पछतावा। अगर मैं 537 विकेट से खुश नहीं हूं तो फिर किस बात से खुश होऊंगा? ऐसी चीज है ही नहीं, जिसके लिए मैं दुखी होऊं? स्वीकृति में बड़ा आनंद है। आप उस चीज का पीछा करते हैं जो आपके पास नहीं है। लेकिन उस चीज के लिए पछतावा मत करो जो तुम्हारे पास नहीं है। इसके बारे में शिकायत मत करो। मैंने अपने जीवन के इस हिस्से को छोड़ दिया।

संक्षिप्त समाचार

हरियाणा के मुख्यमंत्री सैनी ने चार परियोजनाओं का उद्घाटन व दो का शिलान्यास किया

चंडीगढ़, एजेंसी। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने बुधवार को यहां कोसली विधानसभा क्षेत्र में 23 करोड़ रुपये से अधिक की लागत वाली छह विकास परियोजनाओं का उद्घाटन एवं शिलान्यास किया। एक आधिकारिक बयान में यहां बताया गया कि 20.53 करोड़ रुपये की लागत वाली चार परियोजनाओं का उद्घाटन किया गया और 2.51 करोड़ रुपये की लागत वाली दो परियोजनाओं की आधारशिला रखी गई। बयान के अनुसार उद्घाटन की गई परियोजनाओं में बोहका में 33 केवी सबस्टेशन, धवाना को मंडोला से जोड़ने वाली सड़क, बोहतवास अहीर में एक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और लिलोध में एक माध्यमिक विद्यालय भवन शामिल हैं। इसके अनुसार गुगोड़-तुम्बाहेड़ी सड़क और मुस्सेपुर से हालुहेड़ा संपर्क सड़क परियोजना का शिलान्यास किया गया। मुख्यमंत्री ने घोषणा की कि आवश्यक मानदंडों को पूरा करने के बाद डहीना खंड को उप-मंडल का दर्जा मिलेगा। सैनी ने इस मौके पर एक जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार ने किसानों के हित में कई निर्णय लिए हैं, जिनमें राज्य के किसानों की फसलों की एमएसपी पर शत-प्रतिशत खरीद सुनिश्चित करना भी शामिल है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार पूरे हरियाणा में समान विकास सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

पूर्व प्रधानमंत्री वाजपेयी भारत को तीव्र विकास के पथ पर ले गए : माझी

भुवनेश्वर , एजेंसी। ओडिशा के मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने बुधवार को कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी अपने कुशल नेतृत्व और निर्णायक फैसलों से देश को तीव्र विकास के मार्ग पर ले गए। अटल जयंती के उपलक्ष्य में मनाए जाने वाले सुशासन दिवस के अवसर पर माझी ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री ने देश और ओडिशा में विकास का एक नया अध्याय जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने कहा, ÷स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना के तहत राष्ट्रीय राजमार्ग निर्माण और प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत गांवों तक सड़क संजाल का विस्तार जैसी बड़ी परियोजनाएं उनके विकासात्मक कार्यों को दर्शाती हैं, जबकि पोखरण-द्वितीय और करगिल युद्ध जैसे निर्णायक कदम उनके साहस को बयां करते हैं।÷ माझी ने कहा कि वाजपेयी ने भुवनेश्वर में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) की आधारशिला रखी, पारादीप में एक तेल शोधक कारखाने की स्थापना की और ईस्ट कोस्ट रेलवे (ईसीओआर) डिवीजन का निर्माण किया, जिसका मुख्यालय भुवनेश्वर में है। उन्होंने कहा कि वाजपेयी ने ओडिशा की जनजातीय संथाली को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करके आधिकारिक मान्यता भी दी। मुख्यमंत्री ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री 1999 में उस समय भी ओडिशा के लोगों के साथ खड़े थे, जब राज्य में एक भीषण चक्रवाती तूफान की वजह से भारी तबाही मची थी।

आंध्र के मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री से मुलाकात की

अमरावती, एजेंसी। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू ने बुधवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात की और राज्य की प्रमुख परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता मांगी तथा प्रस्तावित आर्सेलर मित्तल इस्पात संयंत्र पर भी चर्चा की। तेलुगु देशम पार्टी (तेदेपा) प्रमुख नायडू ने 45 मिनट की मुलाकात के दौरान पोलावरम सिंचाई परियोजना और राजधानी शहर अमरावती के विकास के लिए वित्तीय सहायता देने के वास्ते मोदी को धन्यवाद दिया। एक आधिकारिक बयान के मुताबिक, उन्होंने बताया कि दोनों परियोजनाओं पर काम फिर शुरू हो गया है। नायडू ने राज्य के सामने मौजूद वित्तीय चुनौतियों पर प्रकाश डाला, जिसमें पिछली सरकार द्वारा 94 केन्द्र प्रायोजित योजनाओं के धन का अन्यत्र इस्तेमाल शामिल है। उन्होंने राज्य के लिए विशेष सहायता का अनुरोध किया।

तेलंगाना: प्रिंसिपल के खिलाफ शिकायत दर्ज कराने 18 किलोमीटर पैदल चले बच्चे

गडवाल , एजेंसी। एक सरकारी स्कूल के छात्रों ने प्रिंसिपल के खिलाफ शिकायत दर्ज कराने के लिए 18 किलोमीटर पैदल चलकर जिला कलेक्ट्रेट पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई. वहीं कलेक्टर ने छात्रों की शिकायतों के बारे में जानकारी लेते हुए छात्रों को मामले की जांच का आश्वासन दिया है.

जोगुलम्बा गडवाल जिले के एक सरकारी स्कूल के छात्रों ने स्कूल के प्रिंसिपल के खिलाफ शिकायत दर्ज कराने के लिए अनूठा मार्ग अपनाया. बताया जा रहा है कि एर्रावल्ली मंडल के बीचुपल्ली स्थित सरकारी बालकों के गुरुकुल स्कूल के करीब 200 छात्र मंगलवार को स्कूल की बाड़ फांदकर जिला कलेक्ट्रेट तक पदयात्रा पर निकल पड़े और अपने प्रधानाचार्य श्रीनिवास के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई. छात्रों ने प्रिंसिपल पर उत्पीड़न, शारीरिक दंड और उनकी बुनियादी जरूरतों की उपेक्षा का आरोप लगाया. छात्रों ने कहना था सिपल ने अनुशासन के नाम पर उनके साथ शारीरिक दुर्व्यवहार किया और नियमित रूप से मारपीट की. उन्होंने आगे शिकायत की

कि स्कूल में अपर्याप्त शौचालयों के कारण उन्हें खुले क्षेत्रों का उपयोग करने के लिए मजबूर होना पड़ता है. छात्रों ने उचित अध्ययन सामग्री की कमी और घटिया शिक्षा के बारे में भी शिकायत की. उन्होंने आगे आरोप लगाया कि भोजन निर्धारित मेन्यू के अनुसार नहीं परोसा जा रहा था. छात्रों ने स्कूल प्रशासन पर सीटें बेचने का भी आरोप लगाया. गडवाला विधायक कृष्णमोहन रेड्डी ने वीरपुरम मंच पर छात्रों से मुलाकात की और उन्हें समर्थन का आश्वासन दिया. साथ ही इस मुद्दे को सुलझाने के लिए कलेक्टर से संपर्क किया. हालांकि इटिक्याला पुलिस और राजस्व कर्मचारियों द्वारा हस्तक्षेप किए जाने के प्रयासों के बाद भी छात्रों ने अपना मार्च जारी रखा. इस बीच, प्रिंसिपल श्रीनिवास ने आरोपों से इनकार करते हुए दावा किया कि उन्होंने छात्रों को बिना अनुमति के स्कूल परिसर छोड़ने और अनुचित व्यवहार करने के लिए अनुशासित किया था. श्रीनिवास ने कहा कि एक छात्र को अनुशासनात्मक कार्रवाई के तहत ट्रांसफर सर्टिफिकेट जारी किया गया था और उन्होंने उत्पीड़न के दावों का खंडन करते हुए कहा कि उनकी कार्रवाई अनुशासन बनाए रखने के हित में थी.

जब तक ईवीएम छेड़छाड़ का ठोस सबूत नहीं, तब तक आरोप लगाना सही नहीं: सुप्रिया सुले

मुंबई , एजेंसी। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव परिणाम के बाद महाविकास अघाड़ी के नेता ईवीएम पर लगातार सवाल उठा रहे है। इसी बीच एनसीपी (शरद पवार गुट) की नेता और सांसद सुप्रिया सुले ने ठोस सबूतों की बात की है। सुप्रिया सुले ने ईवीएम पर लगाए गए आरोपों को नकारते हुए कहा कि जब तक इसके खिलाफ छेड़छाड़ के ठोस सबूत नहीं मिलते, तब तक ईवीएम को दोष देना गलत है। ईवीएम के खिलाफ कोई भी आरोप तभी उचित हो सकते हैं जब उसके बारे में ठोस और विश्वसनीय प्रमाण उपलब्ध हों। मैं खुद ईवीएम से चार बार चुनाव जीत चुकी हूं। सुप्रिया सुले ने आगे कहा कि ओडिशा के बीजू जनता दल (बीजेडी) और आम आदमी पार्टी (आप) जैसे कुछ राजनीतिक दलों ने ईवीएम में छेड़छाड़ के आरोपों को साबित करने के लिए डेटा होने का दावा किया है। उन्होंने कहा कि बीजेडी के नेता अमर पटनायक ने मंगलवार को उन्हें एक पत्र लिखा था, जिसमें ईवीएम के इस्तेमाल के खिलाफ कुछ डेटा साझा किया गया था। हालांकि इस डेटा के बारे में पत्र में विस्तार से जानकारी नहीं दी गई थी। सुप्रिया सुले ने यह भी कहा कि आम आदमी पार्टी के प्रमुख अरविंद केजरीवाल ने लोकसभा और विधानसभा चुनावों के बीच बड़ी संख्या में मतदाताओं के नाम हटाने और जोड़ने पर आपत्ति जताई है। केजरीवाल का यह आरोप था कि वोटर लिस्ट में नामों को बिना उचित कारण के हटाया और जोड़ा जा रहा है, जिससे चुनाव की निष्पक्षता पर सवाल उठते हैं। मैं यहीं कह सकती हूं कि कुल मिलाकर माहौल परेशान करने वाला है। चाहे कोई तकनीकी समस्या हो या मतदाता सूची से जुड़ी कोई बात हो, इन बातों का जवाब बिना चर्चा के नहीं दिया जा सकता है। शिवसेना (यूबीटी) सांसद संजय राउत ने चुनाव आयोग पर टिप्पणी करते हुए कहा कि ईसीआई को खुद साबित करना चाहिए कि वो चोर नहीं हैं। जरूरत नहीं है कि आप चोर हैं। यह आपकी जिम्मेदारी है। महाराष्ट्र की जनता बीजेपी के खिलाफ है और उनकी चोरी हर गांव और शहर में उजागर हो चुकी है। जनता की अदालत में बीजेपी का पर्दाफाश हो चुका है।

जेल से रिहा हुए 38 किसान, 29 फिर हो गए गिरफ्तार

ग्रेटर नोएडा एजेंसी। गौतम बुद्ध नगर जिला जेल में बंद 38 किसानों को न्यायालय से जमानत मिलने के बाद बुधवार की सुबह रिहा किया गया। इनमें किसान नेता भी शामिल थे। हालांकि, पुलिस ने जेल के गेट पर हंगामा और नारेबाजी करने के आरोप में 29 किसानों को दोबारा गिरफ्तार कर वापस जेल भेज दिया। किसान नेताओं को जेल भेजने पर अन्य किसानों ने पुलिस के प्रति नाराजगी जाहिर की है।

पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक न्यायालय के आदेश पर बुधवार की सुबह 38 किसानों को जेल से रिहा किया गया। बताया जा रहा है कि किसानों की रिहाई की सूचना पर काफी संख्या में किसान इकट्ठा होकर लुक्सर जेल पहुंचे। जैसे ही किसान नेता और कुछ किसान जेल से बाहर निकले तो उन्होंने नारेबाजी और हंगामा शुरू कर दिया। इस दौरान यहां पहले से मौजूद पुलिस ने किसान नेता सुखबीर खलीफा, रुपेश वर्मा, सुनील फौजी समेत 29 किसानों को फिर से गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने इन सभी को फिर से 14 दिन की न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया है। पुलिस का दावा है की नारेबाजी और हंगामा करने के आरोप में किसान गिरफ्तार किए गए हैं। बाकी रिहा हुए किसान अपने घर चले गए। पुलिस अधिकारियों ने चेतावनी दी है कि हंगामा और प्रदर्शन करने वाले किसानों की गिरफ्तारी की जाएगी। एक किसान संगठन ने गुरुवार को कलेक्ट्रेट पर प्रदर्शन की चेतावनी दी। संगठन किसानों की रिहाई के लिए प्रदर्शन किया जाएगा।

सीटी रवि केसः खानपुर पुलिस थाने के सर्कल इंस्पेक्टर निलंबित

बेंगलुरु, एजेंसी। भारतीय जनता पार्टी के नेता सीटी रवि मामले में खानपुर पुलिस स्टेशन के सर्कल इंस्पेक्टर के निलंबित कर दिया गया है. सीटी रवि पर कर्नाटक की कैबिनेट मंत्री लक्ष्मी हेब्बलकर के बारे में कथित तौर पर आपत्तिजनक टिप्पणी करने का आरोप लगा है. मंत्री लक्ष्मी हेब्बलकर के खिलाफ अभद्र टिप्पणी के मामले में सीटी रवि को गिरफ्तार किया गया था. हालांकि, बाद में उन्हें हाई कोर्ट से जमानत मिल गई. सर्कल इंस्पेक्टर पर आरोप है कि, उन्होंने उच्च अधिकारियों के निर्देशों की अवहेलना करते हए सीटी रवि की गिरफ्तारी के समय कर्तव्य में लापरवाही बरती. जिसके बाद उत्तरी रेंज के आईजीपी विकास कुमार ने बुधवार को एक आदेश जारी कर सीपीआई मंजूनाथ नाइक को निलंबित कर दिया. आरोप है कि, सीपीआई मंजूनाथ ने विधानसभा में विपक्ष के नेता आर अशोक सहित भाजपा नेताओं को खानपुर पुलिस स्टेशन के अंदर जाने दिया, जहां सीटी रवि को पिछले गुरुवार को बेलगावी में गिरफ्तार करने के बाद लाया गया था. सीपीआई ने उच्च अधिकारियों के निर्देशों की अवहेलना की, जिसमें आरोपी के अलावा किसी और को पुलिस स्टेशन के अंदर जाने की अनुमति नहीं दी गई थी. सीटी रवि को कर्नाटक की कैबिनेट मंत्री लक्ष्मी हेब्बलकर के बारे में कथित तौर पर आपत्तिजनक टिप्पणी करने के लिए गिरफ्तार किया गया था।

शरद पवार ने 8 और 9 जनवरी को बुलाई बैठक, पार्टी की आगामी रणनीतियों पर होगी चर्चा

मुंबई , एजेंसी। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में करारी हार के बाद एनसीपी (शरद पवार गुट) ने 8 और 9 जनवरी को एक महत्वपूर्ण बैठक बुलाई है। यह बैठक विधानसभा चुनावों के बाद की स्थिति पर चर्चा करने के लिए आयोजित की जा रही है। बैठक में विभिन्न मुद्दों पर विचार विमर्श किया जाएगा, जिसमें चुनाव परिणामों के बाद की स्थिति, पार्टी की आगामी रणनीतियों पर चर्चा होने की उम्मीद है। शरद पवार और पार्टी के अन्य नेताओं इस बैठक में हिस्सा लेंगे।

8 जनवरी को सभी प्रकोष्ठों, विधायकों,सांसदों और विभागाध्यक्षों की बैठक होगी, वहीं 9 जनवरी को जिला अध्यक्षों और शहर अध्यक्षों को भी बैठक में आमंत्रित किया गया है। इस बैठक में पार्टी के स्थानीय स्तर पर संगठन को मजबूत करने, आगामी चुनावी तैयारियों और राज्य में पार्टी की स्थिति पर विचार किया जाएगा। विधानसभा चुनाव के बाद महाराष्ट्र निकाय चुनाव को लेकर सभी दल एक्शन में नजर

आ रहे है। ऐसे में एनसीपी (एसपी) की यह बैठक अहम मानी जा रही है। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के नतीजे आने के बाद महाविकास अघाड़ी के नेताओं ने ईवीएम छेड़छाड़ का आरोप लगाया है। जिसको लेकर इन दिनों प्रदेश की राजनीति गर्म है। इसी बीच शरद पवार की बेटी और एनसीपी (शरद पवार गुट) की सांसद सुप्रिया सुले ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा, ÷मुझे लगता है कि जब तक मेरे पास कुछ ठोस सबूत नहीं हैं, तब तक आरोप लगाना मेरे लिए सही नहीं है। मैंने एक ही ईवीएम से चार चुनाव जीती हूं। आपको बता दें कि महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में महायुति गठबंधन को प्रचंड बहुमत मिला है। महायुति में शामिल भाजपा ने 132, एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना ने 57 और अजित पवार के नेतृत्व वाली राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) ने 41 सीटों पर जीत हासिल की है। वहीं महाविकास अघाड़ी गठबंधन में कांग्रेस के खाते में 16 सीटें आई तो वहीं एनसीपी शरद पवार गुट ने 10 सीटों पर जीत हासिल की। इसके अलावा शिवसेना उद्धव गुट ने 20 सीटों पर जीत दर्ज की।

पूर्व राष्ट्रपति के करीबी अधिकारी को पकड़ने गए सुरक्षा बलों पर हमला; 14 सुरक्षाकर्मियों समेत 17 की मौत

दमिश्क, एजेंसी। सीरिया के टारटस प्रांत में बुधवार को सुरक्षा बलों ने पूर्व राष्ट्रपति बशर अल असद से जुड़े एक अधिकारी को गिरफ्तार करने की कोशिश की। इस दौरान अधिकारी के समर्थकों और लोगों ने सुरक्षा बलों पर हमला कर दिया। इस दौरान जनरल सिक्योरिटी फोर्स के 14 सदस्यों समेत 17 लोगों की मौत हो गई। सुरक्षा बल सैदनया जेल में लोगों पर अत्याचार करने वाले अधिकारी मोहम्मद कंजो हसन को गिरफ्तार करने गए थे। आठ दिसंबर को सीरिया के राष्ट्रपति बशर अल-असद के रूस भागने के बाद देश पर विद्रोही गुट हयात तहरीर अल-शाम (एचटीएस) का कब्जा हो गया है। वहीं एचटीएस ने धार्मिक और जातीय अल्पसंख्यकों की सुरक्षा का आश्वासन देकर यहां एक मार्च 2025 तक के लिए अंतरिम प्रधानमंत्री की नियुक्ति की है। इसके बाद से राष्ट्रपति बशर अल असद के करीबियों के खिलाफ कार्रवाई जारी है। सीरियन ऑब्जर्वेटरी फॉर ह्यूमन राइट्स ने कहा कि टारटस प्रांत में सुरक्षा बल बशर शासन के अधिकारी सैन्य न्याय विभाग के निदेशक और क्षेत्रीय न्यायालय प्रमुख के मोहम्मद कंजो हसन को गिरफ्तार करने गए थे। उसने सैदनया जेल में बंद हजारों कैदियों को मौत की सजा और मनमाने फैसले सुनाए थे। सुरक्षा बल जब कंजो हसन के गांव पहुंचे तो यहां कई लोगों ने अपने घरों की तलाशी लेने से इन्कार कर दिया। इसके साथ अधिकारी के भाई और अन्य हथियारबंद लोगों ने सुरक्षा बलों को रोकते हुए गांव के पास उनके वाहन को निशाना बनाया। इस दौरान दोनों ओर से हुई हिंसक झड़प में जनरल सिक्योरिटी फोर्स के 14 सदस्य और तीन हथियारबंद लोगों की मौत हो गई। जबकि 10 अन्य लोग घायल हो गए। सुरक्षा बलों ने गांव से दर्जनों लोगों को गिरफ्तार किया है। बताया जाता है कि सैदनया जेल परिसर में असद का विरोध करने वालों को सताया जाता था। साथ ही यहां कैदियों की हत्या कर दी जाती थी और उनको गायब कर दिया जाता था।

भारतीय पेशेवरों को ट्रूडो सरकार ने दिया एक और झटका, इमीग्रेशन एंट्री को लेकर नियमों में किया बदलाव

ओटावा, एजेंसी। कनाडा जाकर नौकरी करने की चाह रखने वाले भारतीय पेशेवरों को कनाडा की ट्रूडो सरकार ने बड़ा झटका दिया है। दरअसल कनाडा की सरकार ने अपने एक्सप्रेस इमीग्रेशन सिस्टम में बड़ा बदलाव किया है। इसमें उम्मीदवारों की योग्यता निर्धारित करने वाले कॉम्प्रिहेंसिव रैंकिंग सिस्टम के नियमों को बदला गया है। नए नियमों के तहत अब उम्मीदवारों को नौकरी का ऑफर मिलने के लिए कोई अतिरिक्त अंक नहीं दिए जाएंगे। नए नियम साल 2025 में लागू हो जाएंगे। कॉम्प्रिहेंसिव रैंकिंग सिस्टम में बदलाव का असर उन लोगों पर पड़ेगा, जो एक्सप्रेस एंट्री सिस्टम के तहत कनाडा में स्थायी तौर पर बसने का इरादा रखते हैं। ये नियम उन लोगों पर भी लागू होंगे, जो पहले से ही कनाडा में अस्थायी तौर पर काम कर रहे हैं। कनाडा की सरकार ने कहा है कि जब नए नियम लागू हो जाएंगे तो वे नौकरी की पेशकश पाने वाले उम्मीदवारों के साथ ही, जो नए उम्मीदवार पूल में आ रहे हैं, उन पर भी लागू होंगे। हालांकि नए नियम उन उम्मीदवारों को प्रभावित नहीं करेंगे जो पहले से ही स्थायी निवास (पीआर) के लिए आवेदन कर चुके हैं। यह उन उम्मीदवारों पर भी लागू नहीं होगा जिन्होंने पहले से ही इमिग्रेशन, रिफ्यूजी एंड सिटिजनशिप कनाडा (आईआरसीसी) को पीआर के लिए आवेदन जमा कर दिया है, जिस पर वर्तमान में कार्रवाई की जा रही है। इसका उद्देश्य फर्जी तरीके से कनाडा आने वाले लोगों को रोकना और धोखाधड़ी वाली आव्रजन प्रथाओं पर अंकुश लगाना है।

अमेरिका के कैलिफोर्निया में बर्ड फ्लू का प्रकोप, राज्य में दूध उत्पादन में भारी गिरावट

सैक्रामेंटो, एजेंसी। अमेरिका के कैलिफोर्निया में एवियन इन्फ्लूएंजा ए (एच5एन1) वायरस के मामले लगातार बढ़ते जा रहे हैं। कैलिफोर्निया के अधिकारियों के अनुसार, बर्ड फ्लू ने अगस्त से अब तक 984 डेयरियों में से 659 को प्रभावित किया है। इनमें से एक-चौथाई मामले पिछले महीने में ही सामने आए। समाचार एजेंसी सिन्हुआ के अनुसार, राज्य के डेयरी उद्योग में तेजी से फैल रहे इस वायरस के कारण गवर्नर गेविन न्यूसम ने राज्य में पिछले सप्ताह आपातकाल की घोषणा की थी।

कैलिफोर्निया के गवर्नर न्यूसम ने एक बयान में कहा, इससे यह सुनिश्चित किया जा सकेगा कि सरकारी एजेंसियों के पास इस विषम स्थिति से सामना करने का जरूरी संसाधन कितना है जिससे वो परिस्थिति के अनुसार तुरंत रिएक्ट कर सकें। अमेरिकी रोग नियंत्रण केंद्र (सीडीसी) की मंगलवार को जारी नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार, इस

महामारी का मानवीय प्रभाव लगातार गंभीर होता जा रहा है, तथा कैलिफोर्निया में ऐसे 36 मामलों की पुष्टि हो चुकी है। जो कि देश के कुल 65 मामलों के आधे से भी अधिक हैं, हालांकि वास्तविक संख्या इससे अधिक होने की संभावना है, क्योंकि हाल ही में स्थानीय स्तर पर पुष्टि के मामले संघीय आंकड़ों में अभी तक जुड़े नहीं हैं।

कैलिफोर्निया के लॉस एंजिल्स काउंटी और स्टैनिस्लॉस काउंटी में सोमवार को दो नए मामलों की पुष्टि हुई थी। दोनों काउंटी के स्वास्थ्य विभागों के अनुसार, दोनों व्यक्ति अपने कार्यस्थल पर बर्ड फ्लू से संक्रमित पशुओं के संपर्क में आए थे। दोनों व्यक्तियों में इस वायरस के हल्के लक्षण थे और उनका एंटीवायरल दवाओं से इलाज किया गया था। बता दें कि इस वायरस पर नियंत्रण पाने के लिए स्वास्थ्य अधिकारी पूरे कैलिफोर्निया राज्य में अपशिष्ट जल की निगरानी कर रहे हैं। सैन फ्रांसिस्को, नापा और सैन जोस सहित कई इलाकों में वायरस का पता लगाया जा रहा है। हालांकि, कैलिफोर्निया राज्य महामारी विज्ञानी एरिका पैन ने एबीसी30 को बताया कि इन मामलों का मुख्य कारण प्रारंभिक रूप से घरेलू या अन्य वाणिज्यिक दूध को सिंक में डंप करने के कारण हो सकता है।

हालांकि स्वास्थ्य अधिकारियों ने कहा कि आम जनता के लिए जोखिम कम है, लेकिन यह वायरस संक्रमित मुर्गियों में 90 से 100 प्रतिशत और गायों में 1 से 2 प्रतिशत तक जान ले सकता है। कैलिफोर्निया राज्य के पशु चिकित्सक एनेट एम. जोन्स ने बताया कि संक्रमित गायें कभी पूरी तरह से ठीक नहीं हो सकतीं। कैलिफोर्निया, जो देश का सबसे बड़ा डेयरी उत्पादक राज्य है, बर्ड फ्लू के प्रकोप के कारण भारी आर्थिक नुकसान का सामना कर रहा है। अधिकारियों ने बताया कि राज्य में अब 1.7 मिलियन गायों का हर हफ्ते परीक्षण किया जा रहा है। अमेरिकी कृषि विभाग (यूएसडीए) की रिपोर्ट के अनुसार, नवंबर में कैलिफोर्निया का दूध उत्पादन पिछले साल के मुकाबले 9.2 प्रतिशत कम हो गया, जो अब तक की सबसे बड़ी गिरावट है। इससे राष्ट्रीय दूध उत्पादन में 1 प्रतिशत की कमी आई है और इससे अमेरिकी डेयरी उत्पादों की उपलब्धता और कीमतों पर असर पड़ा है। राज्य के पोल्ट्री उद्योग को भी नुकसान हुआ है। कैलिफोर्निया के खाद्य एवं कृषि विभाग ने बताया कि राज्य भर में 51 व्यावसायिक पोल्ट्री फार्म और 9 घरेलू पोल्ट्री फार्म प्रभावित हुए हैं। वायरस कुछ अप्रत्याशित जगहों पर भी पाया गया है, जैसे लॉस एंजिल्स काउंटी में कच्चे दूध का सेवन करने वाली बिल्लियों में इसके दो मामले मिले हैं। लॉस एंजिल्स काउंटी के अधिकारियों ने पालतू जानवरों को कच्चा भोजन देने से बचने की चेतावनी दी है, क्योंकि एक ब्रांड में बर्ड फ्लू वायरस पाया गया था। जिसे खाने से एक पालतू बिल्ली मर गई थी। राज्य ने 4 मिलियन से अधिक सुरक्षा उपकरण वितरित किए हैं, लेकिन श्रमिकों के लिए सुरक्षा एक बड़ा मुद्दा बन गया है। यूनाइटेड फार्म वर्कर्स की प्रवक्ता एलिजाबेथ स्ट्रेटर ने कहा कि कई कर्मचारी वेतन संबंधी चिंताओं के कारण परीक्षण या लक्षणों की रिपोर्ट नहीं करते हैं। यूएसडीए ने 6 दिसंबर को एक नया राष्ट्रीय दूध परीक्षण कार्यक्रम शुरू किया है, लेकिन कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि ये उपाय पर्याप्त नहीं हैं। एमोरी यूनिवर्सिटी की प्रोफेसर सीमा लकड़वाला ने कहा कि नए परीक्षण उपाय वायरस के फैलाव को समझने में मदद करेंगे, लेकिन यह उपाय बहुत देर से आ रहे हैं। राज्य 40 शोध परियोजनाओं के माध्यम से संक्रमण के पैटर्न की जांच कर रहा है।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद

(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129